भाग 1. सिंगार
प्रथम अनुभाग तैयारी–ए–ज़ेवर
1. पेषा–ए–नियारी (नियारा गिरी)

आत्षी शीषा (पु0) देखें बूता।

अड्डी (स्त्री) सोना पकाने की भट्टीनुमा बनी हुई जगह मजाज़न वह ज़र्फ़ जिसमें खोटा सोना साफ करने को तेजाब में गलाया जाता है।

अलौनी (स्त्री) रेत से चाँदी के ज़र्रात अलाहिदा करने का अमल। **करना** के साथ बोला जाता है।

बारा बानी सोना (पु0) आला क़िस्म का साफ किया हुआ सोना जिस में किसी क़िस्म का खोट न हो (अंग्रेजी में 24 कैरेट कहलाता है) कई मर्तबा का साफ किया हुआ अव्वल क़िस्म का सोना जिसकी चाष्नी यकसाँ हो।

बाँकिया (पु0) सोना वगैरा साफ करने की भट्टी के फूँकने की खमीदा मुँह की फुक्नी या धौक्नी।

बाँगी (स्त्री) देखें चाष्नी।

बिस्त बिस्वा (स्त्री) आला क़िस्म की साफ की हुई चाँदी जिस में खोट का कोई असर बाकी न रहा हो।

बुकरावती/बुकरावटी (स्त्री) दो मेली धात ऐसा सोना या चाँदी जिसमें दो या तीन किस्म की खोट (ग़ैर धातें) मिली हुई हों या ज़ुरूरत से मिलाई जाये। जैसे सोने के साथ चाँदी या ताँबा और चाँदी के साथ ताँबा या सीसा। **~करना** खोटे सोने को साफ करने के लिए चाँदी और खोटी चाँदी को साफ करने के लिए सीसा एक मुक़र्रिरा मिक़दार से मिलाकर मुरक्कब बनाना।

बूता (स्त्री) तेज़ाब में सोना पकाने को बड़े पेट का बोतल की शक्ल पर एक खास वज़अ़ का काँच का ज़र्फ़।

चित्र–

भाँती (स्त्री) एक खास क़िस्म की धौक्नी जो भट्टी को हस्बेज़ुरूरत कमोबेष हवा पहुँचाये।

पाथीं (स्त्री) एक खास किस्म के मसाले की बनी हुई कुठाली जो सोने चाँदी के साथ पिघल जाये और जलकर राख हो जाये।

पाट्ला (पु0) देखें पासा।

पासा (पु0) दस इंच लम्बी और साठ से सौ तोला तक वज़नी चाँदी की चौपहल सलाख, लेकिन सर्राफे की कारोबारी ज़बान में इस लफ़्ज़ का मफहूम, विलायती कारख़ानों के साफ़षुदा सोने की तक़रीबन बीस तोला वज़ी मुस्ततील शकल की बटिया के लिए खास हो गया है जिसको आम बोलचाल में पाट्ला भी कहतें हैं। मगर उस से मुराद मुस्तअमिला साफ किया हुआ सोना होता है और पासे के मुक़ाबिले में जो कान से ताज़ा बताज़ा आता है दूसरे दर्जे का समझा जाता है।

पत्रे की चाँदी (स्त्री) देखें थकिया।

परख (स्त्री) खोटे खरे की जाँच। **प्रयोग** नियारिये को सोने चाँदी की परख खूब होती है।

परखना (क्रिया) देखें परख।

पर्खय्या (पु0) सोने चाँदी का खरा खोटा पहचानने वाला माहिर शख़्स।

पिस्वा (स्त्री) देखें बूटा।

पिस्वा करना/पसाना (क्रिया) खोट निकालने के लिए सोने को तेज़ाब में गलाना।

पिंजरा (स्त्री) साफषुदा चाँदी की ईंट। पंजाब में कैल, दिल्ली में पिंजर, गद्दी और कारोबारी ज़बान में डले की चाँदी से मारूफ़ है।

पुंहर (पु0) चाँदी का मेल, जिसमें चाँदी के कुछ अज्ज़ा मिले हुये हों।

तल्हा माल/टल्हा माल (पु0) खोट मिला हुआ सोना या चाँदी।

तेज़ाबी सोना (पु0) मुस्तअ़मिला सोना जिसको तेज़ाब में पकाकर निखारा यानी साफ किया गया हो। मुस्तअमिला यानी ज़ेवर वगैरा का सोना जो टाँका मिलने से खोटा हो जाता है उसको साफ़ करने के लिए चाँदी की एक मुक़र्रिरा मिक़दार के साथ गलाकर कीमियावी तरीक़े से तेज़ाब में हल होकर चाँदी के महलूल में मिल जाती है और सोने के ज़र्रात अलाहिदा हो जातें हैं जिनको गलाकर असली हालत में ले आतें हैं।

थाजी (स्त्री) देखें कुठाली।

थकिया (स्त्री) मुख़तलिफ क़िस्म का ज़री गोटा और इसी क़िस्म का दूसरा सामान, ज़ेवर और ज़रूफ़ गलाकर और खोट से साफ करके तैयार की हुई चाँदी, इब्तिदाई सूरत में रवा और ज़्यादा साफ़ करके चौपहल शकल में बना लेते हैं तो डला या डले की चाँदी कहलाती है फिर आला दर्जे पर साफ़ करके पत्रा बना लेते हैं और पत्रे की चाँदी यानी दर्ज़ा–ए–अव्वल की चाँदी कहतें हैं।

थला/थड़ा (पु0) ठिये का दूसरा तलफ़्फ़ुज पेषावरों की मुष्तरक इस्तिलाह जो आमतौर से काम करने की जगह के लिए बोली जाती है नियारियों में चाँदी या सोना गलाने की जगह को कहतें हैं। यही इस्तिलाह बाज़ कारीगरों में अड्डा कहलाती है।

थोबी (स्त्री) देखें पिंजर।

टंच (स्त्री) अव्वल दर्जे की बिल्कुल खरी चाँदी। सर्राफी दल्लालों की बोली में सोने के लिए कुंदन और चाँदी के लिए टंच के अल्फ़ाज़ मखसूस है।

ठिया (पु0) देखें थला।

झारी (स्त्री) साफषुदा चाँदी की बनाई हुई पतली पट्टी या पत्रा। इस्तिलाह मे कई मर्तबा की साफ की हुई उमदा चाँदी को भी कहतें हैं।

चाष्नी (स्त्री) साफ किये हुये सोने या चाँदी का नमूना, जो खोटा खरा परखने में बतौर मेअ़यार काम दे जिसको अहले मामला मुक़ाबिले के लिए बतौर बानगी लेकर अपने पास रखतें हैं।

चाँदी सूत्ना (स्त्री) खोटी चाँदी को साफ करना, चाँदी की खोट को सीसे की लाग से साफ किया जाता है इस तरह की सीसे की एक मुक़र्रिरा मिक़दार को खोटी चाँदी के साथ गलातें हैं और फिर लोहे की सलाख़ से घोटतें हैं इस अमल से सीसा चाँदी की घोट के साथ लोहे की सलाख से लिपट जाता है और चाँदी से अलाहिदा हो जाता है इस तरकीब को चाँदी सूतना कहतें हैं।

चूनस (स्त्री) देखें खाल।

छंका (पु0) चाँदी या सोने के ज़र्रात का फटापन जो गलाने में कमी या किसी क़िस्म की खोट बाकी रहने से पैदा हो जाये। गलाने के मसाले का असर बाक़ी रहने से भी यह सूरत पैदा हो जाती है ऐसे सोने या चाँदी का तार साबित खिंचता। **~पड़ना** गलाने के नुक़्स या खोट का असर बाक़ी रहने से चाँदी या सोने की डली या सलाख़ की सतह में खुर्दुरापन पैदा हो जाना।

छंकार (स्त्री) पिघले हुये सोने वगैरा के अज्ज़ा को पानी में फाड़ने का अ़मल इस तरह कि खोटे सोने में चाँदी मिलाकर गलाते हैं और उस गले हुये मुरक्कब को धार बांध कर ठंडे पानी में डालते हैं। जिसमें रेज़ा हो जाता है इन रेजों को इस्तिलाह मे रवाड़ी, रेवड़ी और रवाल

कहते हैं फिर यह रेज़े तेज़ाब में गलाये जाते हैं।

छीज (स्त्री) खोटी धात के गलाने में वज़न की कमी जो बाज़ सूरतों में जलने से हो जाती है इस्तिलाहन छीज कहलाती है।

छीड़ा (पु0) वह धात या मसाला जिसके असर से दूसरी धात तेज़ाबी महलूल से जुदा हो जाये। **जैसे** ताँबा जो तेज़ाब में हलषुदा चाँदी को खुद तेज़ाब में हल होकर खारिज कर देता है यही अमल लोहे से ताँबे पर होता है वगैरा.......**2** वह धात जो दूसरी धात को साफ कर दे या आसानी से पिघला दे।

दवाँग (पु0) देखें राड़ा (रेड़ा)

दो मेली धात (स्त्री) देखें बुकरावटी।

दह बानी सोना (पु0) बारा बानी सोने से दूसरे दर्जे का सोना यानी किसी कदर कम पकाया हुआ **देखें** बाराबानी सोना।

ढले की चाँदी देखें थकिया।

राड़ा/रैडा (पु0) सोना चढ़ी हुई चाँदी। तफ़सील के लिए **देखें** पेषा कंदलाकषी जिल्द दो पृ0

रावटी (स्त्री) देखें छीड़ा।

रसी (स्त्री) शोरे का तेज़ाब (तुर्षा) जिसमे एक ख़ास तरीक़े से खोटा सोना गलाकर साफ किया जाता है।

रवा (पु0) देखें तेज़ाबी सोना वह सोना जिसमें निखार के मसाले का कुछ असर बाकी हो और अच्छी तरह गलाया न गया हो।

रवाड़ी/रेवड़ी (स्त्री) रवाल। पिघले हुये सोने या किसी धात के पानी में फाडे हुये रेज़े। **देखें** छंकार।

रवाल (पु0) देखें रवाडी (रेवड़ी)।

रूप (पु0) दीदारुपन, सजीलापन, चमकीलापन। अक़सर पेषावरों की मुष्तरक इस्तिलाह जो आमतौर से मज़कूर उस–सदर मफ़हूम के लिए बोली जाती है। नियारिये असली और आला क़िस्म के सोने के रंग को रूप कहतें हैं।

रूपा (स्त्री) रांग और पीतल को मिलाकर बनाई हुई नकली चाँदी। **2** पूरब में चाँदी को भी रूपा कहते है।

रूप्चा (पु0) चाँदी के मेल का सोना। चाँदी की चाष्नी की वजह से उसका रंग पीत्ली हो जाता है।

रूखारी पासा (पु0) मामूल से ज़्यादा तपाया हुआ सोना जिस की रंगत से रूखापन आ जाये।

रेज़ा (पु0) पेषावरों में यह इस्तिलाह मुख़तलिफ़ मफ़हूम के लिए बोली जाती है नियारियों में इसका मफ़हूम मामूली और इब्तिदाई काम करने का औज़ार होता है और बाज़ वक्त किसी बड़ी चीज़ के जुज़ और ज़ेर ए तैयारी शय् के लिए बोली जाती है।

रेह (स्त्री) दो मेली धातु, खोट मिला हुआ सोना या चाँदी। चूँकि चाँदी सोने को जज़्ब कर लेती है जिसको इस्तिलाह में सोना चाट्ना या पीना कहते हैं। इसलिये नियारिये चाँदी को रेह भी कहते हैं।

सिजिल (स्त्री) पेषावरों की मुष्तरक इस्तिलाह अच्छा और खरा माल जिसमें किसी क़िस्म की खोट और खराबी न हो।

सुलाख्ना (क्रिया) आग में तपाकर सोने चाँदी का खरा खोटा परखना इसतरह कि उस चीज पर एक गहरी लकीर बना दी जाती है फिर आग में गरम करके उसका रंग देखा जाता है और रंग के तग़य्युर से खरा खोटा मालूम करते हैं।

सिलोनी (स्त्री) चाँदी निखारने का कच्ची ईंट और शोरे को मिलाकर बनाया हुआ मसाला।

सोबी (स्त्री) ताँबे के मेल की चाँदी जो बतौर चाष्नी चाँदी में मिलाया जाये ताकि

उसकी बनी हुई चीज़ में सख़्ती और झंकार पैदा हो।

सूधाई (स्त्री) चाँदी साफ़ करने का अमल। **देखें** सूधना।

सूध्ना/सूतना (क्रिया) चाँदी की खोट निकालना। **देखें** चाँदी सूत्ना।

सोना पकाना (क्रिया) सोने को साफ़ करने के लिए शोरे के तेज़ाब में गलाना।

ग़ष (पु0) देखें सिलोनी।

कामी (पु0) ऐसी लाग जो धात को आसानी से गला दे। **2** आसानी से गलने या पिघलने वाली धात। **देखें** चीरा।

कटौती (स्त्री) देखें कर्दा।

कुठाली (स्त्री) सोना चाँदी गलाने का खरिया मिट्टी का प्यालेनुमा ज़र्फ़।

कर्दा (पु0) कटौती मेल का वज़न जो किसी धात के साफ़ करने में असली वज़न से खारिज कर दिया जाये। **काटना** के साथ बोला जाता है।

कर्खिनी (स्त्री) चाँदी या सोने की सलाख बनाने का कर्छे की क़िस्म का ज़र्फ़। पेषा–ए–कंदलाकषी में रैनी कहलाता है।

कस (पु0) सोने या चाँदी का भाव ताव या रंग रूप जो कसौटी पर घिसने से ज़ाहिर हो। **देखना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** खरे सोने का कस सुर्खी माइल होता है। सोने का कस देखने को कसौटी से बढ़कर कोई चीज नहीं।

कसौटी (स्त्री) एक किस्म का सियाह पत्थर जो सोने का रंग रूप और खरा खोटा देखने के लिए इस्तेमाल होता है।

कुकरा (पु0) नियारी की भट्टी की राख जिसमें सोने चाँदी के ज़र्रे मिले हुये हों।

कलखर (स्त्री) खोटी चाँदी।

कंचन (पु0) बाज़ मुक़ामी बोलियों में सोने को कंचन कहते हैं।

कुंदन (पु0) आला क़िस्म का साफ किये हुये सोने का पतरा।

कीट (स्त्री) चाँदी का मैल जो पिघलाने में जलकर अलाहिदा हो जाये।

कैल (स्त्री) देखें थोबी।

खरा (पु0) बगैर खोट का या साफषुदा सोना या चाँदी।

खर्ल (स्त्री) सोना पकाया हुआ तेज़ाब जिसमें चाँदी के अज्ज़ा शरीक हों।

खोट (स्त्री) आला क़िस्म की धात में किसी अद्ना धात का जुज़वी मेल।

खोटा (पु0) निर्सा। बगैर साफषुदा या आमेज़िष का सोना या चाँदी।

गद्दी (स्त्री) देखें थूबी।

गोंटी (स्त्री) देखें छीड़ा।

घान (पु0) पेषावरों की मुष्तारक इस्तिलाह जिससे मुराद सनअती काम के माल की एक मुकर्रिरा मिक़दार जो बवक़्त वाहिद काम मे लाई जाये, नियारियो की इस्तिलाह में सुनहरी, रूपहली काम में लाई जाये, नियारियों की इस्तिलाह में सुनहरी, रूपहली, पुराना गोटा, ज़री और ज़रूफ़ जो बवक़्त वाहिद गलाने के लिए जमा किये जायें घान कहलाता है।

घारिया (स्त्री) गढ़य्या का गलत तलफ़्फ़ुज़। ज़री अष्या गलाने की कोठीदार बड़ी कुठाली जिसमें टोंटी या ऐसा मुँह बना हुआ हो जिससे पिघली हुई धात आसानी से उड़ेली जा सके।

मलाईदार पासा (पु0) रूपदार पासा जिसका रंग व रवा साफ और चमकीला हो।

निर्सा (पु0) मिलौनी का खोटा सोना या चाँदी।

निखार (पु0) सोना चाँदी वगैरा साफ करने का मसाला।

निखार्ना (क्रिया) सोने चाँदी की खोट निकालना। मेल साफ करना, उजालना।

नियारा (पु0) ऐसी रेत मिट्टी या धात जिसमें सोने या चाँदी के ज़र्रे मिले हुये हों। कान की रेत से मिले हुये जुदा जुदा और बिखरे हुये सोने या चाँदी के ज़र्रे।

नियारा गर (पु0) देखें नियारिया।

नियारा सुधिया (पु0) देखें नियारिया।

नियार सुधार (पु0) नियारा सुधिया। **देखें** नियार्ना।

नियार्ना (क्रिया) सोने या चाँदी के जर्रों को रेत या मिट्टी से जुदा करना।

नियारिया (पु0) कान से निकाले हुये या खोटे सोने चाँदी को मेल और खोट वगैरा से साफ करने और एक धात को दूसरे धात से जुदा करने वाला पेषावर कारीगर।

हल्काना/हलकार्ना (क्रिया) सोने चाँदी या किसी दूसरी धात को तपाकर हवा में आहिस्ता आहिस्ता ठंडा करना ताकि आग में गरम करने से धात में जो नर्मी पैदा होती है वह क़ायम रहे। पानी में ठंडा करने या काटने से फौरन सख़्ती आ जाती है बल्कि ज़्यादा हो जाती है।

हल्कोना (पु0) देखें हल्काना/हल्कानी।

हल्कोर्ना (पु0) देखें हल्काना/हल्कानी।

पेषा–ए–सुनारी (जर्गरी)

उजाल्ना (क्रिया) ज़ेवर वगैरा को किसी किस्म के मसाले से धोकर साफ करना और चमकाना। **प्रयोग** त्यौहारों पर औरतें अपने ज़ेवर उज्लवा लेतीं हैं। जड़ाऊ ज़ेवर का उजालना मुष्किल होता है।

अद्धी/अद्धी बद्धी (स्त्री) किसी वज़अ़ और क़िस्म का छोटा हार जो नाफ़ से ऊपर सिर्फ छाती तक लम्बा हो।

उर्बसी (स्त्री) देखें जुगनी।

पद ***हीरे में उसके है यद्दे बैज़ा की रोषनी।***
हो क्योंकि उर्बसी के तेरे हमसर आफ़ताब।

आर्दी हार (पु0) मोतियों का बारा लड़ा बना हुआ एक किस्म का हार।

आर्सी (स्त्री) आइनेदार अंगूठी। नगीने के बजाये क़रीब एक इंच कुत्र का आइना जड़ कर की हुई अंगूठी जिस को चेहरे के सिंगार को देखने के लिए हाथ के अंगूठे में पहनने का रवाज था अब मतरूक हो गया है कस्बात में कहीं कहीं बरायनाम बाकी है।

पहेली *फ़ार्सी बोली आईना*
तुर्की ढूंडी पाईना
हिन्दी बोलूँ आर्सी आये।

खुसरू (रह0) कहे कोई न बताये

कहावत *हाथ कंगन का आरसी क्या।*

मसल मूरख को पोथी दई बाचन को गुन गाथ
जैसे निरमल आरसी दई अंध के हाथ।

इकाव्ली (स्त्री) मोतियों की इकहरी लड़ी की माला। **देखें** माला।

इक्का/इक्के (पु0) बाजू पर बाँधने का किसी क़िस्म और कीमत का एक बड़ा नग जड़ा हुआ ज़ेवर। **देखें** बाजूबंद।

पद ***नहीं याकूत का इक्का यह तेरे गोरे बाजू पर।***
शगुफ़्ता लाला–ए–हमरा हुआ है शाख़े शब्बू पर।।

इक नगियाँ (स्त्री) कलाई (पहुँचे) में पहनने का मुख़तलिफ क़िस्म कीमत और मुतवस्त दर्जे के इकहरे नौ या ग्यारह जड़े हुये नगों का ज़ेवर। देखें नौगिरिया।

अंटी/अंटियाँ (स्त्री) कान की लौ में पहनने का सोने का सादा या जड़ाऊ बालीनुमा बना हुआ सोने का हल्का। अक्सर हिन्दू महाजन और मारवाड़ी खुषहाली की अलामत के तौर पर पहनतें हैं इसलिए यह कहावत मषहूर है कि *मामू के कानों में अंटिया भांजे ऐंठे ऐंठे फिरें।*

पद ***पहनी है उस हसीन ने मोती की अंटियाँ।***

फबती कहें गे काने जवाहर की कान पर।।

अंग गद/अंग गड़ (पु0) बल ढंड शेर या मगर के मुँह की शकल का बना हुआ बाज़ू पर पहनने का सोने वगैरा का कड़ा जो अक्सर बाज़ू पर फंसा रहता है। **देखें** बाज़ूबंद।

अंगुष्तरी (स्त्री) देखें अंगूठी।

अंगूठी (स्त्री) फारसी लफ़ज़ अंगुषतरी का उर्दू तलफ्फुज़ मुंदरी। हाथ की उंगलियों में पहनने का सोने, चाँदी या और किसी क़िस्म की धात का मुदव्वर शकल और मुख़तलिफ वज़अ का सादा और जड़ाऊ बना हुआ ज़ेवर।

अंगीठा (पु0) देखें बुर्सी।

अनवट (पु0) छल्ले की क़िस्म से पैर के अंगूठे में पहनने का गवाँरू ज़ेवर जो अमूमन मामूली चाँदी या पीतल और काँसी का बनाया जाता है इसमें ऊपर की तरफ अँगूठे की लम्बान चौड़ान के बराबर बैज़वी शकल का मुनकक़्ष खपरा सा जड़ा होता है जो अंगूठे को ऊपर से ढँक लेता है।

पद पुष्ते पा में वह नज़ाकत की खलिष के डर से।

बुर्गे गुल को न करे पाँव का अनवट कोई।। (मुस़हफी)

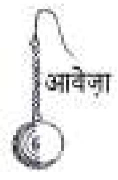

आवेज़ा (पु0) बगैर सहेली का बुंदा। हिन्दी में सरासरी कहलाता है। **देखें** बुंदा।

पद ***जब से अवेज़ा पहनने तो लगा है ऐ शोख़।***

मुषतरी को यह हवस है कि दुर्रे गोष हूँ मैं।। (मुस़हफ़ी)

अहरन (पु0) अंग्रेजी लफ़ज़ इयर रिंग का बाजारी तलफ़फुज़। **देखें** बुंदा।

बाज़ूबंद (पु0) बाज़ू पर पहनने के

मुख्तलिफ वज़अ क़तअ के सादा और जड़ाऊ बने हुये ज़ेवर। हिन्दी में भुजा बमानी बाज़ू से भुजबंद और भोजबंद कहलाता है।

पद बलायें मेहर ने ले लीं बढ़ा के दस्ते शुआअ।

जज़र जो आये तिलाई तुम्हारे बाज़ूबंद।।

बाज़ू के ज़ेवरों मे ख़ासतौर से इक्के, अंग गद, बल ढंड, जौषन, नौ रतन, नौनगे मषहूर है।

बाला/बाले (पु0) कान की लौ में पहनने का सोने या चाँदी के तार का हलकानुमा बना हुआ ज़ेवर जिसमें खुषनुमाई के लिए दो मोती जिनके बीच में सुर्ख या सब्ज़ रंग का नग भी पिरो लेते हैं।

पद *गोरो मैनीष में सोने का जो बाला देखा।*

जलवा–ए–हुस्ने परी हमने दो बाला देखा।।

बालपसिया (पु0) बालों का जूड़ा बाँधने की मोतियों की लड़।

बाली/बालियाँ (स्त्री) बाले का इस्मे मुसग्गर। बालियाँ आमतौर से फूलदार सादा और जड़ाऊ मुख़तलिफ़ वज़अ की बनाई जाती है। इस ज़ेवर का सिर्फ हिन्दुस्तान में रवाज़ है। दूसरे मुमालिक की औरतें सिर्फ कान की लौ में बुंदा या इस किस्म का कोई ज़ेवर पहनतीं हैं। हिन्दुस्तान में भी अब बालियों का रवाज उठ रहा है।

तन्हा न दुर को देख के गिरते हैं अषके चष्म।

सूराख़ दिल में करती है कानों की बालियाँ।

बाँक (पु0) एक किस्म के खमदार कड़े जो पूरब में क़स्बाती औरतें पैरों मे पहनती है। इनका खम गट्टों के नीचे रहता है **देखें** पाज़ेब।

कटकड़ा ( ) देखें बाँक।

बाइती (स्त्री) देखें ज़िह।

बुत्ता (पु0) सुनार के ज़ेवर में टाँका लगाने के चराग़ का ढीवट जिस के मुँह पर निबाताती तेल भरा रहता है इसमें बत्ती लगाकर उसके शोले को बंक नाल के ज़रिये टाँके पर दौड़ाकर उस को गर्माते और पिघलाते हैं।

बजर गर्भ (स्त्री) बाला या बाली जिसमें दो मोती और उनके बीच में कोई रंगीन नग पड़ा हो।

बजरिया (स्त्री) ऐसी अंगूठी जिसके छल्ले के ऊपर मुस़ल्लस बना हुआ हो जिसके बीच में हीरा, बगलियों में दूसरी क़िस्म के नग जड़े हों इस क़िस्म की अंगूठी बाज़ मुक़ामात पर शादी के मौका पर दूल्हा को बतौर निषान पहनाई जाती है।

बिजली/बिजलियाँ (स्त्री) कान की लौ में पहनने का हिलाल की शकल का मुख़तलिफ वज़अ़ का सादा या जड़ाऊ बना हुआ ज़ेवर, आवेज़े की तरह कान की लौ में लटकता और हरकत में चमकता है इसलिए बिजली के नाम से मौसूम है **देखें** बुंदा।

बिजली/बाला (पु0) बिजली की क़िस्म का बाला जो आमतौर से सादा बनाया जाता है और कान की लौ में हाले की तरह लटकता मालूम होता है। **देखें** बुंदा।

बिछ्वा/बिछ्वे (पु0) बिच्छू की शकल का बना हुआ गँवारू ज़ेवर जो हिन्दू औरतें हाथ या पैर में की उंगलियों में पहनती हैं।

बर्बोली (स्त्री) दूल्हा को बतौर निषान पहनाने की तीन नगों की अंगूठी जिसके ऊपर दो तरफ मोती और बीच में कोई कीमती नग जड़ा हो।

बुर्सी (स्त्री) सुनार की भट्टी जो मटके की शकल की होती है जिसके सामने के रुख़ एक मुँह का बना होता है।

ओला ( ) देखें बुर्सी।

बल (पु0) सोने या चाँदी के हस्बे ज़ुरूरत दो मोटे तारों को रस्सी की तरह बल देकर बनाई हुई पैरों की चूड़ियाँ। **देखें** पाज़ेब।

बुलाक़ (पु0) नाक के बांसे में पहनने का बुंदे की वज़अ़ का ज़ेवर बाज़ बिजली की शक्ल के भी होतें हैं। **देखें** बिजली।

बल ढंड/बल ढंटर (पु0) बाजू पर पहनने के कड़े। **देखें** अंगद।

बुंदा (पु0) कान की लौ में पहनने का ज़ेवर जो मुख़तलिफ वज़अ का मामूली और आला, सादा और जड़ाऊ बनाया जाता है इन सब में नीचे के रुख झूलने वाली एक मुष्तरक चीज़ होती है जो आवेज़ा या बुंदा कहलाती है और यही चीज़ इस ज़ेवर की वज़ह तस्मिया है। आवेज़ा या बुंदा मोती का भी होता है और नग का भी जो आमतौर से लम्बोतरा यानी सुराहीनुमा पसंद किया जाता है। इसके अलावा मुख़तलिफ वज़अ़ के खुषनुमा सादे और जड़ाऊ आवेज़े भी बनाये जाते हैं।

गौहर मज़मूने आषिक की जगह हो कान में।
लीजिए मोती कोई बुंदे के क़ाबिल देखकर।।

बुंदों की क़िस्म के ज़ेवर में झुमके (किरन फूल) और बिजलियाँ खासतौर से मषहूर है। बाज़ बुंदे सहेलीदार होते हैं और बाज़ सादा, **सहेलीदार** बुंदे वह कहलातें हैं जिनमें आवेज़े के ऊपर दो पत्तियाँ दोनों तरफ हों इन पत्तियों को इस्तिलाह में सहेली कहतें हैं। दोनों सहेलियों के जोड़ पर फूल की वज़अ़ की बनी हुई शकल

को इस्तिलाह में **मुरकी** कहतें हैं। **काँटा** बुंदे के सिरे पर कान की लौ में अटकाने के लिए बना हुआ आँकड़ा।

सुबह का तारा खजल ही देख बुंदे की लटक।
देख सूरज यह जड़ाऊ मुर्किया थर्राया है।। (जुरात)

बंधाब्ना (पु0) देखें सहारा।

बंक नाल (स्त्री) टेढ़े मुँह की नली जो ज़ेवर में मामूली झाल लगाने को चिराग की लौ का शोला दौड़ाने के लिए इस्तेमाल की जाती है। **देखें** बुत्ता।

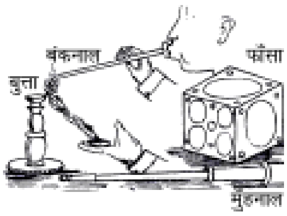

बेर बाली (स्त्री) दुल्हन की नाक में पहनाने की दो मोती और उनके दरमियान नग डालकर तैयार की हुई बोली।

बेसर (स्त्री) बैज़वी शकल की जड़ाऊ नथ जो बाज़ मुक़ामात पर दुल्हन को पहनाने के लिए मखसूस होती है।

भुज़बंद/भोजबंद (पु0) देखें बाजू बंद।

भेदू (पु0) कान की लौ में पहनने का हलके क़िस्म का ज़ेवर जैसे बुंदा वगैरा।

पाबिरंजन (स्त्री) देखें झाजन और पाज़ेब।

पाज़ेब (स्त्री) पैरों में टख़नों के मुक़ाम पर पहनने के मुख़्तलिफ वज़अ क़तअ के सादा और जड़ाऊ बना हुआ ज़ेवर, हिन्दी में पायल कहते हैं।

पायल है तेरी, पाँव से पायल के ज़्यादा।
आवाज़ के सुनते ही गया दर्द कमर से।।

अर्फ़े आम में पाज़ेब एक ख़ास वज़अ़ के घुंगरुदार या चाँददार बने हुये ज़ेवर को कहते हैं। मुसलमानों में सोने की भी पहनी जाती है लेकिन हिन्दुओं में सोने की नहीं पहनी जाती क्योंकि उनके मज़हब में पैरों में सोना पहनना ममनू है। आवाज़ के लिए पाज़ेब घुंगरूदार बनाई जाती है लेकिन जो उसकी झंकार नहीं पसंद करते वह घुंगरू की जगह चाँद की आवेज़े बनवाते हैं।

अव्वल तो सनम गर्मिये रफ़्तार ग़ज़ब है।
उस पर तेरे पाज़ेब की झंकार ग़ज़ब है।। (जुरात)

पैरों के ज़ेवरो में ख़ासतौर से झाँजन (पाबरिंजन) छागल (छड़े, रामझोल) लच्छे (बल) तोड़े मषहूर है। तोड़े दरअस्ल बगैर घुंगरू या चाँदी की पाज़ेब को कहते हैं जो ज़्यादा उम्र की औरतें पहनती हैं।

पाँसा (पु0) देखें फाँसा।

पायल (स्त्री) देखें पाज़ेब।

पायंजर (स्त्री) देखें पाज़ेब।

पत्ता (पु0) बालियों में डालकर पहनने का एक किस्म का आवेज़ा बवजह पत्ते की शक्ल बनाने के पत्ता कहलाता है। सोने चाँदी का जड़ाऊ और सादा बालियों की मुनासिबत से बनाया जाता है।

कान मे वाँ है ज़ुमुर्रद का जड़ाऊ पत्ता।
मुझ को बर्गे तरे अंगूर नज़र आता है।। (असीर)

पट्री/पट्रिया (स्त्री) देखें परीबंद।

पच्लड़ा (पु0) सोने या चाँदी की जंजीर का बना हुआ हार की क़िस्म का ज़ेवर जो ज़ंजीरों की तादाद से दोलड़ा, पचलड़ा और सतलड़ा वगैरा नामों से मौसूम किया जाता है।

लगा दुग्दुगी, पचलड़ा, सतलड़ा।
सरासर गले हुस्न उन के पड़ा।। (मीर हसन)

परीबंद (स्त्री) हाथ की कलाई में पहनने का जालीदार चूड़ी की वज़अ़ का जेवर, देहाती गरीब औरतें चाँदी का पहनती हैं। बच्चियाँ और जवान औरतें घुंगरूदार पसंद करती हैं।

उड़ाया यह जेवर की तज़ईन ने।
परी बंद से वह परी बन गयी।।

परियाल/परियाँ (स्त्री) देखें सरासरी और सीसफूल।

परीझपक (स्त्री) देखें परीबंद।

परीछन/परीछम (पु0) देखें परीबंद।

प्लास (पु0) सोने या चाँदी की कड़ियाँ मोड़ने या बनाने का नोकदार पतले मुँह का संसीनुमा औज़ार जो एक क़िस्म का मोचना होता है।

पोरउवे/पोरें (स्त्री) हाथ की उंगलियों में पहनने का छल्लों की वज़अ़ का ज़ेवर।

पहुँची/पहुँचियाँ (स्त्री) पहुँचे (कलाई) में पहनने का ज़ेवर जो एक खास वज़अ का बनाया और पहुँची के नाम से मौसूम किया जाता है। कलाई के ज़ेवरों में खास तौर से एक नगियाँ। पहुँचियाँ, चूहे दतिय्याँ, दस्तबंद, सुमरन, कंगन, नौगिरियाँ (नौ नगियाँ) और चूडियाँ मषहूर है।

वह पहुँची ज़ुमुर्रुद की और दस्तबंद।
नज़ाकत में थी शाख़े गुल से दो चंद।। (मीर हसन)

पैजनियाँ (स्त्री) झाँजन की वज़अ़ का ज़ेवर। झाँजन में और पैंजनी में यह फर्क होता है कि झाँजन टख़ने में ढीले ढाले रहते हैं और पैंजनी फंसी हुई। यह जेवर आमतौर से पहाड़ी नीम मुहज़्ज़ब औरतें पहनती हैं जो अमूमन काँसे और पीतल का होता है। **देखें** पाज़ेब।

फाँसा/पाँसा (पु0) घुंघरू बनाने का ठप्पा।

चित्र लगाये पृ0 16 पर है।

फुल्ली (स्त्री) देखें कील।

तागड़ी (स्त्री) कमर का ज़ेवर जो सोने या चाँदी की जंजीर की शकल का होता है बाज़ हिन्दू मर्द और अक्सर हिन्दू औरतें कमर पर बाँधती हैं जिसमें अक्सर कुंजियाँ वगैरा भी लट्का ली जाती है। दकन में पेटी की शक्ल का होता है और पेटी की तरह बाँधा जाता है और कट मेख्ला कहलाता है।

तरकी (स्त्री) घुंडी की शक्ल का चढ़ाऊ या सादा कानों की लौ में पहनने का ज़ेवर। दकन की औरतें बालियों की बजाये पहनती हैं।

तरकी राजिक (स्त्री) अंगूठी जिसके बीच में मोती और दोनों तरफ नग जड़े हों।

तोड़ा (पु0) गर्दन में पहनने का सोने या चाँदी की ज़ंजीर का बना हुआ ज़ेवर। भारी और खुष वज़अ़ भी बनाया जाता है।

मेरी गर्दन की भी ज़ंजीर उतरवाइये आप।
आप ने अपने गले का जो उतारा तोड़ा।। (नासिख़)

लोलू (पु0) देखें तरकी।

तोता (पु0) देखें बेसर।

मोरनी (स्त्री) देखें बेसर।

कट मेख्ला (पु0) देखें ताग्ड़ी।

छदर खटंका (पु0) देखें ताग्ड़ी।

कमर ज़ेब (पु0) देखें ताग्ड़ी।

सीस तिलक (पु0) देखें टीका। **चित्र लगाना**

तोडा/तोडे (पु0) बगैर घुंघरू की पाज़ेब जो पटरीदार होती है। **देखें** पाज़ेब।

कैसी अट्खेली से चलते हैं पहनकर तोड़े।
उनकी पापोष से दमे आषिक़ मुज़तर तोड़े।।

थड़ा/थला (पु0) सुनार के काम करने की जगह या ठीया।

टाँका (पु0) ज़ेवर के जोड़ झालने के लिये तैयार किया हुआ चाँदी और सोने का मुरक्कब। **देखें** भाग तीन ज़रूफसाज़ी पृ0

टिम्नी/तिम्नी (स्त्री) टूम का दूसरा तलफ़्फ़ुज़, सोने या चाँदी का बनाया हुआ गुलूबंद की क़िस्म का मीनाकारी या जड़ाऊ ज़ेवर। जयपुर में खास तौर से बनाया जाता है।

टूम छल्ला (पु0) गहनापाता। ज़ेवर या औरतों की ज़ीनत की चीजें। यह लफ़्ज़ आमतौर से मामूली और अवाम में मुरव्विज़ ज़ेवर के लिए बोला जाता है।

टीप (स्त्री) गर्दन में पहनने का ज़ेवर। सोने चाँदी का सादा और जड़ाऊ फूल पत्तियों की वज़अ़ का बनाया जाता है। **देखें** गुलूबंद।

टीका (पु0) माथे पर लगाने का ज़ेवर जो करीब एक इंच कुत्र का और आमतौर से जड़ाऊ बनाया जाता है जिसके अतराफ मोतियों की झालर होती है आमतौर से कम उम्र की औरतें और लड़कियाँ लगाती हैं। **देखें** सरासरी।

खुर्षीद पे आता है नज़र अक़्दे सुरय्या।
टीका जो मुरस्सा नज़र आता है जबीं पर।।
वह माथे पे टीके की उस के झलक।
सहर चाँद तारों की जैसे चमक।।

ठप्पा (पु0) फौलाद काँसे का बेल बूटा खुदा हुआ मुहरा जिस पर ठोककर बाज़ ज़ेवर नक़्षीं बनाये
जातें हैं। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

ठुस्सी (स्त्री) षिमाली हिन्द में गर्दन के जिस ज़ेवर को गुलूबंद कहते हैं दकन में ठुस्सी कहलाता है।
देखें गुलूबंद।

जड़ाऊ ज़ेवर (पु0) मुरस्सा़ जेवर। वह ज़ेवर जिसमें हस्बे मौक़ा व हस्बेज़ुरूरत मुख्तलिफ किस्म के जवाहरात खुषनुमाई के लिए जड़कर तैयार किया गया हो।

जुग्नी (स्त्री) गले में हंस्ली की हड्डियों के जोड़ के ऊपर पहनने का जेवर। अवध में जुगनू, पंजाब में दुगदुगी और बाज़ मुक़ामात में उर्बसी और चौकी कहते हैं। दुगदुगी दरअसल कंठ के नीचे हंसली हड्डियों के जोड़ के दरमियान गड़हे को कहते हैं शायद उसको छिपाने के लिए इस ज़ेवर की ईज़ाद हुइ और वही इसकी वजह तस्मिया है। शक्ल में सितारे की वज़अ़ का और वुस्अत में डेढ़ दो इंच कुत्र का आमतौर से जड़ाऊ बनाया जाता है। इसमें ऐसे शोख रंग और चमकदार नग लगाते हैं जो अंधेरे में रोषनी पड़ने से जगमगाये। इसी वजह से इस ज़ेवर को जुग्नी या जुग्नू के नाम से मौसूम किया जाता है।

जान पड़ जाती है ज़ेवर में पहनने से तेरे।
कहीं उड़ जाये न जुगनी तेरी जुगनू हो कर।। (ख़्वाजा वज़ीर)
क्या चमकता है शबेतार में तेरा जुगनू।
आ! मेरी चाँदसी जुगनी पे चमक जा जुगनू।। (सुरूर)

चित्र– जुगनी

जिलाकार (पु0) ज़ेवर वगैरा पर जिला करने वाला।

जोड़ (पु0) तीन चूड़ियों का मजमूआ़ जिसमें बीच की चूड़ी चौड़ी और सिरों की पतली होती है। हाथों या पैरों में बतौर ज़ेवर पहनने के लिए सोने या चाँदी का बनाया जाता है।

जोषन (पु0) बाजू पर पहनने का ज़ेवर जो अमूमन सादा और गंडेरीनुमा लाख भरकर बनाया जाता है। गंडेरिया आमतौर से हष्त पहेल होती है और एक डोरे में मुंसलिक कर ली जाती है। **देखें** बाजूबंद।

जव्वा (पु0) देखें हथ फूल।

जूई (स्त्री) देखें परीबंद।

जहाँगीरी/जहाँगीरियाँ (स्त्री) उर्दू में जहाँगीरियाँ कहलाती और मल्का–ए –नूरजरहाँ की ईजाद बताई जाती है।

जहाँगीरी का आलम उसकी साइद में निराला है।
वह ख़ते कहकषाँ है गिर्द उसके मह का हाला है।। (निकहत)

जीग़ा (पु0) देखें सरपेच।

झाला (पु0) देखें बिजली बाला।

झाँजन (पु0) पैरों में पहनने का खोलदार कड़े की वज़अ़ का ज़ेवर जिसके अंदर झंकार के लिए लोहे या सीसे के दाने, जिनको इस्तिलाह में रौने कहते हैं, डाल दिये जाते हैं जो हरकत में झंकार पैदा करते हैं। **देखें** पाज़ेब।

झिलमिली/झिलमिलियाँ (स्त्री) झूमर की लड़ियों के सिरों पर बंधे हुये जड़ाऊ चाँद तारे। **देखें** चित्र झूमर।

झुलनियाँ / झूलन (स्त्री) बुंदे की क़िस्म से कान की लौ का बहुत फैलावदार तैयार किया हुआ पुरानी वज़अ़ का बेगमात के पहनने का ज़ेवर यह चार और छः इंच तक लम्बा और उसी मुनासिबत से चौड़ा होता है किनारों पर मुख़तलिफ़ वज़अ़ की सहेलियाँ बतौर आवेज़े लगाई जाती हैं। सादा और जड़ाऊ दोनों क़िस्म का बनाया जाता है जड़ाऊ बहुत क़ीमती और निहायत खुषवज़अ़ होता है। झुलनियों की एक क़िस्म चौदानी और मगरचौदानी के नाम से मौसूम किया जाता है इसमें नीचे का आवेज़ा मगर या मछली की शक्ल का होता है और यही उसकी वजह तस्मिया है। सिर्फ मगर या मछली की शक्ल का आवेज़ा भी बतौर पत्ता बाले में डाल लिया जाता है।

यह किसके कान के बाले की मछली देखी है।

मिसाले माही बेआब बेक़रार हूँ मैं।। (नासिख़)

बाले हैं तेरे हुस्न के दरिया में भँवर दो।

उस पर से ग़ज़ब यह है कि हैं उनमें मगर दो।। (ज़फ़र)

झुमका / झुमके (पु0) बुंदे की क़िस्म का ज़ेवर जिसकी मुर्की कटोरी की शक्ल की जड़ाऊ और सादा दोनों क़िस्म की होती है। उसके दौर में मुख़तलिफ़ वज़अ़ के आवेज़े बतौर झालर लगाये जाते हैं औरै कटोरी के बीच में एक आवेज़ा बतौर लंगर लटका हुआ होता है। **देखें** झुलनियाँ।

अगर चमके ज़मीं पर उस परी के कान का झुमका।

फलक पर फिर न ताब आये कभी अक़्द सुरय्या को।।

उस कान के झुमके की लटक देख ले शायद।

हर खोषा इसी ताक में रहता है ग़ज़ब का।। (ज़फ़र)

लटकन (पु0) देखें झुलनियाँ।

झूमर (पु0) माथे का ज़ेवर जो अमूमन जड़ाऊ होता है इसमें एक जड़ाऊ मुसल्लस बना होता है जिसके काइदे में मोतियों के साथ नौ लड़ियाँ लटकतीं है। इन लड़ियों के सिरे में जड़ाऊ बने हुये चाँद तारे बंधे होते हैं जो माथे पर भवों से मिले हुये लटकते रहते हैं।

न रौकष है सुरय्या और न परवीन उसके हमसर है।

कि बाग़े हुस्न का इक खोष ए अंगूर झूमर है।। (निकहत)

माथे पे तेरे झमके है झूमर का पड़ा चाँद। (ज़ौक़)

झूमक (पु0) झूमर का इस्मेमुसग्गर। छोटा और मामूली क़िस्म का झूमर।

झेला / झेले (पु0) देखें सहारा।

चाँदला (पु0) देखें टीका।

चुट्की छल्ले (पु0) देखें चरन पोर्वे।

चरन पदम (स्त्री) देखें चरन चाप।

चरन चाप (स्त्री) पदम, पाज़ेब की क़िस्म का ज़ेवर जो तीन या पाँच सोने या चाँदी की ज़ंजीरों का मज़मूआ होता है और बतौर लच्छे के पैरों में पहना जाता है।

चिरौनी (स्त्री) कंघी की क़िस्म का बालों में लगाने का ज़ेवर जो बालों को माँग के दोनों तरफ जमा रखे ताकि माँग बनी रहे।

चक (स्त्री) देखें सीस फूल।

चम्पाकली (स्त्री) गले में पहनने का ज़ेवर जो चम्पा के फूल की कली की शक्ल लम्बोतरा और गावदुम दानों की वज़अ़ का बनाया जाता है जो तादाद में चालीस से ऊपर एक डोरे से मुंसलिक रहते हैं। जिस चम्पा कली के दानों के सिरों पर खुषनुमाई के लिए छोटे चाँद बनाकर लटका दिये जायें वह चाँददार चम्पाकली कहलाती है। **देखें** जुगनी।

चमेलियाँ (स्त्री) देखें चूहे दत्तियाँ।

चंदनहार/चंदनहारन (पु0) गर्दन में लटकाकर पहनने का एक क़िस्म का हार जिसकी ज़ंजीरों की कड़ियाँ चाँद के हल्क़े की मानिंद बनाई जाती है और यही उसकी वह तस्मिया है।

चौदानी/चौदानियाँ (स्त्री) देखें मगर चौदानियाँ।

चूड़ा (पु0) देखें जोड़।

चौकी (स्त्री) देखें जुगनी।

चूहे दत्ती/चूहे दत्तियाँ (स्त्री) कलाई में पहनने का पहुँची की क़िस्म का ज़ेवर इसके दाने पहुँची के दानों के बरखिलाफ़ बजाय गोल के चमेली की कली की शक्ल के होते हैं इन दानों की चूहे के दातों से मुषाबहत की वज़ह से इस ज़ेवर का नाम चूहेदत्तियाँ मषहूर हो गया है। मलका–ए–नूरजहाँ की ईजाद बजाई जाती है। **देखें** पहुँची।

उनका ज़ेवर भी है गोया दिलरूबा।
दिल में चूहे दत्तियों का दाँत है। (जुरात)

छागल (स्त्री) रामझोल और पाज़ेब एक ही क़िस्म के ज़ेवरों के मुख़्तलिफ़ नाम है जिनकी बनावट में कुछ थोड़ा सा फर्क होता है। **देखें** पाज़ेब।

छप्का/छप्के (पु0) जड़ाऊ वाले जो कान की लौ में पहनकर बजाये लटकाने के ऊपर को पलट लिये जाते हैं जिस की वजह से उनका जड़ाऊ रुख पूरे कान के हिस्से पर सामने रहता है।

छड़ा/छड़े (पु0) पैरों में पहनने की जालीदार बनी हुई चौड़ी चूड़ी बगैर घुंगरू की या घुंगरूदार। सोने या चाँदी की बनाई जाती है। **देखें** पाज़ेब।

छुपके घर किसके जाओगे साहब।
क्यों छड़े पाँव के उतारे है।।
अब पाँव रखके वह नहीं चलते जमीं पर।
इक इक कड़े के साथ में दो दो छड़े हुये।। (आतष)

छल्ला (पु0) हाथ या पैरों की उंगलियों में पहनने का अँगूठी की क़िस्म का गोल हल्क़ानुमा बना हुआ बगैर नग का जेवर, नकषीं और सादा दोनों वज़अ़ का बनाया जाता है।

छल्ले सोने के जो यक दस दिये मैंने पिंहा।
उंगलियाँ हो गयी उस शौख़ की उंगुष्तनुमा।।

छन/छनियाँ (स्त्री) देखें परीबंद।

दिलकषी की अदा है बातों मे।
छनियाँ हैं जड़ाऊ हाथों में।। (मीरहसन)

छैला (स्त्री) नगदार खुषवज़अ़ बनी हुई अंगूठी।

हौल वली (स्त्री) नज़रे बद से हिफाज़त को कोई दुआइया इबारत कीमती पत्थर या धात की हष्त पहल तख़्ती पर खुदी हुई जो ज़ेवर के तौर पर गले में पहन ली जाये।

ख़ल्ख़ाल (पु0) देखें झाजन।

दुरबच्चा/दुरबच्चे (पु0) बारीक मोतियों की लड़ियाँ जो बतौर बुंदा कान की लौ में पहन ली जाये।

दस्तबंद (पु0) कलाई में पहनने के ज़ेवरों में का एक ज़ेवर लेकिन उर्दू में इसका मफ़हूम बैज़वी मोती या किसी कीमती पत्थर के बैज़वी दानों का हल्क़ा होता है **देखें** पहुंची।

वह पहुंची ज़ुमुर्रुद की और दस्तबंद।
नज़ाकत में भी शाख़े गुल से दो चंद।। (मीर हसन)

दुगदुगी (स्त्री) देखें जुगनी।

वह छाती पे इल्मास की दुग्दुगी।
रहे आँख सूरज की जिस पर छुकी।। (मीर हसन)

दोलडा (पु0) देखें पचलडा।

ढाम्नी (स्त्री) टीके की वज़अ़ का माथे का ज़ेवर। **देखें** टीका और सरासरी।

ढोल्ना (पु0) ढोल की वज़अ़ बना गले में बतौर हार पहनने का ज़ेवर। पंजाब के दिहात में इसका रवाज ज़्यादा है।

ढेरी (स्त्री) देखें मुर्की।
रामझोल/रमझोल (स्त्री) पाज़ेब।
रतनजोड़ (पु0) हाथ की पुष्त का ज़ेवर जिसमें पाँचों उंगलियों के छल्ले लड़ियों में लगे होते हैं। **देखें** हथफूल।
रौना/रौने (पु0) झाँजन वगैरा के अंदर झंकार के लिये डालने को सीसे या लोहे के गोल छोटे दाने। डालना के साथ बोला जाता है।
रेखाँ/रेखाँ (स्त्री) सामने के दाँतों में जड़ी हुई सोने की कीलें जो किसी मज़हबी ज़ुरूरत से बाज़ हिन्दू दाँतों में जड़वा लेते हैं।
ज़रगर (पु0) देखें सुंहार।
जिह (स्त्री) जड़ाऊ ज़ेवर के नग के घर की कोर या बाड़। **~बिठाना** नग के खाने में नग जमाकर खाने की कोर को पलटना। मोड़ देना ताकि नग जम जाये।
ज़ेवर (पु0) औरत के सिंगार की चीजें जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की धात, कीमती पत्थर, जवाहर, मोती और घोंगों से जिस्म के हर हिस्से के लिये तरह–तरह की शक्लों की बनाई जाती हैं। **गड़ना** के साथ बोला जाता है।
सादा ज़ेवर (पु0) वह ज़ेवर जिसमें किसी क़िस्म का नग न जड़ा हो और न मीनाकारी हो।
सादे कार (पु0) नाजुक क़िस्म के जड़ाऊ ज़ेवर बनाने वाला मुसलमान सुनार जिनकी एक बड़ी बिरादी देहली और हिन्दुस्तान के दूसरे बड़े–बड़े शहरों में इसी क़िस्म के काम करती है देहली में यह लोग आमतौर से लाहोरियों के नाम से मषहूर है जो अमूमन मामूली किस्म की ज़रूफ़साज़ी, सोने चाँदी के बर्तन और जड़ाऊ ज़ेवर बनाते हैं। देहली में उनका यह उर्फ़ ग़ालिबन कोट्ली लोहारन के बाषिंदे होने की वजह से पड़ गया है जहाँ की आला ज़रूफसाज़ी की सिंअत किसी ज़माने में मषहूर थी शायद मुग़लों के अहेद में उस बिरादरी के लोग देहली में आकर आबाद हुये और कोट्ली लोहारन के बाषिंदे होने की वजह लाहोरिये मषहूर हो गये।
सतलड़ा (पु0) देखें पचलड़ा।
सरासरी (स्त्री) मांग के दोनों तरफ पेषानी को बालों की पट्टियों के किनारे किनारे लगाने का सादा या जड़ाऊ बना हुआ ज़ेवर जो ज़ेवर जो ज़ंजीर की लड़ी या पड़ी की शक्ल का होता है बाज़ मोती की लड़ियों का भी होता है माँग के दोनों तरफ कनपटियों तक झालर की तरह लटका रहता है। इसके बीच में एक टीका भी होता है।

सरपेच (पु0) बादषाहों, नवाबों और उमरा की पगड़ी के ऊपर बाँधने का मोती या जवाहरात का लड़ी की शक्ल का ज़ेवर जिसमें एक जड़ाऊ पड़ी या आवेज़ा भी होता है।
चीगा (पु0) देखें सरपेच।

चित्र– सरपेच

सरीका (पु0) नौ या दस बड़े मोतियों का गुलूबंद।
सुमरन (स्त्री) देखें दस्तबंद।
सिंथी (स्त्री) देखें सरासरी।
संखारी/संखहारी (स्त्री) कौड़ियों और घोंगों का ज़ेवर बनाने वाला कारीगर।
सुंहार (पु0) औरतों के सिंगार के लिये ज़ेवर गढ़ने या बनाने वाला क़दीम पेषेवर कारीगर। बाज़ चालाकियों की वजह इसके मुतअल्लिक हिन्दी कहावत मषहूर है कि –

अस्सी, सुंहार सौ ठक, सौ इक ठाकुर इक।

इनकी प्रीत न करो, यह मन रखो ठीक।

सहारा/सहारे (पु0) कान की बालियों का वज़न सहारने वाला ज़ंजीरों की वज़अ़ का ज़ेवर। इसकी ज़ंजीरों के सिरे बालियों में डालकर सर के ऊपर अटका लेते हैं।

सहेली (स्त्री) देखें बुंदा।

सीस पट्टी (स्त्री) देखें सिंथी और सरासरी।

सीस फूल (पु0) चोटी की जड़ के ऊपर लगाने का कटोरी या किसी फूल की शक्ल का ज़ेवर, ख़ासतौर पर पंजाब और दकन में इसका रवाज़ है।

जब से लगा है आपके जूड़े में सीस फूल।

चोटी है आसमान पर अरूसे बहार की।।

सीस चंगेर (स्त्री) देखें सीस फूल।

तौक़ (पु0) देखें हंसली।

फतह चाँद (पु0) हिलाल की शक्ल का सादा या जड़ाऊ ज़ेवर बतौर निषान राजपूत सरदारों को पगड़ी पर लगाने के लिये मुगल बादषाहों के दरबार से अ़ता होता था। **चित्र– फतह चाँद**

फिंदक (स्त्री) देखें पोर्वे।

काँटा (पु0) देखें बुंदा।

कर्नफूल (पु0) देखें झुमका।

कड़ा (पु0) चाँदी या सोने का सादा जड़ाऊ या नक़षीन हल्क़े की शक्ल का ठोस बना हुआ ज़ेवर जो हाथ और पैर दोनों में पहना जाता है। बाज़ जड़ाऊ कड़ों के मुँह निहायत खुषनुमा बनाये जाते हैं मुँह आमतौर से घुंडीदार और ख़ासतौर पर मगर या शेर के चेहरों का होता है।

हाथों में जड़ाऊ कब कड़े थे।

तारे शबे ईद में जड़े थे।।

कड़ूले (पु0) कड़ों का इस्मे मुसग्गर। बच्चों के हाथों के कड़े।

कल्ग़ी (स्त्री) नव्वाबों या अमीरों की पगड़ी पर बतौर ज़ेवर बाँधने का जड़ाऊ या मोतियों का तुर्रा। ताज का सामने के रुख उठा हुआ मुरस्सा हिस्सा।

कंठा (पु0) गर्दन में कंठ के मुक़ाम पर पहनने का लड़ी की वज़अ़ का ज़ेवर। कंठ इसकी वजह तस्मिया है।

गले में तुम्हारे बहुत ज़ेब देंगे।

सितारों के बनवाओ कंठे के शम्से।।

(असद)

कंठमाला (पु0) देखें कंठा।

कंठी (स्त्री) कंठे का इस्मे मुसग्गर।

किंकनी (स्त्री) देखें घुंगरू।

कंगन (पु0) कलाइयों में पहनने का किरनदार या कंगूरेदार ज़ेवर। **देखें** पहुंची।

हो रही है सुबह यह तालेअ़ कि दो शीज़ा कोई।

आ रही है खेलती कंगन से शर्माती हुई।।

(जोष)

कोठी (स्त्री) जड़ाऊ ज़ेवर के नग का घर जिसमें नग बिठाकर ऊपर कोरों पर कुंदन कर दिया जाता है या कोरें मोड़ दी जाती है। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

कोरा (पु0) देखें बुर्सी।

कूकर दंतियाँ (स्त्री) देखें चूहे दत्तियाँ।

कैरी (स्त्री) इत्र रखने का ज़ेवर जो आम की कैरी के मुषाबा डिबिया के मुषाबा बनाया जाता है और यही उसकी वजह तस्मिया है। इत्र उसमें रखकर गले में लटका लेते हैं।

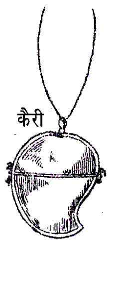

कील (स्त्री) नाक के नथने में पहनने का जड़ाऊ या सादा जेवर जो लौंग की शक्ल मेख़ की शक्ल का होने की वजह लौंग, फुल्ली या कील के नाम से मौसूम किया जाता है।

कील हीरे की किस की नाक में है।
मेरे दिल में गड़ी जो कील सी है।। (मुसहफी)

खटाई में डालना (क्रिया) ज़ेवर को निखारने के लिये तेज़ाब वग़ैरा से बने हुये मसाले में डालना।

खटका/खटके (पु0) देखें छप्का।

खडा (स्त्री) आला किस्म के दीवार उजालने का याकूत की रेट का बनाया हुआ मसाला।

गटकड़ा (पु0) देखें बाँक।

गजरा (पु0) देखें तोड़ा और कंठा।

गजरी (स्त्री) पाज़ेब के ऊपर पहनने का एक क़िस्म का ज़ंजीर की वज़अ़ का ज़ेवर।

गर्भ/गर्भक (स्त्री) बालों में लगाने का काँटा, चोटी के जूड़े में अटकाने का सूआ।

गुलचीप (स्त्री) देखें टीप।

गुलूबंद (पु0) गर्दन में पहनने का ज़ेवर, सादा और जड़ाऊ दोनों क़िस्म का बनाया जाता है आमतौर से पटरीदार होता है और नीचे की कोर पर घुंगरू की झालर होती है और जड़ाऊ में मोती की। हिन्दी में ठुस्सी कहलाता है। **टेप** भी गुलूबंद की वज़अ़ का ज़ेवर होता है। इसमें घुंगरू की झालर नहीं होती, गर्दन के ज़ेवरों में गुलूवंद टेप, तोड़ा, कंठा, गजरा खासतौर से मषहूर है।

चित्र– गले का जेवर

गोष्वारा (पु0) देखें बुंदा।

गोलमाल (पु0) झाँजन की क़िस्म का ज़ेवर। **देखें** झाँजन।

गूँज (स्त्री) बाली के हल्क़े का नोंकदार ज़रा मुड़ा हुआ सिरा जो दूसरे सिरे के मुँह में अटका दिया जाय। **मोड़ना** के साथ बोला जाता है।

गहना (पु0) देखें ज़ेवर।

गडय्या (पु0) सादे ज़ेवर बनाने वाला सुंहार।

घुंगरू (पु0) मटर के दाने की शक्ल बनाई हुई ज़ेवर की एक किस्म हस्बे जुरूरत छोटा, बड़ा, सोने चाँदी वगैरा का बनाया जाता है और खोल की शक्ल का होता है जब किसी ज़ेवर में बतौर झालर लगाने के लिये छोटी क़िस्म का बनाया जाता है तो उसमें लाख भर दी जाती है और बतौर ज़ेवर पहनने के लिये बनाया जाता है तो भारी और बड़ा बनाते हैं और झंकार के लिये उसके अंदर लोहे या सीसे का दाना डाल देते हैं।

यार तौसीफ करेगा कोई क्या घुंगरू की।
सोते फित्ने को जगाती है सदा घुंगरू की।।

घोडी (स्त्री) घुंगरू का ढौल गड़ने का साँचा या फरमा। **देखें** फाँसा (पाँसा)।

लच्छा (पु0) पैरों में पहनने का चूड़ीनुमा ज़ेवर। **देखें** पाज़ेब।

लौलक (पु0) कान की लौ का ज़ेवर। **देखें** बुंदा।

लौंग (स्त्री) देखें कील।

माग्री (स्त्री) देखें छप्का।

माला (स्त्री) सोने या चाँदी का बने हुये गोल दानों का हार की क़िस्म का गले में लटकाने का ज़ेवर। दाने नक़्शी और कम्रख़ी भी बनाये जाते हैं। मोती या सच्चे नगों का बहुत आला क़िस्म का समझा जाता है और दरअसल वही माला

कहलाता है सोने या चाँदी का बना हुआ उसकी नक़ल होता है।

सीने पे तू बनाना इक मोतियों की माला।
नक्क़ाष खींचना यूँ तस्वीर हुस्ने जाना।। (मुस़हफ़ी)
जूँ शमा मुझे शर्म है जुन्नार की ऐ शेख़।
माला न जपूँ रात को बे अष्क फिषानी।। (सौदा)

मटर माला (स्त्री) बिल्कुल गोल दाने की माला।

मुर्की/मुर्किया (स्त्री) ढँरी। **देखें** बुंदा।

मरहटियाँ (स्त्री) देखें तर्की और मुर्की।

मुकता कंटक (पु0) मोतियों की गुथवाँ लड़ी जो बतौर माला पहनी जाती है। **देखें** माला।

मुकट (पु0) देखें कलगी।

मगर चौदानियाँ (स्त्री) देखें झुलनियाँ।

मुंदरी (स्त्री) संस्कृत मुद्रा बमानी नगदार अंगूठी। काँच का हल्क़ा जो जोगी कान की लौ में पहनते हैं।

मूली (स्त्री) बारीक मोतियों की लड़ियों का गुच्छा जो झूमर की तरह माँग के किसी एक तरफ बतौर ज़ेवर लटका ली जाती है।

मूँच (स्त्री) सुनार की कोठीदार बड़ी क़िस्म की कुंठाली। **देखें** कुठाली पेषा ए नियारिया।

मोहनमाला (स्त्री) मोतियों की माला। **देखें** मुक्ता कंटक और माला।

मुहरान (पु0) सिक्कों का बना हुआ हार।

नथ (स्त्री) नाक के नथने में पहनने का बाली की वज़अ़ का ज़ेवर, सादा जड़ाऊ फूलदार और बाज़ दूसरी क़िस्म का भी बनाया जाता है। **देखें** बेसर।

बार नथ का क्योंकर उस नाज़ुक बदन से उठ सके।
नीम के तिनके से हो जाती है जिसकी नाक सुर्ख़।। (आषिक़)

कहावत *मियाँ नाक काटने को फिरें, बीवी कहे मुझे नथ गढ़वा दो।*

नथ्नी (स्त्री) नथ का इस्मे मुसग्गर।

नक छाबी (स्त्री) हिन्दुस्तानी क़िस्म की जड़ाऊ नथ जो पत्ते की शक्ल की होती है। **देखें** नथ।

नकषत्र फूल (पु0) बालों में लगाने का काँटा जिसका सिर जड़ाऊ फुल्ली की वज़अ़ का होता है।

नौरतन (पु0) बाजू का जड़ाऊ ज़ेवर जो एक नग के मुक़ाबले में नौ नगों का होता है। **देखें** इक नगा और बाजूबंद।

नौगिरियाँ (स्त्री) कलाई में पहनने का नौ रतन की वज़अ़ का ज़ेवर। बाज़ कारीगर आठ मुख़्तलिफ रंगों के हल्क़े के बीच में एक नग बिठाकर नौ नगा दाना बनाते हैं जो बहुत खुषनुमा होती है यह दाने काभी चौपहल होते हैं और कभी हष्त पहल।

नौ नगा/नौ नगे (पु0) देखें नौरतन।

नौ नगियाँ (स्त्री) देखें नौगिरियाँ।

हार (पु0) गर्दन से नाफ तक लटकता हुआ लड़ी की वज़अ़ का ज़ेवर। सोना, चाँदी, मोती और जवाहरात हत्ता की फूलों का बना हुआ भी हार के आम नाम से मौसूम किया जाता है।

जवाहर से मीने की हैकल जड़ी।
कमर और कूले के नीचे पड़ी।। (मीर हसन)
डाल देता हूँ जो मैं उसको गले में यार के।
बू–ए–यूसुफ़ आने लगती है गलों से हार के।। (आतष)

हाला (पु0) देखें बिजली बाला।

हतरका (पु0) सादेकार का निहायत बारीक सलाई की मानिंद एक क़िस्म का सोहन जो ज़ेवर में फूल पत्ते काटने के काम आता है।

हथफूल (पु0) पंखुड़ी की वज़अ़ का बना हुआ हाथ की पुष्त का ज़ेवर।

हथसंकर (पु0) देखें हथफूल और रतन जोड़।

हंसली (स्त्री) गले में पहनने का हिलालनुमा कड़े की वज़अ़ का ज़ेवर चूँकि वह हंसली की हड्डी के ऊपर रहता है शायद यही उसकी वजह तस्मिया है। दिहाती औरतें बच्चों के गले में किसी बुजुर्ग के नाम में मन्नत का पहनाती हैं और एक ख़ास मुद्दत में जब मन्नत पूरी हो जाये तो उसको उतारकर ख़ैरात कर दिया जाता है इसलिये इस ज़ेवर को मन्नत का ज़ेवर कहा जाता है।

असीरी का हुआ है शौक़ क़ातिल को लड़कपन में।
मुबारक हो पहनता है वह हंसली अपनी गर्दन में।। (कमाल)
होता है शब को देख के धोका हिलाल का।
चाँदी का तौक़ तूने जो पहना गले में है।।

हैकल (पु0) देखें हार।

3. पेषा–ए–चिताईकारी

आधबंद (पु0) लफ़्ज़ हदबंद का गलत तलफ़्फ़ुज़ (चितेरों की इस्तिलाह) ज़ेवर वगैरा की चिताई की हदों के निषान लगाने का बारीक मुँह का आहनी क़लम।

आधी बंद (स्त्री) ज़ेवर पर फूल पत्ते की इब्तिदाई निषान बनाने का हल्क़ी क़िस्म का आहनी क़लम। **देखें** आधबंद।

पर ताज (स्त्री) खजूर छड़ी की वज़अ़ की नियायत बारीक चिताई जो परिंद के पर के तुस की तरह बारीक और मिले हुये खुतूते मुस्तक़ीम की शक्ल मालूम हो, पत्तों की रंगों के निषान। पर ताज बनाने की बारीक नोंक की आहनी सलाई।

परताजी चिताई (स्त्री) बारीक और मिले हुये ख़ते मुस्तक़ीम की शक्ल की चिताई। **देखें** पर ताज।

तह निषान (पु0) ज़ेवर वगैरा की सतह पर फूल पत्ती या किसी नक़्ष का गहरा कटाव जिसमें कोई रंग या मीना भरा जा सके। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

थलाई (स्त्री) फूल पत्तों के ख़म दिखाने को एक क़िस्म की गहरी यानी सतह से दबी हुई चिताई। **प्रयोग** पत्तों को थलाई अच्छी नहीं हुई।

थल्ना (पु0) थलाई यानी ज़ेवर की सतह को हस्बेज़ुरूरत गहरा दबाने वाला आहनी क़लम। जिसके मुँह की धार मसूर की दाल के दाने की तरह उभरी हुई होती है। ज़ेवर की सतह में गहराई बनाना। **देखें** थलाई।

चिताई (स्त्री) ज़ेवर या खुषनुमा ज़रूफ़ की सतह पर क़लम की नोंक से खोदकर नक़्षों निगार बनाने की सिन्अ़त।

चितय्या/चितेरा (पु0) जेवर या आला क़िस्म की धात के ज़रूफ पर आहनी कलम की नोंक से नकशों निगार बनाने वाला कारीगर।

चूड़ी (स्त्री) किसी ज़ेवर या बर्तन पर चिती हुई बेल के दोनों तरफ बना हुआ उभरवाँ ख़त।

चेतना (क्रिया) ज़ेवर या बर्तन की सतह पर आहनी क़लम की नोंक से गोदकर फूल पत्ते और लकीरों के निषान बनाना।

चीरन/चीरनी (स्त्री) सतह में बारीक गहरी लकीर बनाने का नोंकदार आहनी क़लम।

ख़ाली आधबंद (पु0) उभरवाँ नक़्ष बनाने का चितेरे का आहनी क़लम जिसके मुँह पर गहरे नक़्ष खुदे होते हैं।

सुहानी (स्त्री) बारीक नोंक का छोटी किस्म का मोच्ना।

चिमटी ( ) देखें सुहानी।
कट्ना (पु0) ज़ेवर में जाली काटने का आहनी क़लम।
कंडाई (स्त्री) देखें कांडियाना।
कंडियाना (क्रिया) ज़ेवर या सोने चाँदी के बर्तन की सतह पर बारीक लकीरों से फूल पत्ते कच्चे करना यानी इब्तिदाई ऊपरी निषान लगाना, डोल डालना।
कंडेर्ना (पु0) कंडियाने का औज़ार, ज़ेवर या बर्तन की सतह पर ऊपरी बारीक लकीर बनाने का मामूली क़लम। **देखें** कंडियाना।
गुलसुस/गुल सुबा (पु0) छोटी क़िस्म के गोल या चौपतिया फूल का ठप्पा जिससे चाँदी सोने के बड़े ज़ेवर या

छोटे बर्तन पर फूल का नक़्ष उभारते हैं।
लाग (स्त्री) चिताई के वक़्त ज़ेवर या बर्तन की सतह के नीचे लगाने की आड़, चिताई की ज़ुरूरत के लिये बाज़ सूरतों में खोलदार चीज़ को लाख भरकर ठोस बना लेते हैं। जो लाग का काम देती है।
नालक (पु0) बहुत हल्के पत्तर का ज़ेवर या ज़र्फ़ जिस पर चिताई न हो सके यानी चिताई से पत्तर कट जायें। कैरिओं की इस्तिलाह में टूटे फुटे और नाकारा बर्तन को कहते हैं। **देखें** पेषा ठटेरागिरी। भाग तीन।
नक़्षीन काम (पु0) चिताई की सिनअत।

दूसरी फस्ल मुरस्सा कारी

1. पेषा नगीना गिरी

उप/उपाई (स्त्री) नग की सफाई, जिला और चमक जो एक क़िस्म की सान पर घिसकर पैदा की जाये। **करना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** नगों की उपाई बड़ी उमदा हुई है।
उपसान (स्त्री) सच्चे नगों को जिला करने की उमदा और नर्म क़िस्म की लकड़ी की बनी हुई सान जो अमूमन अखरोट, आड़ू या सेमल की लकड़ी की बनाई जाती है।
अठ्वाँस (पु0) अठपहल बना हुआ नगीना।
अहमरी याक़ूत (पु0) सिरके के रंग के मुषाबा स्याही माइल सुर्ख रंग का याक़ूत, रंग की तेज़ी उसकी आब को दबा देती है इसलिये दर्जा ए दोम में उसका शुमार होता है।
अर्ग़वानी याक़ूत (पु0) दर्जा ए सोम का बे आब गहरा सियाही माइल सुर्ख रंग का याक़ूत।
आसमाँ गों फ़ीरोज़ा (पु0) जाम्नी यानी ऊदे रंग की झलक का गहरा नीला नगीना।
असटी ज़ुमुर्रुद (पु0) धान के नये पत्ते की रंगत से मुषाबा सफेदी माइल चमकदार सब्ज़ रंग जौहर।
आष्ट (पु0) जुड़वाँ मोती। एक ही सीप में निकले हुये दो या ज़्यादा मोतियों में का एक मोती जो क़द्रो क़ीमत में दुर्रे यतीम से कम होता है।
झकटा/आट्का (पु0) देखें सुदाई सान।
इल्मास (पु0) देखें हीरा।
इल्मास तराष (पु0) हीरा काटने का औज़ार।
इम्रेल (पु0) कान से निकाला हुआ कुदरती साख़्त का नगीना जिसको काटने बनाने की ज़ुरूरत न हो।
अंकोरा/अंग वरा (पु0) चोबी हत्ती जिसके मुँह पर नगीना जमा कर सान किया जाये। **चित्र अंकोरा पृ059**
एक चरन (पु0) देखें दुर्रे यतीम।
एक डाल नगीना (पु0) कुदरती साख़्त का, सिडौल बड़ा नगीना या जौहर।
सारी हैकल मेरे सरचोट है अब जी में यह है।
कि बस इक डाल नगीनों की हो सारी हैकल।।
(रंगीन)
बाद ज़हर (पु0) नगीने बनाने का एक क़िस्म का कीमती पत्थर, चीन के पहाड़ों

में पाया जाता है। ज़र्द, सफेद और ख़ाकिसतरी रंग का होता है। दूध में डालने से अगर दूध जम जाये तो असली समझा जाता है इसपर बादलों का सा अक्स पाया जाता है।

बच्ची (स्त्री) नग के पहल में दूसरा छोटा सा तराषा हुआ पहल (पहल दर पहल घाट)।

बिधिया (पु0) सूराख़ बिधा हुआ मोती।

बरी (स्त्री) सान के गड़हे भरने का पिसे हुये बिल्लोर से तैयार किया हुआ मसाला।

ब्रह्मा बर्न हीरा (पु0) सफेद रंग बे ऐब हीरा, जो बाज़ ख़ास ज़ेवर के लिये बहुत पसंद किया जाता है।

बुस्सद (पु0) देखें मूँगा।

बुक्मी लाल (पु0) स्याही माइल रंगत का लाल, अद्ना क़िस्म में शुमार होता है।

बुघोरी (स्त्री) देखें दाना सुलेमानी।

बिल्लूर (पु0) एक क़िस्म का क़ीमती पत्थर जो अमूमन सफेद होता है और कहीं–कहीं ज़र्दी और सुर्ख़ी माइल भी पाया जाता है।

बंदिष (स्त्री) नग के मस्नूई कोर, किनारे और पहल तैयार करने को इस्तिलाह में बंदिष कहते हैं। यह पहल नग के वस्ती नुक्ते से बनाने शुरू किये जाते हैं उतार–चढ़ाव की बनावट के ऐतबार से इस पहलुओं के हस्बेज़ेल इस्तिलाही नाम मषहूर हो गये हैं। **तिल (टेक, क़द)** नग की सतह का दरमियानी नुक़ता जो किसी नग में नोकदार और किसी में चपटा आँख के तिल के मुषाबा होता है। **तिलपच्ची (तिलकड़ी)** नगीने की सतह के मर्कज़ से मिलाकर बनाये हुये छोटे–छोटे पहेल। **घाट** नगीने की सतह के बनाये हुये दरमियानी पहेल जो कोर से ऊपर होते हैं। **दासा** नगीने के किनारे की सतह से मिलाकर बनाये सबसे बड़े पहेल। **रेख** नगीने के हर पहल की कोर। **माथा (बाड)** नगीने का पहलू यानी बगली रुख़ जो जड़ाई में आ जाता है। **~काटना, बनाना** सान पर घिसकर नगीने की सतह पर पहेल और दासे बनाना।

बैरूस/बैरूसी (पु0) माँद रंग का जौहर या पत्थर जो किसी नुक्स की वजह अपने असली रंग पर न आया हो और कान के अंदर कच्चा रह गया हो, ख़ास तौर से नाक़िस फिरोज़े के लिये यह इस्तिलाह मुरव्वज है इस्तिलाह में फिरोज़े की मादैन और कचिया वैरूसी भी कहलाता है। कान से ताज़ा निकला हुआ पत्थर या जौहर।

बेष बरन हीरा (पु0) ज़र्दी माइल रंग का हीरा, इसकी खासियत में यक़ार्न की बीमारी पैदा करना बयान किया जाता है।

बैज़वी मर्वारीद (पु0) अंडे की वज़अ़ का लम्बोतरा मोती। ६

पाड (स्त्री) नगीना गर के काम करने का ठीया।

पान घाट नगीना (पु0) पान की शक्ल लम्बोत्रे घाट (पहेल) का तैयार किया हुआ नगीना।

पिटौनिया (पु0) नगीने बनाने का गुलाबी चित्तीदार सब्ज़ रंग क़ीमती पत्थर।

पट बेज्ना (पु0) बिल्लोर की क़िस्म का दो रंगा पत्थर, जिसकी ऊपर की सतह सफेद और नीचे की सुर्ख़ी माइल होती है। इस पत्थर का बनाया हुआ नग इस्तिलाह में पट बेज्ना कहलाता है।

पर्ब (पु0) चपटा नगीना जिसका ऊपर का रुख़ पहलदार और नीचे का हमवार बनाया गया हो यह अमूमन पतली किस्म के क़ीमती पत्थर या जवाहर का बनाया जाता है।

पुख़राज (पु0) ज़र्द रंग का याकूत इसमें बाज़ का रंग गहरा और बाज़ का हल्का होता है हल्के ज़र्द रंग का क़ीमती और उमदा होता है। बसंत यानी मौसमे बहार में पहनना पसंद किया जाता है और इसी वजह से बसंत रुत जवाहर कहलाता है।

पन्ना (पु0) देखें ज़ुमुर्रुद।

पोल्की (स्त्री) देखें पर्ब।

पोथ (स्त्री) काँच के बने हुये मुख़तलिफ रंग के बारीक मोती, दकन की बाज कौमों में औरतों का इस क़िस्म के सियाह मोतियों की लड़ियाँ गले में पहनना सुहागन होने की अलामत समझा जाता है। **~पेचना** सान के ऊपर घिसकर नगीने की सतह में पहेल काटना।

ताम्ड़ा/तावड़ा (पु0) दर्जा–ए–सोम का गहरा स्याही माइल ताँबे के रंग का याकूत जिसमें चमक और आबदारी बहुत कम हो। **देखें** इर्ग़िवानी याकूत।

तुर्माली (स्त्री) दूसरे जर्दे का हीरा जो अव्वल दर्जे से चमक में कम और सख़्ती में नर्म हो उसको उर्फ़े आम में हीरे की मादैन कहते हैं।

तिल (पु0) टेक, कद **देखें** बंदिष।

तिल बच्ची (स्त्री) तिल कड़ी। **देखें** बंदिष।

तिल कड़ी (स्त्री) देखें बांदिष।

तमरी लाल (पु0) स्याही माइल सुर्ख़ ख़जूर की रंगत का लाल।

तीनी मोती (पु0) ज़र्दी माइल सफेद रंग मोती सिरों पर से किसी क़दर दबा हुआ होता है।

टेक (स्त्री) तिल, क़द। **देखें** बंदिषा।

जामू/जमू (पु0) नगीने बनाने के लायक़ पत्थर की एक क़िस्म जिसकी सतह पर अब्र की वज़अ़ के धब्बे या धारियाँ होती हैं।

जिगर गों अ़क़ीक़ (पु0) देखें अ़क़ीक़।

जंदरा (पु0) नगीने गर की सान का अड्डा।

जौहर/जवाहर (पु0) बिल्लूर की क़िस्म की निहायत बेषक़ीमती और नायाब जमादात इसकी चार हस्बे ज़ैल किस्में बहुत मषहूर है। **1 लाल 2 इल्मास (हीरा) 3 याकूत (मानक) 4 ज़ुमुर्रुद (पन्ना)**

जौहरी (पु0) जवाहिरात का परखय्या और ताजिर।

जेबी (स्त्री) सान के जंदरे की बैठक। **देखें** सान।

चापड़ी (पु0) देखें पर्ब।

चुन्नी (स्त्री) गहरे सुर्ख़ रंग का मसूर की शक्ल का याकूत। कान से इसी शक्ल का निकलता है और बड़े से बड़ा दुअन्नी के बराबर होता है।

चौमला (पु0) सान की सतह के खुर्दुरेपन को साफ करने का औज़ार।

चौसी (स्त्री) हल्के रंग का नई कान से निकला हुआ ज़ुमुर्रुद। इसको इस्तिलाह में ज़ुमुर्रुद की मादैन कहते हैं।

क्षत्रिय बर्न हीरा (पु0) नैल्गूँ आबी रंग का हीरा अच्छी क़िस्म में शुमार होता और ज़्यादा पसंद किया जाता है।

छीप (स्त्री) नगीने तराषने की सान के चाक के ऊपर की छावन जो सान पर उड़ने वाली नगीने की किर्चों को इधर–उधर फैलने से रोंके। **देखें** सान।

ह़वेला (पु0) नगीने का कच्चा डोल जो तैयारी के काम यानी पहेल बनाने से क़ब्ल बनाया जाये।

दासा (पु0) देखें बंदिष।

दाना सुलेमानी (पु0) एक क़िस्म का बिल्लूरी पत्थर जो दरिया ए नर्मदा की वादी में निकलता है।

दाना फ़रंग (स्त्री) नगीने बनाने का एक ख़ास किस्म का कीमती पत्थर जो फौलाद पर घिसने से सोने, चाँदी या ताँबे

का कस देता है। सोने के कस का पत्थर बहुत क़ीमती और अव्वल दर्जे का समझा जाता है चाँदी के कस का दूसरे दर्जे और ताँबे के कस का तीसरे दर्जे का कहलाता है सोने के कस का पत्थर बहुत नायाब होता है। दर्दे गुर्दे का मरीज़ इसके नग की अंगूठी पहन ले तो दर्द का दौरा नहीं होता अगर दर्द की हालत में पहना जाये तो दर्द को जज़्ब कर लेता है अगर दर्द षिद्दत का हो तो नगीना फट जाता है।

दुद्दी (स्त्री) संगे बासी का सफूफ जो नगीने की घिसाई में बतौर लाग इस्तेमाल किया जाता है। इसकी वजह से सान पर नगीने की रगड़ से खराष नहीं पड़ती।

दराब (पु0) मख़रूती शक्ल से मिलता–जुलता बना नगीना इसको बाज़ कारीगर सरू भी कहते हैं।

दुर्रे ग़ल्ताँ (पु0) मटर के दाने के मानिंद बिल्कुल गोल मोती।

दुर्दी याकूत (पु0) याकूत की एक क़िस्म जिसकी सुर्ख़ी में ज़र्दी की झलक हो।

दुर्दी मर्वारीद (पु0) नारंजी रंग की झलक का मोती।

दुर्रे नजफ/मूये नजफ (पु0) नगीने बनाने का बाल जैसी बारीक धारियाँ रखने वाला बिल्लूर की क़िस्म का मलगुचा पत्थर ईरान इराक वगैरा में पाया जाता है।

दुर्रे यतीम (स्त्री) एक चरन, वह मोती जो सीप के अंदर एक ही बने यह अमूमन बड़ा और चार मासे तक वज़नी होता है।

दुला (पु0) चष्मदार नीम रंग अक़ीक।

दो चष्मा (पु0) आँख की क़िस्म का कुदर्ती नगीना जो आँख के ढेले के रंग से मुषाबहत रखता है।

दो नोका (पु0) गेहूँ या जौ की वज़अ़ का बना हुआ नगीना।

धुनैला (पु0) धुँए की रंगत का कुदर्ती नगीना रौषनी में इसकी सतह पर अब्र के से निषान चमकते मालूम होते हैं।

ढेरी (स्त्री) सफेद चित्तीदार स्याह रंग क़ीमती पत्थर इसके नग अमूमन और मुहरें खुसूसन बनाई जाती है।

राँगा सान (स्त्री) पन्ना, जबरजद वगैरा के नगों को जिला देने की रांग और दूसरी किसी नर्म धात को मिलाकर बनाई हुई सान। **देखें** सान।

रतन (पु0) देखें जौहर और नग।

रिजाज (पु0) अद्ना दर्जे का नगीना बनाने का संगेमरमर की क़िस्म का मामूली और कम क़ीमत पत्थर, इसमे बाज़ सब्ज़ रंग भी होता है इसकी एक दूसरी क़िस्म जो ज़्यादा सख़्त और भारी होती है **सिमाक़** कहलाती है।

रस राड़ी (स्त्री) नगीनों पर जिला करने की सान।

रसासी (पु0) क़ौसो कुज़ह (धनक) के रंगतों की झलक मारता हुआ मोती।

रोरी (स्त्री) देखें लहसनिया।

रुम्मानी मर्वारीद (पु0) सुर्ख, ज़र्द और स्याह रंगों की झलक का मोती।

रुम्मानी याकूत (पु0) अनार के दाने के मानिंद आबदार और रौषन रंग याकूत रंगत की चमक और आबदारी की वजह से दर्जा ए अव्वल में शुमार किया जाता है।

रेहानी ज़ुमुर्रुद (पु0) बर्गे रेहान के मानिंद स्याही माइल सब्ज़ रंग ज़ुमुर्रुद।

रीख़ (स्त्री) देखें बंदिष।

ज़ाग़ी इल्मास (पु0) वह हीरा जिसके रंग में स्याही चमके, बाज लोग स्याह हीरा कहते हैं।

ज़बर्जद (पु0) धानी रंग का क़ीमती पत्थर जिसके नगीने और शम्से बनाये जाते हैं।

जरगों फ़ीरोज़ा (पु0) ज़र्द नुक़्तेदार फ़ीरोज़ा, बाज़ नगीनागर ज़बर्जद और फ़ीरोज़े को एक ही क़िस्म बताते हैं लेकिन ज़बर्जद अलाहिदा क़िस्म का है। उसकी काने खुराजाँ, नीषापूर, ग़ज़नी, तूस और तिब्बत में पायी जाती है सब से बेहतर खराँसा और नीषापूर का होता है सफ़ेद रंग और ज़रगों सब से बुरी और मनहूस क़िस्म समझी जाती है फ़ीरोज़े का रंग तेज़ बू और गर्म रौग़न में ज़ायल हो जाता है।

ज़ुमुर्रुद (पु0) दरख़्षाँ सब्ज़ रंग जौहर, जवाहर में चौथी क़िस्म है लाल, इल्मास और याकूत के बाद इसका दर्जा है। हीरे की तरह बेषक़ीमती होता है हिन्दी में पन्ना कहते हैं जितना गहरे रंग का हो उतना ही अच्छा समझा जाता है पुरानी कान का गहरा सब्ज़ और नई कान का सफ़ेदी माइल सब्ज़ होता है। इसके ज़ेवर बरसात के मौसम में बहुत खुषनुमा मालूम होते हैं इसीलिये इसको बरखारुत जौहर कहते हैं। इस जौहर में बाज़ तबई ख़्वास होते हैं मसलन मिर्गी के मरीज़ के लिये मुफ़ीद होता है, साँप इसको देखकर अंधा हो जाता है। ऐबदार ज़ुमुर्रुद यानी जिसकी रंगत में जाला दिखाई दे बहुत मनहूस समझा जाता है।

ज़ंगारी ज़ुमुर्रुद (पु0) स्याही माइल सब्ज़ चुक़ंदर के पत्ते के मुषाबा रंगत का ज़ुमुर्रुद।

ज़ेहर मोहरा (पु0) सुर्ख़ी माइल ज़र्द या सब्ज़ रंग का क़ीमती पत्थर।

ज़ैती इल्मास (पु0) वह हीरा जिसकी रंगत में ज़र्दी झलके।

सान (स्त्री) नग घिसने या तराषने का कुरंड और लाग के मुरक्कब, काँसी या **राँग** का बनाया हुआ चाक (चकला) का **तिसिया, सान, माँक नीलम** और सख़्त क़िस्म के पत्थर का नग बनाने के काम आती है राँगा सान, पन्ना, ज़बर्जद और लाल्ड़ी के नगों को जिला देने को इस्तेमाल की जाती है।

सुदाई सान (स्त्री) सच्चे यानी कीमती पत्थर या जवाहर के नगीनों के ढोल बनाने की सान जो लाग और चीनी मिट्टी के मुरक्कब से तैयार की जाती है।

सुदाई करना (क्रिया) सान पर घिसकर ढोल बनाना पहेल और घाट तराषना।

सरु (पु0) देखें दराब।

सल्क़ी ज़ुमुर्रुद (पु0) देखें रंगारी ज़ुमुर्रुद।

सुलेमानी फ़ीरोज़ा (पु0) सब्ज़ी माइल रंगत का फ़ीरोज़ा। वह फीरोज़ा जिसकी रंगत में सब्ज़ी ग़ालिब हो।

सूद्र वर्न (पु0) देखें ज़ाग़ी इल्मास।

सीप (स्त्री) मोती का खोल जो सख़्ती और रंगत मे मोती के मुषाबा होता है इसलिये इसके भी मस्नूई मोती बनाये जाते हैं।

सीमाबी इल्मास (पु0) वह हीरा जिसकी चमक में चाँदी की सी झलक हो।

समाक़ (पु0) देखें रिजाज।

शल्ग़मी मर्वारीद (पु0) वह मोती जो एक तरफ से नुकीला या लम्बोतरा और दूसरी तरफ से ठेकदार हो।

शम्सा (पु0) बैज़वी शक्ल का लम्बोत्रा बनाया हुआ नगीना कंठे के लिये मुख़्तलिफ़ क़िस्म के क़ीमती पत्थर और जवाहर का तैयार किया जाता है।

गले में तुम्हारे बहुत ज़ेब देंगे।
सितारों के बनवाऊँ कंठे के शम्से।। (असद)

शीरफ़ाम मर्वारीद (पु0) दूध की रंगत का मोती।

सफाई का हाथ नगीने की जिलाकारी का आखिरी दौर यानी तैयारी का अमल (अक़्सर पेषेवरों की मुष्तरक इस्तिलाह) **फेरना** के साथ बोला जाता है।

अ़द्सी मर्वारीद (पु0) मसूर के दाल के छिल्के की रंगत का मोती, हिन्दी में काका बासी कहलाता है। दवाइयों से इसकी स्याही कम की जाती है। मसूर के दाने के शक्ल के मोती को भी अ़द्सी कहते हैं।

अक़ीक़ (पु0) एक क़िस्म का बेष क़ीमती सुर्ख रंग पत्थर। स्याह, ज़र्द, नीला और सफेद रंग भी होता है। यमन का बहुत मषहूर है नग बनाने और बच्चीकारी के काम आता है। सुर्ख़ और ज़र्दी माइल जो साफ और चमकदार हो बहुत पसंद किया जाता है। स्याही माइल सुर्ख रंगवाला जिगरगूँ अक़ीक़ कहलाता है।

ऐनुलहर (पु0) देखें लहसनिया।

ग़ोरी (पु0) धुनैले की क़िस्म का दूधिया रंग का धब्बेदार नग बनाने का क़ीमती पत्थर।

फ़ीरोज़ा (पु0) सफेदी माइल आसमान गूँ कीमती पत्थर। नग बनाने के काम आता है। मुषहिद और ईरान की कानों में उमदा क़िस्म का पाया जाता है।

क़द (पु0) देखें बंदिष।

कुत़बी (पु0) देखें इमरेल।

काका बासी (पु0) देखें अद्सी मर्वारीद।

काँड़ी (स्त्री) देखें अंकोरा।

काँसला (पु0) हल्के धानी रंग का ज़बर्जद। कारीगरों की इस्तिलाह में ज़बर्जद की मादैन कहलाता है।

काँसिया सान (स्त्री) देखें सान।

किताबी नगीना (पु0) देखें इम्रेल।

कटीला (पु0) आस्मानगूँ फ़ीरोज़ा।

कचिया बैरूसी (पु0) देखें बैरुसी।

कुह्ली याकूत (पु0) स्याह रंग का याकूत जो बहुत मिलता है।

कुर्रास़ी जुमुर्रुद (पु0) लहसन या प्याज के पत्ते की रंगत का जुमुर्रुद।

कुरंड (पु0) भुरभुरे पत्थर और लाग के मुरक्कब से तैयार किया हुआ सान बनाने का मसाला, जो एक क़िस्म का मसनूई पत्थर बन जाता है।

कस्वा (पु0) एक नगीने का नाम, जो हिन्दुओं में विषनू देवता से मंसूब किया जाता है।

कमरदार मर्वारीद (पु0) देखें आष्ट।

कँवल (पु0) मख़रूती वज़अ का पहलदार बनाया हुआ नगीना।

कौकब (पु0) निहायत शफ्फ़ाक रंग और मुनव्वर याकूत जो दहकते हुये कोयले के मानिन्द अंधेरे में चमके।

कोहिनूर (पु0) एक बेषबहा और नादिरूल वजूद हीरे का नाम जो हिन्दुस्तान में शाहाने मुग़लिया के पास था और अब शाहे इंग्लिषतान के कब्ज़े में है, कहते हैं यह हीरा जगह बदलता रहता है।

कहरुबा (पु0) एक क़िस्म का सुर्खी माइल नीले रंग का क़ीमती पत्थर।

खरसान/खर्न (स्त्री) नगीने ढोलाने और उनकी मोटी घिसाई करने की कुरंड की बनी हुई सान।

खर्न (स्त्री) देखें कौकब।

गौहर (पु0) देखें जौहर।

गौ़हरे शब चिराग (पु0) देखें कौकब।

घाट (पु0) देखें बंदिष।

घोटा/घोंटा (पु0) सान की सतह को खुर्दरा बनाने का चोबी औज़ार, जब नगीनों की घिसाई से सान की सतह चिकनी हो जाती है तो इस औज़ार से रगड़कर उसको खुर्दुरा बनाते हैं।

घोंगा (पु0) कौड़ी की क़िस्म के मंके जो समंदरी कीड़े के ख़ोल होते है। छोटी किस्म के घोंगो से पहाड़ी और ख़ानाबदोष क़ौमों की औरतें जेवर बनाती हैं।

लाजवर्दी (पु0) फीरोज़े की किस्म का मगर उससे ज्यादा उमदा मोर की गर्दन के

मुषाबा जौहरदार पत्थर। सुनहरी नुक़्तों का ज़्यादा कीमती होता है और बहुत पसंद किया जाता है, काबुल और बद्ख़षाँ की कानों में पाया जाता है।

लालड़ी (स्त्री) याकूत की मादैन, याकूत से रंगत मे हल्की और सख़्ती में कम होती है। लालड़ी से उतरता हुआ जौहर कारीगरों की इस्तिलाह में नर्म कहलाता है।

लाल/लअ़ल (पु0) जौहर की क़िस्म में अव्वल क़िस्म का और सबसे ज़्यादा बेषक़ीमती जौहर इसका असल रंग चमकदार सुर्ख़ आत्षी होता है ऐसा मुनव्वर की जब अंधेरे में हो तो उसके परतों में सुई का नाका दिखाई दे। बदख़षाँ और क़त्लान में लाल की एक कान है जो प्याज़ के नाम से मौसूम है वहाँ का लाल प्याज़ी कहलाता है।

लहसनिया (पु0) ज़र्दी माइल नीम पुख़्ता बिल्लूर या कच्चा हीरा। फ़ारसी में गुर्बा चष्म इल्मास और अरबी में ऐनुल्हर कहते हैं इसको आग में नहीं डाला जाता जैसा की बाज़ दूसरे जौहरदार पत्थर रंग की तब्दीली के लिये आग में तपा लिये जाते हैं।

माथा (पु0) देखें बंदिष।

मानिक (पु0) देखें लालड़ी।

मावा (पु0) नगीनों की घिसाई का हीरे की कनी से तैयार किया हुआ मासाल।

मथेला (पु0) मुहद्दब, साफ चिकनी और माथे की वज़अ़ पर ऊपर को उभरी सतह का नगीना।

मर्जान/मर्गान (पु0) देखें मूंगा।

मर्वारीद (पु0) देखें मोती।

मुलसान (स्त्री) जौहर दार पत्थर के नगीने ढोलाने की चीनी मिट्टी और लाग के मुरक्कब से तैयार की हुई सान। **देखें** सुदाई सान।

मन (पु0) देखें जौहर।

मंझना (पु0) देखें घोटा।

मंका (पु0) संस्कृत में हर क़िस्म के छोटे घोंगो को कहते हैं।

मुनी (स्त्री) देखें नीलम।

मोती (पु0) बाज़ समंदरों में सीप के अंदर पैदा होता है। इसका बड़े से बड़ा दाना कबूतर के अंडे के बराबर और छोटे से छोटा ख़षख़ाष के दाने के बराबर होता है बड़े दाने नायाब होते हैं बहुत कम तादाद में निकलते हैं। मोती जवाहरात की चौथी क़िस्म में शुमार किया जाता है और सवा क़िस्म का पाया गया है। इसका ज़ेवर गर्मी के मौसम में पहनना पसंद किया जाता है। इसलिये इस को गर्मारुत जौहर कहते हैं।

मूँगा (पु0) मोती की तरह मूंगा भी समंदर से निकाला जाता है यह एक बे बर्ग शाख़ दर शाख़ दरख़्त की तरह समंदर के अंदर अपने पेट के लुआबदार माद्दे से बनाता है यह माद्दा सुर्ख, सफेद, ज़र्द और स्याह रंग का बंलोचन या रूमी मुस्तगी के माद्दे से मिलता–जुलता है। सुर्ख़ रंग मूँगा बहुत पसंद किया जाता है। उसके दाने बनाकर हार और कंठे बनाते हैं। नग भी बनाये जाते हैं।

मुये नजफ़ (पु0) देखें दुर्रेनजफ़।

नज्जासी मर्वारीद (पु0) ज़ैतूनी रंगत की झलक का मोती।

नज्म (पु0) बिल्कुल सफेद बगैर किसी रंग की झलक का मोती।

नरम (पु0) देखें लालड़ी।

नग (पु0) फ़रसी लफ़्ज नगीन का उर्दू तलफ़्फुज सिंघार के लिये जवाहर और जवाहरदार पत्थरों से खुषनुमा और खूबसूरत तराषे हुये जवाहर रेज़े जो मुख़तलिफ क़िस्म के ज़ेवर बनाने और

सोने चाँदी के जेवरों में जड़ने के काम आते हैं।

है गुलषने खूबी वह परी और वह सुलेमान।
ख़ातम में न क्यों नग हो अक़ीक़े शजरी का।।
(नाज़िरब़)

नगीना (पु0) नग का इस्मे मुसग्गर। **देखें** नग।

सारी हैकल मेरे सरचोट है अब जी मे यह है।
कि बस इक डाल नगीनों की हो सारी हैकल।।
(रंगीन)

नगीना गर (पु0) नगीने बनाने वाला कारीगर। नगीनागिरी की सिन्अत बहुत क़दीम है और हिन्दुस्तान की यह सिन्अत बहुत मषहूर थी। जब से अमरीका और यूरोप के बिल्लूरी खुष वज़अ और खुषनुमा नक़ली नगीनों का चलन हुआ। क़ीमती नगीनों की माँग कम हुई है जिसकी वजह से नगीनागिरी के पेषे को बहुत नुक़सान पहुँचा और अब इस पेषे के कारीगर बराय नाम रह गये हैं। अवाम में जौहरदार पत्थर के नगीनों का चलन अभी कुछ बाकी है जो एक आने से पाँच रुपये तोले तक कीमती होते हैं।

नीलम (पु0) आसमानी रंग का याकूत, बवजह चमक और खुष रंगी दर्जा ए अव्वल के याकूत में शुमार होता है।

हलैलजी मर्वारीद (पु0) देखें बैज़वी मर्वारीद।

हीरा (पु0) सफेद दरख़षाँ जवाहर में दूसरे दर्जे का जवाहर मगर तमाम जवाहरात में सबसे ज़्यादा सख़्त होता है दूसरे जवाहर को काट देता है साये में आफताब की शुआओं की तरह इस की शुआयें ज़ाहिर होती है इसके नगीने हमेषा चाँदी में जड़े जाते हैं और इसका ज़ेवर चाँदनी रातों में पहनना पसंद किया जाता है। चूँकि हीरा हर मौसम में पहना जाता है। इसलिये इसको सदा रुत जौहर कहते हैं।

कहावत

आदमी आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर।

याक़ूत (पु0) जवाहरात में तीसरी क़िस्म का जौहर हीरे के बाद इसका दर्जा है। सुर्ख़, नीला, ज़र्द और सफेद रंग का होता है। कहीं–कहीं स्याह भी पाया गया है। सुर्ख़ रंगत का सबसे बेहतर समझा जाता है। इस जौहर का रंग आग से मुतग़य्युर नहीं होता मगर आग में सफेद मालूम होने लगता है आग से बाहर जल्द अपनी रंगत पर आ जाता है। बजुज़ हीरे के हर क़िस्म के जौहरदार पत्थर को पीस सकता है। इसका बना हुआ ज़ेवर जाड़े के मौसम में पहनना पसंद किया जाता है। इसलिये इसको सरमा रुत का जौहर कहते हैं।

यषअ़ब (पु0) काफूरी रंग का क़ीमती पत्थर मामूली नगीने बनाने और इमारत में लगाने के काम आता है।

2. पेषा बिधाई

इलमासी बर्मा (पु0) देखें हीरा कनी।

बिंद (पु0) देखें माषा।

बिंधाई (स्त्री) मोती या नगीने में सूराख करने का अ़मल।

बिंधेरा (पु0) मोतियों और नगों में सूराख बनाने वाला कारीगर। बिंधेरे के काम में न ज़्यादा फैलाव है और न कुछ ज़्यादा इस्तिलाहात मगर बिंधाई का काम सुधाई से ज़्यादा मुष्किल है सब जवाहर में मोती का बेंधना बहुत नाजुक काम है। मोती बेंधने में टूट जाये तो बेकार हो जाता है। इसलिये यह मसल मषहूर है कि बिंध गया तो मोती नहीं तो कंकर। मोतियों के बेंधने वाले बड़े सुबुक दस्त और मषक़ कारीगर होते थे मोतियों और नगीनों में सूराख़ करने के अलावा यह कारीगर बिल्लौर और चीनी के टूटे हुये क़ीमती ज़रूफ के टुकड़ों को बंद बाँधकर दुरुस्त

कर देते थे जिसको इस्तिलाह में माथे लगाना कहा जाता था। बिल्लूर और चीनी के बर्तनों की बढ़ी हुई सिनअत् ने इस काम को खत्म कर दिया और आला क़िस्म के तरह तरह के बर्मों के ईज़ाद ने बिंधेरे के पेषे को भी बिठा दिया। अब उसका नाम बराय नाम रह गया है। उसके काम की चीजों में चंद बर्मे एक पानी की लुटिया और एक तिपाई कुल कायनात है।

बेंधना (क्रिया) मोती और नगीनों में सूराख़ करना। बेंधना दरअसल भेदने का दूसरा तलफ़्फ़ुज़ है। हिन्दी में भेद सूराख़ को कहते हैं। जिसका मस्दर भेदना है जिससे यह दूसरा तलफ़्फ़ुज़ पैदा हो गया।

भीती (स्त्री) चमड़े या मोचने की शक्ल का औज़ार जिसमें नग या मोती को दबाकर सूराख़ किया जाता है।

तुकारी (स्त्री) पानी का ऐसा ज़र्फ जिसकी टोंटी से आधे आधे मिनट में एक एक बूँद पानी टपकता रहे। इस ज़र्फ़ को बिंधेरा अपनी काम की तिपाई पर इस तरह क़ायम करता है कि पानी की बूँद बर्मे पर टपककर उसके मुँह पर आ जाये ताकि वह बर्मे की रगड़ की गर्मी को ठंडा करे और होने वाले सूराख को धोता रहे।

साँस बंद करना (क्रिया) टूटे हुये ज़र्फ या नगीने के जोड़ की दर्ज़ को किसी किसी मसाले से बंद करके बे मालूम करना।

माशा (पु0) पीतल या चाँदी के ब़ारीक तार से टूटे हुये क़ीमती ज़रूफ़ या बड़े नगीनों के टुकड़ों की बाहम बंदिष इस्तिलाह मे माषा कहलाती है। **लगाना** कीमती ज़रूफ़ या बड़े टूटे हुये नगीनें के टुकड़ों को मिलाकर पीतल या चाँदी के बारीक तार से बंद बाँधना।

हीरा कनी (स्त्री) हीरे की कनी का बनाया हुआ बर्मा, सख़्त क़िस्म के जवाहर में सूराख़ करने के लिये फौलादी बर्मा काम नहीं देता। इसलिये हीरे की कनी का बर्मा बनाया जाता है। जो बहुत नाजुक और कीमती होता है। लेकिन सख़्त से सख़्त जवाहर में सूराख़ कर देता है।

3. पेषा जड़ाई व मीनाकारी

अल्गा (पु0) ज़ेवर में नगीने जड़ने के लिये जड़य्ये की तैयार की हुई कुंदन की बहुत पतली पट्टी। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

बाड (स्त्री) देखें दीवाल।

बूली (स्त्री) सोने वगैरा की चूड़ी या इसी किस्म के दूसरे ज़ेवरों में जाली का काम बनाने या नग का घर काटने की तार के मानिंद बहुत नाजुक आरी। अब यूरप से बहुत आला किस्म की फौलादी बनी हुई आने लगी है।

बैठक (स्त्री) ज़ेवर में बनाया हुआ नगीने का घर।

बेनी (स्त्री) किल्ला, **देखें** पाड़।

पाड़ (स्त्री) ज़ेवरों में बगैर कुंदन नगीने जड़ने को जड़य्ये या सादेकार का ठीया जो मिट्टी के कूँडे में लगाया हुआ एक चोबी खूँटा होता है जिसके सिरे पर एक छोटी आड़ी लक़ड़ी जिसको इस्तिलाह में मुसलमान कारीगर बेनी और हिन्दू कारीगर किल्ला कहते हैं जड़ी रहती है।

पकाई करना (क्रिया) कुंदन को नग की बैठक की बाड़ के किनारे किनारे जमाकर आहनी सलाई से मज़बूत करना।

पक्की जड़ाई (स्त्री) ज़ेवर में नगीने को कुंदन से जमाना इस्तिलाह में पक्की जड़ाई कहलाती है। इस जड़ाई से नगीने को बैठक में लाग के साथ जमा कर ऊपर किनारों पर कुंदन की कोर इस तरह बनाते हैं कि नगीना ज़ेवर के साथ एक जान हो जाता है।

जड़ाई (स्त्री) ज़ेवरों में नगीने जड़ने की सिन्अत।

जड़ती बूली (स्त्री) देखें बूली।

जड़य्या (पु0) मुरस्साकार, ज़ेवर में नगीने जड़ने वाला कारीगर।

जिया (स्त्री) फ़ारसी लफ़्ज़ ज़िह का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़। **देखें** दीवाल।

चिलक (स्त्री) जड़ाऊ ज़ेवर में दो या ज़्यादा नगों के दरमियान की ख़ाली जगह जो लाग भरकर नगों के दरमियान की लाग भरी हुई जगह पर कुंदन मंढ़ना या सोने का वरक़ जमाना।

दो आली (स्त्री) देखें जिया।

दो आली (स्त्री) दीवाल का दहक़ानी तलफ़्फ़ुज़। **देखें** दीवाल।

दीवाल (स्त्री) ज़ेवर में नग की बैठक का उठा हुआ किनारा जो नग के टिकाव के लिये बना होता है।

डाक/डक (पु0) परकाला चाँदी या ताँबे का खुष रंग रंगा हुआ पन्ना जो नग की असली रंगत को चमकाने के लिये जड़ाई में बतौर तह ज़मीन लगाने को तैयार किया जाये। कभी सफेद नगीने को रंगीन दिखाने के लिये डाक की तह ज़मीन लगाते हैं। इस अ़मल से नग के नीचे की लाग के रंग को छिपाना भी मक़सूद होता है।

डाँबा (पु0) नग को कुंदन से जड़ने की मुरस्साकार की आहनी सलाई जो हस्बे ज़ुरुरत छोटी बड़ी, मोटी और बारीक होती है।

रूब (पु0) नग के घर की बाड के दाँते जो कुंदन की पकड़ के लिये जड़य्या जड़ाई के वक्त आहनी सलाई से बना लेता है। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

सादेकार (पु0) मुसलमान सुन्हार या मुरस्साकार। अंग्रेज़ी तर्ज़ के खोटे सोने के नाज़ुक और भड़कीले जड़ाऊ जेवर बनाने में बहुत मष्षाक़ होता है। **देखें** पेषा ए सुनारी।

सुबक्का (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ सुब्की का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ जड़य्यों की इस्तिलाह में दो या दो से ज़्यादा नगीनों के दरमियान की खाली जगह को जिसमें अंदर की लाक दिखाई दे कहते हैं। चूँकि यह जगह बदनुमा मालूम होती है इसलिये इसको छिपाने के लिये इसके ऊपर कुंदन जमा देते हैं। **भरना** हिन्दी में चिलक कहते हैं। **प्रयोग** सुबक्का भरलों फिर जडाई करना। **देखें** चिलक।

सील जडक (स्त्री) पच्चीकारी नग को ज़ेवर में जड़ने का एक दूसरा तरीक़ा जिसमें नग के घर की बाड़ या ज़िह की कोर को नग के पहेल पर मोड़कर जडाई करते हैं। यह जड़ाई बहुत नाजुक होती है और खोटे सोने के ज़ेवर में की जाती है। इस जड़ाई को ज्यादा खूबसूरत और नाजुक बनाने के लिये नगीने की ज़िह की कोर को बारीक पत्तियों की शक्ल में काट लिया जाता है। इस क़िस्म की मुरस्साकारी के कारीगर उर्फे आम में सादेकार कहलाते हैं। जो गालिबन सुधकार का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है।

फ़ुल्तिष (स्त्री) कुंदन की जड़ाई को साफ और मुजल्ला करने का अमल। **करना** के साथ बोला जाता है।

काला मीना (पु0) स्याह धात जो मीनाकारी के लिये सीसे, चाँदी और ताँबे के मुरक्कब से तैयार की जाती है। इसतरह

की, दो हिस्से सीसा एक हिस्सा चाँदी और एक हिस्सा ताँबे को मिलाकर गला लिया जाता है।

काँटा (पु0) नगीने के बैठक के जोड़ पर टाँके का रवा जिसपर कुंदन नहीं जमता। इसलिये जड़य्यों की इस्तिलाह में उसको काँटा कहते हैं जो जड़ाई से पहले साफ कर लिया जाता है। **निकालना** के साथ बोला जाता है।

कचलौन (स्त्री) मीना या मीना बनाने का मसाला जो काँच में हस्बे ज़ुरूरत रंगत और एक क़िस्म की खार की लाग मिला कर तैयार किया जाता है।

किल्ला (पु0) देखें पाड़।

कुंदनकारी (पु0) ज़ेवर के नगीनों को कुंदन से जड़ने का अमल।

कंवल ज़िह (स्त्री) कंवल के फूल की शक्ल की बनी हुई नगीने की बैठक की ज़िह।

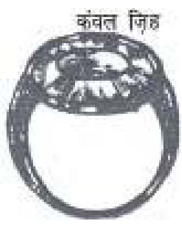

नगघर (पु0) देखें बैठक।

लौमा (पु0) कुंदन की कत्रन या कतरनें जो जड़ाई के काम के लिये पट्टी में हस्बे ज़ुरूरत छोटी बड़ी कतर ली जाये। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

लाखना/लाँखना (क्रिया) ज़ेवर में नगों की बैठक के अंदर नगों को सही बिठाने के लिये लाख भरना। जड़ाई करने के लिये ज़ेवर को लाक में जमाना।

मुरस्साकार (पु0) देखें जड़य्या और सादेकार।

मीना (पु0) एक क़िस्म की मस्नूई मुरस्साकारी का मसाला। **करना** सोने या चाँदी के ज़ेवर की सतह पर फूल पत्ती के निषान खोदकर उसके कचलौन यानी काँच से बना हुआ हस्बे ज़ुरूरत रंगीन मसाला गलाना जो पच्चीकारी की तरह नकषीं जग़ह मे जम जाता है जिससे ज़ेवर की सतह पर फूल पत्ते बने हुये मालूम होते है। इस अमल को इस्तिलाह में मीनाकारी करना कहते हैं। यह काम सादा ज़ेवर में भी किया जाता है और जड़ाऊ में भी। **देखें** कचलौन।

मीनाकार (पु0) ज़ेवर की सतह पर कचलौन यानी काँच के बने हुये मसाले से रंग बिरंग के फूल पत्ते और नक़्ष बनाने वाला कारीगर इस अ़मल को उर्फे आम में मीनाकारी या मीना करना कहते हैं।

मीनाकारी (स्त्री) मीना करने का अ़मल। **देखें** मीन और मीनाकार।

नग बिठाना (क्रिया) नग को उसके ख़ाने में सही करना, जमाना।

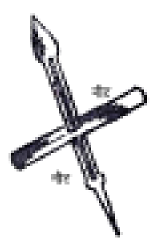

नीट (स्त्री) कुंदन करने की सलाई की चोबी डाट जो सलाई के सहारे रहे।

हुंडी (स्त्री) अंग्रेजी लफ़ज़ हैंडिल का गलत तलफ़्फ़ुज़, चोबी मूठ जिसके मुँह पर छोटी किस्म का जेवर जमाकर जड़ाई का काम किया जाता है।

4. पेषा ए पटवा गिरी (इलाक़ा बंदी)

बाषू बंद (पु0) तुर्की लफ़ज़ बाषी बमानी सरदार का इस्तिलाही तलफ्फुज़ जो सिर्फ देहली में पट्वों में उस आहनी आकडे के लिये बोला जाता है जो उनके काम करने के थूए या थूनी के सिरे पर लगा रहता है। जिसके सहारे उनका सारा काम होता है। **देखें** थूनी।

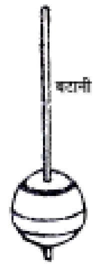

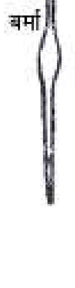

बटानी (स्त्री) रेषम के डोरे बटने का चोबी लट्टू।

बर्मा (पु0) ज़ेवर के दानों के सूराख़ साफ करने की आहनी सलाई या तकला।

बलाई (स्त्री) डोरे को दोहरा, चौहरा करके बटने का अमल।

बल्ती (स्त्री) डोरे बटने का आँकड़ेदार आहनी तकले की शय्ल का औज़ार जिसमें एक चोबी लट्टू मअ एक नली पड़ा रहता है।

बल्ना (क्रिया) रेषम या सूत के कई कई तारों को मिलाकर बट्ना इस्तिलाह में ज़ेवर में बंद या डोरे डालना। **प्रयोग** चम्पा कली और गुलूबंद पट्वे को बलने दिये हैं।

पट्वा (पु0) ज़ेवर में डोरे डालने वाला कारीगर। ज़ेवर के कई हिस्सों को डोरे में पिरोकर गले में लटकाने या कलाई पर बाँधने के लायक़ बना देने वाला कारीगर।

परैंडा (पु0) ज़ेवर के डोरे के सिरे पर का फुंदना। तुकमा, चुट्ले का सिरा।

पल्ला (पु0) ज़ेवर के डोरे के दोनों तरफ के बंदों में का लम्बा बंद। **देखें** डोरा।

पक्की हड़ (स्त्री) देखें हड़।

पौदा (पु0) ज़ेवर के डोरे के दोनों तरफ के बंदो में का छोटा बंद जो बाँधने में फंदा बनाया जाता है। **देखें** डोरा।

पेचवान (पु0) डोरे के लम्बे सिरों में थोड़े–थोड़े फ़ास्ले पर कलाबत्तू की लपेट जो बतौर लपेट जो बतौर गंडा बनाई जाये। **देखें** डोरा।

तिरकन/थिरकन (स्त्री) यह आहनी आकड़ा काम के साथ हरकत में रहता है और हस्बेज़ुरूरत उसका रुख़ फेर लिया जाता है। इसलिये ग़ालिबन तिरकन और थिरकन भी कहलाने लगा।

तुक्मा (पु0) डोरों की घुंडी फंसाने का तागे का बना हुआ हल्क़ा। **देखें** डोरा।

तोया (पु0) कच्चे सूत का टुकड़ा। अनबला

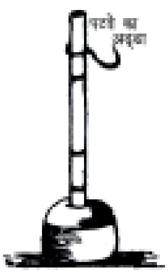

तागा। **प्रयोग** बंदिष करना और डोरा बल्ना तो दरकिनार उसे तो अभी तोया पकड़ना भी नहीं आता।

तह लपेट (स्त्री) देखें गाबा।

थोनू/थूमिया (पु0) थम या थूये का इस्तिलाही तलफ्फुज़, पट्वे का डोरे बल्ने का अड्डा या काम करने की पाड़ जो पत्थर की बैठक में जड़ी हुई एक छोटी सी चोबी लाट की शक्ल की होती है।

ठटई (स्त्री) देखें पेचवान।

झब्बा (पु0) सेजबंद का फुंदना जो बादले या इसी क़िस्म की किसी चीज़ का बनाया जाता है।

झूटा डोरा (पु0) खोटे कलाबत्तू की लपेट का डोरा।

चारफाँक डोरा (पु0) रेषम और कलाबत्तू की चौहरी बलाई का डोरा।

चरना (पु0) चमड़े का एक गिरह (क़रीब दो इंच मुरब्बअ टुकड़ा इसके चारों कोनों पर एक–एक सूराख़ होता है रेषम और कलाबत्तू की मिलवाँ डोरी बल्ने में बतौर औज़ार इस्तेमाल किया जाता है।

चुहुत (स्त्री) देखें सोआनी।

डोरा (पु0) ज़ेवर में डाला हुआ रेषमी या सूती तागे का बंद जिसकी वजह से ज़ेवर गले में लटकाया या कलाई में पहना जा सके। ज़ेवर की नौइय्यत के लिहाज़ से यह डोरे आला क़िस्म के खुषनुमा और कीमती बनाये जाते और मुख़्तलिफ नामों से मौसूम किया जाते हैं। **प्रयोग** बाज पट्वे निहायत उमदा डोरा डालते हैं। डालना, बाँधना, बलना के साथ बोला जाता है।

सादा डोरा (पु0) बगैर कलाबत्तू की लपेट का मामूली घटिया क़िस्म का डोरा।

सच्चा डोरा (पु0) वह डोरा जिसमें सच्चे कलाबत्तू का काम हो।

सोआनी/सुहानी (स्त्री) चुहुत। पट्वे के काम करने का बहुत बारीक नोक का मोच्ना।

इलाक़ा बंद (पु0) देखें पट्वा। इलाका अरबी बमानी किसी चीज़ के साथ लटकी या बंधी हुई कोई दूसरी चीज़ अज़क़िस्म डोरा या बन्द। तलवार लटकाने का बंद।

फुष सलाई (स्त्री) रेषम के फूँसड़े साफ करने की आहनी सलाई जिस पर रेषम के तार को लपेटकर घिस्सा दिया जाता है।

कैतून (पु0) देखें गात्रा।

कतियान (पु0) तीन से नौ तक तारों का बला हुआ डोरा।

कच्ची छड़ (स्त्री) मुंही हड़। **देखें** हड़ और मुड़ी हड।

किर्मक (पु0) हड़ का सुनहरी चमकदार बना हुआ लब जोड़ की बंदिष से पहले उसके मुँह से मिला हुआ खुषनुमाई के लिये बनाया जाता है।

किर्मकदार हड (स्त्री) वह हड जिसके मुंह पर एक खूबसूरत सुनहरी लब बना हुआ हो। **देखें** हड व डोरा।

कला बत्तूनी डोरा (पु0) रेषम के तार और कलाबत्तू का बना हुआ डोरा।

कम गिरी (स्त्री) हड के सिरे पर कला बत्तू की लपेट की बंदिष के लिये रेषमीं डोरे के दो तीन फेट जो बतौर फंदे के लगाये जाते हैं या कलाबत्तूनी गंडे के सिरों पर लगाये जाते हैं।

गाबा (पु0) तह लपेट। डोरे में किसी जगह उभरवाँ बंदिष दिखाने को कलाबत्तू की लपेट के नीचे कच्चे तागे की लपेट से जो शकल या ढोल बनाया जाता है। इसको इस्तिलाह में गाबा या तह लपेट कहते हैं जो अमूमन हड़ बनाने में की जाती है। **करना, भरना** के साथ बोला जाता है।

गात्रा (पु0) क़ैतून। कलाबत्तू और रेषम के तारों की मिलवाँ बटी हुई डोरी, गंगा जम्नी डोरी।

गंडा (पु0) देखें पेचवान।

गंगा जम्नी डोरा (पु0) सुनहरी, रूपहली कलाबत्तू और रेषम का तार बटकर तैयार किया हुआ डोरा। जो बहुत क़ीमती ज़ेवरों में डाला जाता है।

गूथना (क्रिया) जेवर के अलाहिदा अलाहिदा हिस्सों को एक डोरे में मुंसलिक करना।

घुंडी (स्त्री) डोरे के सिरे पर बना हुआ गोल मुँह जो तुकमे में अट्का दिया जाता है।

माकू (पु0) देखें मल्ली।

मल्ली (स्त्री) डोरे की बंदिषों को मिलकर हमवार करने और चिकनाने की चोबी पट्टी।

मुंडी हड (स्त्री) ऐसी हड जिसमें गाबा यानी उभार न हो और डोरे के हमसतह रहे।

नाकी (स्त्री) देखें तुकमा।

वर्चप नाकी (स्त्री) ऐसा तुकमा या घुंडी का हल्क़ा जिसपर कलाबत्तू की लपेट की हुई हो।

हड (स्त्री) डोरे में ज़ेवर के हिस्से से मिली हुई गाजर की शक्ल की बंदिष जिसका चौड़ा रुख़ जेवर से मिला हुआ बनाया जाता है। जो तदरीजी तौर पर ढलुवाँ होता हुआ डोरे की सतह से आ मिलता है। इसको डोरे का मुँह समझना चाहिये। हड के ऊपर कलाबत्तू को लपेटकर के खुषनुमा और चमकदार बनाते हैं। जितना कीमती ज़ेवर होता है उतनी ही खूबसूरत हड बनाई जाती है इस लिये हड़ डोरे की जान होती है। बाज़ कीमती और मुरस्सा ज़ेवरों की हड़ के मुँह के साथ खुषनुमा और बहुत चमकदार लब भी बनाते हैं जो घुंडी की शक्ल का होता है

और इस्तिलाह में किर्मक कहलाता है। ऐसी हड़ जिसमें गाबा न हो यानी गाजर की वज़अ़ की न हो। इस्तिलाह में कच्ची हड़ या मुंडी हड कहलाती है और इसके बर खिलाफ़ गाजरनुमा को पक्की हड़ कहते हैं। **देखें** डोरा।

हमपल्ला डोरा (पु0) वह डोरा जिसके दोनों बंद बराबर हों और एक घुंडी के ज़रिये उन दानों में बतौर कुफ्ल हो छोटा बड़ा किया जाये। **देखें** डोरा।

5 पेषा ए मनिहारी (लखेरा)

अड्डी (स्त्री) देखें तह खती।

ईंटा खोया (पु0) कच्ची ईंट का सफ़ूफ़ जो चूड़ी बनाने की लाख में मिलाने का तैयार किया जाता है।

अम्बर (स्त्री) देखें गिट्टी।

अंकोरा (पु0) भट्टी से पिघली हुई काँच निकालने का आहनी गज। 2 नगीनागरों का एक औज़ार। **देखें** पेषा नगीना गिरी।

अंकडा (पु0) देखें अंकोरा।

बाँक (स्त्री) लहरियेदार बनी हुई काँच की चूड़ी।

बताना (पु0) आहनी चूड़ी या हल्का जिसके सहारे काँच की चूड़ी हाथ पर से चढ़ाई जाती है। बताने को चूड़ी के पीछे लगाते हैं जो पंजे को दबाये रहता है क्योंकि पंजे की गिरफ्त ज़रा भी ढीली हो चूड़ी फौरन चटख़ जाये और कलाई तक एक भी न पहुँचे। पगड़ी या दसतार बनाने का साँचा, फर्मा या क़ालिब। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

बत्ती (स्त्री) लाख का डंडा जिसके मुँह को आग पर गर्माकर चूड़ी की सैल तैयार करते हैं।

बिधाना/बिंधरिया (पु0) थापी की शक्ल का चूड़ी बनाने का औज़ार जिससे लाख की चूड़ी को चपटा करते और बढ़ाते हैं।

बिधंरिया (पु0) देखें बिधाना।

पन्ना तलैच्ना (क्रिया) ताँबे या पीतल की पन्नी पर जो चूड़ियों में लगाने के काम आती है, लाखी रंग करना, पन्नी का गर्म तवे पर रखकर इसके ऊपर रंगीन लाख की पोट्ली फेरकर लाखी रंग चढ़ा देते है।

तान (स्त्री) आग पर लाख की चूड़ी या चूड़ियाँ गर्म करने की आँकड़ेदार मुंह की सलाख।

तुर्का (पु0) चूड़ियों पर जमाने के लिये पन्नी की हस्बे ज़ुरूरत पतली या चौड़ी कतरी हुई पट्टी।

तलैचना (क्रिया) पन्ना तलैचना।

तूफानी (स्त्री) लाख पकाने की मिट्टी की हंडिया।

तह ख़ती (स्त्री) मीना करने के लिये चूड़ी गरम करने का तह शाखी शक्ल का औज़ार। अड्डी तह ख़ती की तीनों शाखों का खुला हुआ रखने वाली आड़ जो उसकी तह पर जमा दी जाती है।

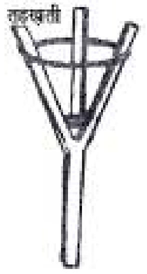

तई (स्त्री) हाथ में पहनते वक्त लाख की चूड़ियों को गर्म करने का औज़ार जिससे वह जरा नर्म होकर आसानी से खुल जाती है।

थला (पु0) जुट, मुख़्तलिफ़ वज़अ़ की कई चूड़ियों का एक जोड़ जो दोनों हाथों के लिये मौज़ूं हों।

चप्ड़ा (स्त्री) साफषुदा ख़ालिस लाख।

चितरना (क्रिया) लाख की चूड़ी पर चिताई करके मीनाकारी के तौर पर पन्नी या नग वगैरा जमाना।

चूड़ीहार (पु0) देखें मनिहार।

लखेरा (पु0) देखें मनिहार।

चूडाकार (पु0) देखें मनिहार।

चूडी (स्त्री) यह लफ़्ज़ मुख़तलिफ़ क़िस्म की गोल हल्क़ेनुमा चीजों के लिये बोला

जाता है। लेकिन यहाँ मुराद सिंगार की वह चीज़ है जिसको हिन्दुस्तानी औरतें आम तौर पर सुहाग की अलामत के लिये कलाइयों में पहनती हैं। इस ज़ुरूरत के लिये वह लाख, काँच, हाथी दाँत, सींग, अद्ना और आला क़िस्म की धात और जौहरदार पत्थर तक की बनाई जाती है। अगरचे अमीर औरतें सोने की चूड़ियाँ भी पहनती हैं। लेकिन लाख और बिल्लूर की चूड़ियाँ आम पसंद हैं। जवान औरतें इनको सुहाग की अलामत समझती हैं। इसलिये उनको अपने हाथ की चूड़ियाँ बहुत अज़ीज होती हैं और इसी जज़्बे ने मनिहारी के पेषे को किसी न किसी तरह बाकी रखा। **~उतारना** चूड़ियों को कलाई में से निकालना। **~चढ़ाना** चूड़ियों को कलाई में पहनाना। **~पहनना** चूड़ियाँ कलाइयों में डालना। **~बढ़ाना** चूंकि चूड़ी कि लिये लफ़्ज़ तोड़ना बदषगूनी का कलमा ख़याल किया जाता है इसके बजाये लफ़्ज़ बढ़ाना बोलते हैं जैसे चिराग बढ़ाना दस्तर ख्वान बढ़ाना। **~ठंडा करना** बाज़ लोग चूड़ी बढ़ाना के बजाये ठंडा करना कहते हैं। जैसे चिराग ठंडा करना।

चूड़ीहार (पु0) देखें चूड़ाकार, मनिहार।

छाप (पु0) लाख की चूड़ी पर फेरने का मुख़्तलिफ़ क़िस्म का बनाया हुआ लाखी रंग।

दस्तूआना (पु0) देखें बताना।

रेषमी चूड़ी (स्त्री) फ़ारसी लफ़ज़ रेस्मान बमानी डोरी का गलत तलफ़्फ़ुज़। कारीगरों की इस्तिलाह में डोरे की तरह बारीक चूड़ी को कहते हैं। जो आमतौर से काँच की होती है।

सैल (स्त्री) लाख़ की चूड़ी को बढ़ाने का चोबी बना हुआ फ़र्मा।

करछोल (पु0) भट्टी में काँच का मसाला डालने का कर्छे की क़िस्म का ज़रूफ़।

गिट्टी (स्त्री) सींग या हाथी दाँत की चौड़ी कोरदार चौड़ी जिसके घेर पर सोने की पट्टी चढ़ा दी जाती है। मारवाड़ी हिन्दू औरतों में इसका बहुत चलन है।

लाल बाव (पु0) देखें सैल।

लच्छा (पु0) रेषमी चूड़ियाँ जो तादाद में नौ या ग्यारह और एक हाथ के लिये काफी हो। **देखें** रेषमी चूड़ी।

लाख (स्त्री) एक क़िस्म का माद्दा। जो जंगली दरख़्तों पर एक क़िस्म के कीड़ों के जिस्म से बनता है और जिसको साफ करके बहुत से कामों में लाया जाता है इसका रंग भी बहुत आला क़िस्म का होता था लेकिन जदीद रंगों के मुक़ाबले में उसकी माँग नहीं रही। लाख की एक बड़ी मिक़दार चूड़ियाँ बनाने के काम आती है।

लखरी (स्त्री) लाख की बनाई हुई चूड़ी।

लखेरा (पु0) लाख साफ करने और उसको काम के लायक बनाने वाला कारीगर लाख की चीजें बनाने वाला। बाज़ मुक़ामात पर चूड़ियाँ बनाने वाले को कहते हैं।

मसीरिया (पु0) फर्मा, काँच की चूड़ी बनाने का साँचा।

मंढ़याना (क्रिया) लाख की चूड़ी पर रंग चढ़ाना और पन्ना चढ़ाना।

मनिहार (पु0) लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला कारीगर। बृजभाषा में काँच के बर्तन बनाने और उसका ब्योपार करने वाले को कहते हैं। हिन्दुस्तान के बाज़ सूबों मे अब तक उन्हीं मानों में बोला जाता है लेकिन देहली और नवाहे देहली में इस लफ़ज़ का मफ़हूम चूड़ियाँ बनाने वाले पेषेवर के लिये मख़सूस है।

मनिहारी (स्त्री) चूड़ियाँ बनाने और पहनाने वाली पेषेवर औरत।

नख़ (स्त्री) काँच की बारीक चूड़ी। **देखें** रेषमी चूड़ी।

नियार (पु0) चूड़ीहार की भट्टी का मुँह जिसमें पिघला हुआ काँच साफ होकर आता और निकाला जाता है।

तीसरी फसल मुतअल्लिक़ात सिंगार व सुहाग

1. पेषा ए कन विधाई

बचकन्ना (पु0) कान के सूराख़ के मुक़ाबिल तिकोनी शक्ल का छोटा सा पर्दा जिससे बवक्त ज़ुरूरत कान के सूराख़ को बंद कर लेते हैं। बाज़ लोग इस पर्दे के नोंक को छिदवा लेते हैं और उसमें बाली या बुंदा पहनते हैं।

बे (स्त्री) कान की लौ का सूराख़ जो बुंदा वगैरा पहनने के लिये छेदा गया हो। कान का सूराख़।

पिरोजन (स्त्री) कान छिदवाने की रस्म।

चकी/चुकी (पु0) कान या नाक छेदने के लिये सूराख़ करने की जगह पर छेदने से पहले सुई की नोंक से निषान लगाना ताकि सूराख़ गलत न हो। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

ढपनी (स्त्री) देखें बचकन्ना।

छेदना (क्रिया) कान में बलियाँ बुंदे पहनने को सूराख़ करना।

छेना (क्रिया) कान के सूराख़ का, ज़ेवर के वज़न से बड़ा हो जाना या फैल जाना, बाली या बुंदे की रगड़ से कटकर बड़ा हो जाना।

कर्न बेध (पु0) संस्कृत कर्ण वेधः बमानी कान छेदना। कान छिदाने के बाद की पहनने की बाली जो छेद के अच्छा होने तक पहनी जाती है।

कनबिधा/कन बेधा (पु0) ज़ेवर पहनने की ज़ुरूरत के लिये कान और नाक में सूराख़ करने वाला पेषेवर।

कन छेदन (स्त्री) कान और नाक छिद्वाने की रस्म जो बतौर तक़रीब की जाये।

कोचिया (स्त्री) पूरब में लौ के लिये कोचिया बोला जाता है। **देखें** लौ।

लौ (स्त्री) कान का नीचे की तरफ का लटका हुआ किनारा जिसमें सूराख़ करके पुंदा पहनने का रवाज़ है।

लौक (स्त्री) देखें लौ।

लौलकी (स्त्री) लौ का इस्मेमुसग्ग़र है। **देखें** लौ।

मुर्की (स्त्री) देखें लौ।

मेंड़ (स्त्री) कान का लौ से ऊपर का किनारा या कोर जिसमें बालियाँ पहनने के लिये दो या तीन सुराख़ कर दिये जाते हैं।

नर्मा (पु0) फ़ारसी में लौ को कहते हैं। **देखें** लौ।

2 पेषा आइनासाज़ी

हिन्दुस्तान में आईनासाज़ी की सिन्अत मामूली हालत में थी। इस पेषे में ज़्यादातर काम शीषों पर कलई करके आइने बनाना होता था यह मुख़्तसर काम भी विलायती माल की आमद और कसरत में तक़रीबन खत्म हो गया। अब यह पेषा और इसकी गिनती की चंद इस्तिलाहात बराय नाम रह गई है।

आईना/आइना (पु0) (हि0) आर्सी, दर्पण (त0) पाईना (अ) मिरात। शक्लो सूरत और ज़ेबो ज़ीनत देखने का क़लईदार शीषा। **दिखाना** हिन्दुओं में ख़ास त्यौहारों के मौके पर नाई का बतौर नेक शगुन अपने जजमानों के चेहरे के सामने आईना रखना या करना। रिष्तेदारों का अपने अज़ीज़ की पीठ को, जबकि वह सफर को जा रहा हो, आइना बताना, यह रस्म

भी हिन्दू औरतों में बतौर नेक फाल की जाती है। ज़दीद तहज़ीब के असर से यह रस्म अब ख़त्म हो रही है।

आइनादार (पु0) आईना दिखाने वाला या सिंगार का जुरूरी सामान रखने वाला मुलाज़िम।

तहरीर (स्त्री) आईने की क़लई के नुक़्स की अलामत जो उसकी जिला में धारियों की माँद दिखाई दे। **पड़ना, डालना** के साथ बोला जाता है।

झार्यीं (स्त्री) आईने की सफाई या जिला में बख़ारात की अलामत जो उसके धुंधलेपन का बाइस हो। आइने की चमक की परछाईं जो सूरज की किरन पड़ने से पैदा हो। **पड़ना, डालना** के साथ बोला जाता है।

हलब्बी आईना (पु0) दबीज़ और ज़्यादा शफ़्फ़ाफ़ शीषे का बना हुआ आईना। किसी जमाने में शहर हलब उसकी सिन्अ़त के लिये मषहूर था जहाँ से वह दूर–दूर मुमालिक में भेजा जाता था। इसमें यह खूबी होती थी कि हर चीज़ अपनी असली हालत में दिखाई देती थी और यही वस्फ़ वजहे शुहरत हुआ। क़दीम घरानों में अब तक इस क़िस्म के आइने को हलब्बी आइने के नाम से मौसूम किया जाता है ख्वाह वह कहीं का बना हुआ हो।

दर्पन (पु0) देखें आईना।

सुदाई (स्त्री) शीषे को आईना बनाने के लिये मुजल्ला व मुसफ्फ़ा करने और किनारे बनाने का अमल। **करना** के साथ बोला जाता है।

सुनषीषा (पु0) कच्चा या बगैर जिला का शीषा जिसमें आर पार न दिखाई दे और जो आईना बनाने के काम न आये। अब इस क़िस्म के मस्नूई शीषे बहुत आला क़िस्म के बनाये जाते हैं।

क़लई (स्त्री) आईना बनाने के लिये शीषे की सतह पर कीमियाबी तरीक़े से पारा चढ़ाने का अमल। **करना** के साथ बोला जाता है।

किलाई (स्त्री) शीषे की मंझाई जो क़लई करने के लिये एक क़िस्म के मसाले से की जाये। **करना** के साथ बोला जाता है।

मोर्चा (पु0) आइने की क़लई या सफाई में जंग का निषान। **लगना** के साथ बोला जाता है।

नमष (पु0) एक क़िस्म का मलाई की मानिंद नर्म और चिकना मसाला जिससे शीषे की सतह को साफ़ और क़लई पकड़ने के लायक़ बताया जाता है।

निमोरी (स्त्री) देखें नमष।

3 पेषा कंघीसाज़ी

अंगुषताना (पु0) हाथ के अंगूठे का चमड़े का गिलाफ जो कंघीसाज़ काम के वक़्त अंगूठे पर हिफ़ाज़त के लिये चढ़ा लेते हैं।

बंसते की कंघी वह कंघी जिसका पेटा यानी बीच का हिस्सा तेल भरने को अंदर से खोक्ला या कोठीदार बनाया गया हो। इसमें दाँतों के रुख़ सूराख़ कर देते हैं जिनमें से तेल दाँतों में फैलकर बालों की जड़ों में पहुँचता है।

बैन (स्त्री) कंघी के दाँते काटने की पतली और चौड़ी आरी जिसकी कोर पर बारीक दाँते होते हैं। **खत्ती** कंघी के दाँतों की लम्बान के बराबर बैन की बाड़ पर दोनों तरफ लगी हुई चोबी पट्टियाँ जो आरी की काट को दाँतों की हद से आगे नहीं बढ़ने देती और बतौर रोक काम देती है। मुसलमान कारीगर ज़ामिन कहते हैं।

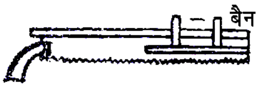

पेटा (पु0) कंघी के दोनों तरफ के दाँतों के दरमियान हदे फ़ासिल। **छोड़ना, रखना** के साथ बोला जाता है। **देखें** कंघी।

दाँता/दाँते (पु0) कंघी के पहलुओं पर के पतले और नुकीले कटाव। **बनाना, लगाना, खोलना** के साथ बोला जाता है। **फटना** कंघी के दाँत का किसी खराबी के वजह से बीच में से तड़ख़ जाना।

झीरा (पु0) कंघी के दाँतों के दरमियान की झिरी। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

चकड़ी (स्त्री) एक ख़ास क़िस्म के दरख़्त की लकड़ी जिसकी कंघी पानी में खराब नहीं होती और इसलिये गुस्लखाने की जुरूरत कि लिये बतौर ख़ास बनाई जाती है।

हम्मामी कंघी (स्त्री) मामूल से किसी क़दर ज़्यादा खुले हुये दाँतों की कंघी जो नहाने में बाल सुलझाने के लिये इस्तेमाल की जाती है।

साफ़ी (स्त्री) कंघी की दाँते काटने से पहले तैयार की हुई सूरत या वज़अ़ जिसको बाज़ कारीगर इस्तिलाह में ढोल भी कहते हैं।

ज़ामिन (पु0) देखें खत्ती।

कंघा (पु0) कंघी का इस्मेमुकब्बर। कंघा ख़ासतौर से एक रूखा, किसी क़दर खुले दाँतों का मगर कंघी की तरह छोटा बड़ा और मुख़तलिफ़ वज़अ का बनाया जाता है।

कंघी (स्त्री) बालों को सुलझाने और साफ़ करने की हाथ की गिरफ़्त में आने लायक दोरुखी दाँतेदार बनाई हुई चीज़ जो मुख़्तलिफ़ वज़अ़ की छोटी बड़ी सींग, हाथी दाँत और बाज़ धातों की बनाई जाती है। अहले यूरप ने रबर की ईजाद की है जो बहुत मक़बूल हो गयी है।

कंघी साज़ (पु0) कंघियाँ बनाने वाला कारीगर।

कोठीदार कंघी (स्त्री) देखें बस्ते की कंघी।

खत्ती (स्त्री) देखें बैन।

लब (पु0) कंघी के दाँतोंवाले सिरे की कोर जो दाँतों की नोकों से बनती है।

लिखवा (पु0) बालों से जुओं के अंडे के बच्चे निकालने का बारीक और लम्बे दाँतों का लम्बोतरा कंघा। **देखें** कंघी।

4. पेषा इस्लाह साज़ी

उस्तर (पु0) हजामत बनाने वाला पेषेवर। बालों की दुरुस्ती करने वाला।

उस्तरा (पु0) पाछना, बाल मूंडने का तेज़ धारदार आला। **~फेरना** बाल मूंडने के लिये उस्तरा चलाना। **प्रयोग** नाई ने सारे सर पर उस्तरा फेर दिया और एक बाल नहीं छोड़ा। बीमारी से चाँद के सारे बाल इस तरह निकल गये जैसे कोई उस्तरा फेरकर साफ कर दे। जुओं की कसरत की वज़ह से सारे सर पर उस्तरा फिरवा लिया। **चलाना** बाल मूंड़ने...... पेज 93 छूटा है। बालों की मुंडाई करना। **घुलाना** उस्तरे की धार को चमोटे या हाथ की हथेली पर हल्का हल्का घिस्सा लगाकर चिकनाना जिससे उसका रूखापन दूर हो कर तेज़ी आ जाये। **लगना** बाल मूंडने में उस्तरे की धार से खाल पर चर्क आना। खराष पड़ना इसको उस्तरा मारना भी कहते हैं। **प्रयोग** अनाड़ी नाई सर मूंडने में जगह–जगह उस्तरा मार देता है। **~लेना** अपने हाथ से बाल मूंडना। इस्तिलाहे आम मे सतर, शर्मगाह या नापाकी के बाल मूंडने को कहते हैं। **~मारना देखें** उस्तरा लगना।

इस्लाह (स्त्री) बालों को काट छाँट कर दुरुस्त और मौज़ूं करने का अमल इस्तिलाहे आम में इस्लाह कहलाता है।

करना, कराना, बनाना, बनवाना के साथ बोला जाता है।

इस्लाह साज़ (पु0) देखें हज्जाम।

बाल (पु0) केस, मू, लम्बे और किसी क़दर सख़्त रूंगटे जो इंसान के सर पर पैदाइषी और चेहरे और बाज़ दूसरे मुक़ाम पर एक मुक़र्रिरा वक्त पर निकलते हैं। **उतारना** सर के बालों को मूंड़कर या कतर कर कम करना। **प्रयोग** छटे रोज़ बच्चे के बाल उतरवाने की रस्म अदा की गयी। **उतरना देखें** बाल झड़ना। **~बनाना** बाल संवारना या कतर मूंडकर मौजूं और यकसाँ करना। **~झड़ना** कमज़ोरी या किसी बीमारी से बाल गिरना। **~चुनना** काले बालों में से इक्का दुक्का सफेद बाल निकालना। मोचने से पेषानी वगैरा के बाल नोचना। **~लेना** मुए ज़ेहार मूंडना, सतर के बाल मूंडना। **देखें** उस्तरा लेना। बढ़े हुये बाल काटकर बराबर करना। **~हल्के करना** घने और बढ़े हुये बालों को कतरकर कम करना।

बाल सफ़ा (पु0) देखें नूरा।

बग़लें लेना (क्रिया) बगलों के बाल मूंडना या साफ करना।

बफ़ा (स्त्री) सर की खाल के ऊपर की निहायत बारीक छिल्ली जो जाड़े में खुष्की के सबब सूखकर भूसी की तरह निकले। जिल्द की भूसी। **निकलना, निकालना** के साथ बोला जाता है।

भद्रा (पु0) चार अबरू का सफ़ाया। सर, दाढ़ी, मूंछ और भवों के बालों का बयक वक़्त सफाया। हिन्दुओं में बाप के मरने पर बेटा सोगी होने की अलामत के तौर पर यह सूरत अख़्तियार करता है। **करना, कराना** के साथ बोला जाता है।

भरवाँ दाढ़ी (स्त्री) अपने पूरे ख़त या अपनी कुल जगह में निकली हुई दाढ़ी। बरख़िलाफ चुग्गी दाढ़ी के जो सिर्फ ठोड़ी के गिर्द निकलती है और कुछ हिस्सा कनपटियों से कुछ नीचे तक होता है।

पान (पु0) तालू की जगह पर चाँद के बालों की पान की शक्ल जैसी मुंडाई जो गर्मी के मौसम में अक्सर लोग बनवा लेते हैं। इस सूरत को तालू बनाना और तालू खोलना भी कहा जाता है। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

पत्थरी (स्त्री) उस्तरे की धार तेज करने की करंड की बनी हुई सिल्ली। **~लगाना** उस्तरे की धार को पत्थरी पर घिसकर तेज़ करना।

पटास (पु0) देखें चमोटा।

पट्ठे (पु0) सर के बाल जो कान की लौ तक लम्बे रखे जातेहैं। **~रखना** लम्बे बालों को कतरवा कर कान की लौ तक लम्बे रखने इख़्तियार करना।

तालू बनाना (क्रिया) देखें पान।

तालू खोलना (क्रिया) देखें पान।

तिल चाँवले बाल (पु0) कच्चे पक्के यानी कुछ सफेद और कुछ काले मिले जुले बाल जो पक्की उम्र में हो जाते हैं।

थोकचा (पु0) सिर की खाल की भूसी या बालों का मैल साफ करने का सीप की शक्ल का औज़ार जो आमतौर से आम की गुठली के पोस्त का बनाया जाता है। **फेरना** के साथ बोला जाता है।

ठोड़ी बनाना (क्रिया) दाढ़ी मूंड़ना, ठोड़ी के बाल साफ़ करना। जो लोग गल मुच्छे रखते थे। उनके लिये लफ़्ज़ ठोड़ी बनाना बोला जाता था लेकिन रोज़मर्रा में दाढ़ी मूँड़ने के लिये बोला जाने लगा।

जिजमान (पु0) धोबी, हज्जाम, ख़ाकरोब और इसी क़बील के अद्ना चाकरों में मख़दूम सरदार, ठाकुर, आक़ा या मुरब्बी को मुख़ातिब करने का कलमा।

चार अब्रू (पु0) सर, मूंछ, दाढ़ी और भवों के बाल।

चार अब्रू का सफाया देखें भद्रा।

चाँद (स्त्री) खोप्री का बीच का हिस्सा। तालू के ऊपर का रुख़। **प्रयोग** बाज लोगों के बाल उड़कर चाँद साफ हो जाती है।

चुग्गी दाढ़ी (स्त्री) वह दाढ़ी जो सिर्फ ठोड़ी पर निकले और रुख़सारों पर बराय नाम बाल हो या बिल्कुल न हो। **देखें** भरवाँ दाढ़ी।

चमोटा (पु0) पटास, उस्तरे की धार साफ करने, घुलाने और चिकनाने को चमड़े का टुकड़ा या चौड़ी पट्टी। **~लगाना** चमोटे पर उस्तरे की धार साफ़ करना।

चंदला (पु0) गंजी खोप्ड़ी का आदमी। वह आदमी जिसके चाँद पर बाल न निकलें या पैदाइषी न हों।

चंदिया (स्त्री) चाँद का इस्मे मुसग्गर। **देखें** चाँद।

चेहरा बनाना (क्रिया) देखें खत बनाना।

छिद्री दाढ़ी (स्त्री) वह दाढ़ी जिसके बाल मामूल से कम और बाहम मिले हुये न निकले हों।

छिद्रे बाल (पु0) वह बाल जो घने यानी मिले हुये न निकलें हों।

हज्जाम (पु0) सर और दाढ़ी वगैरा के बालों की दुरुस्ती और इस्लाह करने वाला पेषेवर कारीगर। षिमाली हिन्द में आमतौर से नाई के नाम से पुकारा जाता है और जुनूबी हिन्द में उसके लिये हज्जाम का लफ़्ज़ ज़बानज़द आमोख़ास है। लफ़्ज़ नाई गैर मारूफ़ है। हज्जाम अरबी में पि्छने लगाने और फिस्द खोलने वाले को कहते हैं। षिमाली हिन्द में इसको जर्राह के नाम से मौसूम किया जाता है और नाई के लिये लफ़्ज़ हज्जाम ख़ास ख़ास लोग बोलते हैं और दिलदारी के लिये ख़लीफ़ा भी कह देते हैं जिसतरह ख़ाकरोब, मेहतर और सिक़्क़े को बहिष्ती।

हजामत (स्त्री) सर के बालों की हस्बेजुरूरत काट छाँट और दुरूस्ती। **~बनाना, बनवाना, करना** जुरूरत से ज्यादा बढ़े हुये या ग़ैर मौज़ूँ बालों को कतर कर या मूंडकर दुरुस्त करना।

ख़ष्ख़षी बाल/ख़ष्ख़ाषी बाल (पु0) जड़ के बराबर से कतरे हुये बाल या जड़ से कतरे हुये बाल। **करना, कतरना** के साथ बोला जाता है।

ख़ष्ख़षी दाढ़ी (स्त्री) ऐसी दाढ़ी जिसके बाल कतरकर जिल्द या ठोड़ी के बराबर कर दिये गये हों।

ख़त (पु0) दाढ़ी मूंछ के बालों की हदें। दाढ़ी के बालों के निकलने की जगह और अलामत मुराद दाढ़ी और मूंछ के बाल।

कम हुआ ख़त्ते शुआई से फ़रोगे आफ़ताब।
कुछ नहीं ग़म गर ख़ते रुखसारे जानाँ बढ़ गया।। (नासिख़)

बाज़ शौकीन रोज़ खत बनवाते हैं। **बनाना** चेहरा बनाना, इस्लाह करना, दाढ़ी के ना मौजूं बालों को कतरकर दुरुस्त करना। दाढ़ी मूंड़ना। **प्रयोग** एक हफ़्ते से ख़त नहीं बनवाया बहुत बढ़ गया है।

डाढ़ मुंडा (पु0) डाढ़ी मुंडा हुआ शख़्स या डाढ़ी मुंडाने वाला शख़्स।

रूआँ (पु0) देखें रोंगटा।

रूम (पु0) देखें रोंगटा।

रोंगटा (पु0) गुद्दी और जिस्म के दूसरे हिस्सों पर निकले हुये बारीक नर्म और बहुत छोटे बाल। **निकलना** के साथ बोला जाता है।

रेष बच्चा (पु0) ठोड़ी के ऊपर नीचे के होंठ पर के बाल जो बढ़कर ठोड़ी के बालों से मिल जाते हैं। बाज़ लोग इन बालों को दोनों तरफ से मुंडवाकर बीच में थोड़े से बतौर निषान रखते हैं।

सब्ज़ा (पु0) डाढ़ी, मूंछ की अलामात जो बारीक रूओं की शक्ल आग़ाज़े जवानी में चेहरे पर नमूदार हों। ख़त की इब्तिदाई निषान।

सर मुंडा (पु0) सर के बाल मुँडा हुआ शख़्स।

क़लम (स्त्री) कनपटियों के बाल यानी सर के बाल जो बढ़कर कनपटियों तक निकल आते हैं। **~बनाना, लेना** कनपटियों के बढ़े हुये बालों को काटकर छोटा करना।

कटोरी रखना (क्रिया) देखें मुंडन।

किस्बत/किस्वत (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ किस्वत बमानी पोषिष का गलत तलफ़्फ़ुज़ जो आमतौर से हर जगह बोला और समझा जाता है और इस्तिलाह मे नाई या हज्जाम के औज़ार रखने के थैले से मुराद ली जाती है। **प्रयोग** बड़े शहरों में नाई बग़ल में किस्वत दबाये मुसाफिरखानों के चक्कर लगाते रहते हैं। **चित्र अलग से लगाना है।**

कूंची (स्त्री) डाढ़ी के बाल भिगोने और मूंडने से क़ब्ल उन पर स़ाबन लगाने का बुर्ष। **फेरना** के साथ बोला जाता है।

खूँटी (स्त्री) बाल की नोंक जो मुंडने के बाद एक रोज़ में बढ़ जाये या निकल आये। **~लेना, निकालना** बालों की ऐसी नोकों को उस्तरे से बिल्कुल साफ करना।

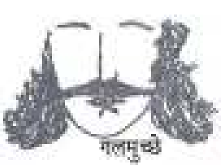

गलमुच्छे (पु0) दाढ़ी के सिर्फ गालों तक रखे हुये बाल जो मूंछों के बालों से मिलकर एक हो जायें इस वज़अ़ मे ठोड़ी के बाल मुंहवाये जाते हैं **रखना** के साथ बोला जाता है।

घनी डाढ़ी (स्त्री) वह डाढ़ी जिसके बाल बराबर एक दूसरे से बिल्कुल मिले हुये निकले हों।

घने बाल (पु0) बराबर बराबर और जड़ से जड़ मिलकर निकले हुये बाल। छिदरे बालों की ज़िद।

लबें (स्त्री) मूछों के सामने के रुख़ आगे को बढ़े हुये बाल चूँकि यह दो हिस्सों मे बटे होते हैं इसलिए जमअ का सीग़ा बोला जाता है। **लेना, काटना, मूंडना** के साथ बोला जाता है।

माथा बनाना (क्रिया) माथे के किनारों के रूयें साफ करना, मूंडना।

मसेन (स्त्री) मूंछों के निकलने की अलामत या उभार जो आग़ाज़े जवानी से कुछ पहले बारीक रूओं की शक्ल में ज़ाहिर होता है। **~भीगना** मूंछों के रूवों का ज़ाहिर होना।

मूंडन (पु0/स्त्री) सर के बाल मूंडने का अमल हिन्दुओं में पहली मरतबा बच्चे के बाल मुंडवाने की रस्म को कहते हैं। **~करना, होना** बच्चे के पहली मरतबा बाल उतरवाने की रस्म करना इस रस्म के मौक़े पर नाई जिजमानों से हक़्क़े ख़िदमत तलब करने के लिये अपनी कटोरी महफ़िल के बीच में रखता है ताकि जो जिसका मक़दूर हो उसमें डाल दे। इस मौके पर मेहमान जो कुछ देते हैं साहिबे ख़ाना या मेज़बान उनके यहाँ ऐसे ही मौक़े पर उसका बदला कर देता हैं। इस तरीक़े को हज्जामों की इस्तिलाह में कटोरी रखना कहते हैं।

मूंडना (क्रिया) सर या डाढ़ी वगैरा के बालों को उसतरे से काटकर साफ करना।

नापाकी के बाल (पु0) सतर के बाल, शर्मगाह के बाल।

नाखुन तराष (पु0) देखें निहरनी।

नाखुनगीर (पु0) देखें निहरनी।

नाखुन लेना (क्रिया) नाखुन तराषना, नाखुन काटना।

नाइन (स्त्री) नाई की बीवी, नहलाने वाली औरत। **कहावत** नाइन सब के पाँव धोये अपने धोती लाज।

नाई (पु0) संस्कृत नापीता या सना पितृ, बमानी नहलाने वाला। **देखें** हज्जाम।

नूरा (पु0) बालसफा, बाल उड़ाने का सफूफ जो औरतों की ज़ुरूरत के लिये तैयार किया जाता है। यह लफ़्ज़ लखनऊ की ईजाद है।

निहरनी (स्त्री) नाखुन तराष, नाखुनगीर नाखुन तराषने का औज़ार, नू मारवाड़ी जबान में नाखुन को कहते हैं।

5. पेषा हम्मामी

उबटना (पु0) लुप्ड़ी, संस्कृत ओभ हटना बमानी रंग साफ करना, चमक पैदा करना, रूप बनाना, सफाई करना। इस्तिलाह में ऐसे खुष्बूदार मसाले को कहते हैं। जिसके इस्तेमाल या मालिष से जिल्द में सफाई और नर्मी पैदा होती है, रंग खुलता और निखरता है नई दुल्हनों को अमूमन इसका इस्तेमाल बहुत कराया जाता है। **मलना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

आबदस्त/आबदस्त लेना (क्रिया) देखें इस्तिंजा करना।

आतिषख़ाना (पु0) हम्माम का तहजमीन खाली हिस्सा जो मौसमें सर्मा में आग की हरारत से गर्भ रखा जाता है। हम्माम की ज़ेरे फर्ष भट्टी।

इस्तिंजा/इस्तिंजा करना (क्रिया) आबदस्त लेना। बदन की पेषाब, पायखाना की जगह को पाक साफ करना।

अंगोछा (पु0) नहाकर ओढ़ने और बदन पोंछने का कपड़ा। **देखें** पेषा पार्चा बाफी पृ0

बेसन दान (पु0) हम्माम में बेसन, खली और उबटना वगैरा रखने का बर्तन।

पानी समोना (क्रिया) ज़ुरूरत से ज़्यादा गर्म पानी में ठंडा पानी मिलाकर नहाने लायक सहता (मोतदिल) बनाना।

फ़ुरेरी (स्त्री) बदन की इज़्तिरारी हरकत जो हम्माम में फौरी यानी पहला और किसी क़दर ज़्यादा ठंडा पानी बदन पर पड़ने से पैदा हो; ग़ैर मामूली सर्द हवा लगने और दूसरे असरात से भी यह कैफ़ियत पैदा होती है। **आना, लेना** के साथ बोला जाता है।

तत्ता पानी (पु0) देखें तेज़ पानी।

तेज़ पानी (पु0) ज़्यादा पानी रखने या नहाने का बैज़वी शक्ल का खुले मुंह कस ज़र्फ़ बाज़ इतने बड़े होते हैं कि इनमें आदमी बैठे और लेटकर गुस्ल कर सकता है।

तौलिया (पु0) देखें अंगोछा।

ठिरमिरा पानी (पु0) देखें कुनकुना पानी।

जामाकन (पु0) देखें जिला ख़ाना (जिलो ख़ाना)

जिलाख़ाना/जिलोख़ाना (पु0) हम्माम में गुस्लखाने से मिला हुआ कपड़े बदलने और सिंगार करने का हुजरा।

जीबी (स्त्री) मुँह धोते वक्त ज़बान के ऊपर जमी हुई रतूबत वगैरा साफ करने की चीज।

झाँवाँ (पु0) पैर के तलवों की मैल खींचने की खुरदुरी क़िस्म की सख्त चीज़ जो अमूमन पक्की ईंट की क़िस्म से होती है। रबर और धात की भी बनाई जाने लगी है। **फेरना, करना** के साथ बोला जाता है। **देखें** पेषा कुम्हार पृ0

झोंज (स्त्री) देखें खीसा।

झुरझुरी ( ) देखें फ़ुरेरी।

चार बंद चटख़ाना (क्रिया) हम्माम में गुस्ल कराने से क़ब्ल तमाम बदन को गर्म पानी

से धारना और मलना फिर हाथ पैरों के जोड़ों को हरकत देकर नर्म करना इस हरकत से जो आवाज़ जोड़ों से पैदा होती है उसको बंद चटख़ाना कहते हैं और इस अमल को बंद चटख़ाना कहा जाता है।

चप्पी (स्त्री) मुष्त माल। गुस्ल से क़ब्ल तकान दूर करने को तमाम जिस्म की मालिष और सूँताई जो पानी की धार के साथ की जाये। **करना** के साथ बोला जाता है।

चुल्लू (पु0) मुंह पर पानी डालने को फौरी ज़ुरूरत रफ़अ़ करने के लिये हथेली और उंगलियों को ख़म देकर कटोरी की शक्ल बना लेने की हालत। **बनाना, भरना** के साथ बोला जाता है।

छप्का (पु0) पानी का छींटा जो चुल्लू से मुंह पर दिया जाये। **मारना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** गर्मी के मौसम में मुंह पर ठंडे पानी के छप्के लगाना आँखों के लिये मुफीद होता है।

छींटे खेलना (क्रिया) हौज़ के गुस्ल में आपस में एक दूसरे के मुँह पर पानी की बौछार करना।

हम्माम (पु0) नहाने की ज़ुरूरत के लिये बनाई हुई कई दर्जों की इमारत जिसको सर्मा के मौसम में आतिषदान के ज़रिये गर्म करने का इंतज़ाम हो।

हम्मामी (पु0) हम्माम का मुंतज़िम, निगराँ, गुस्ल कराने वाला पेषेवर।

ख़िलाल (स्त्री) दाँतों की झिरियाँ साफ करने का तिनका दाँतों की दर्ज़ों में से खाने के ज़र्रे निकालने का तिनका। **करना** के साथ बोला जाता है।

दाँतुन/दातुन (स्त्री) दाँत साफ करने का बुर्ष या किसी दरख़्त की शाख़ जो रेषेदार हो आमतौर से नीम, पीलू या केकर की शाख़ की बनाई जाती है। **करना** के साथ बोला जाता है।

धारना (क्रिया) बदन के किसी हिस्सों पर ऊँचे हाथ से धार बाँध कर पानी बहाना।

धुसमाल (पु0) देखें खीसा।

समोना (क्रिया) देखें पानी समोना।

समोया पानी (पु0) नीम गर्म और सहता पानी जिससे नहाना खुषगवार हो, कुनकुना पानी।

सैता पानी/सहता पानी (पु0) मोतदिल गर्म पानी जो नहाने के लिये क़ाबिले बर्दाष्त हों।

साबन दान (पु0) स़ाबन रखने का बर्तन।

ग़रारा (पु0) पानी से हलक़ की सफाई। **करना** के साथ बोला जाता है।

गुस्ल खाना (पु0) नहाने के लिये बनी हुई कोई ओट या पर्दे की जगह।

फित्ना (पु0) जाड़ो में गुस्ल के बाद जिल्द मलने का एक क़िस्म का रौग़नी मसाला जो जिल्द को नर्म रखे। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

कप्कपी (स्त्री) सर्दी के असर की अलामत जो बदन में पैदा हो। **लगना** के साथ बोला जाता है।

कुल्ली (स्त्री) पानी से दाँत, ज़बान और उसके अतराफ कुल हिस्सों को साफ करने का अ़मल। **करना** के साथ बोला जाता है।

कमरौत (स्त्री) नहलाते वकत कमर धरने, सूँतने और रीढ़ की कड़िया चटख़ाने का अ़मल। **करना** के साथ बोला जाता है।

कुनकुना पानी (पु0) नीम गर्म या ठिरमिरा पानी।

कुनकुनी (स्त्री) देखें फुरेरी। **आना** के साथ बोला जाता है।

खड़ाऊँ/खड़ावें (स्त्री) तिल या सरसों का फूक जो तेल निकलने के बाद बाकी रहे। इसको मलकर नहाने से जिल्द और बालों का मैल निकल जाता है।

खीसा (पु0) सख्त और खुरदुरे कपड़े की बनी हुई थैली जिससे नहाते वकत बदन का मैल रगड़कर साफ़ करते हैं। यह अमूमन ऊनी कपड़े का बनाया जाता है। इसको ज़्यादा खुर्दुरा बनाने के लिये मोटे डोरों से गोंठ देते हैं और नहलाते वक्त बतौर दस्ताना हाथ पर चढ़ा लेते हैं।

लोटे डालना (क्रिया) बदन को अच्छी तरह मैल वगैरा से पाक साफ़ करने के बाद तमाम जिस्म पर कई मर्तबा करके एक साथ सर से पानी बहाना।

मसह (पु0) सर के बालों या बदन के किसी हिस्से पर गीला हाथ फेरकर साफ करने का अमल। **करना** के साथ बोला जाता है।

मिस्‌वाक (पु0) देखें दातुन।

मुष्त माल (स्त्री) देखें चप्पी।

मंजन/मंझन (पु0) दाँत साफ करने का कोयले का सफूफ। नमक और बाज़ दूसरी चीजों का भी बनाया जाता है।

नाक में पानी लेना (क्रिया) नाक को अंदर से साफ करने के लिये पानी नथनों में पहुँचाना।

वज़ू (पु0) इस्लामी तरीके से खुले हुये आज़ा मुंह, हाथ, पैर और सर को धोने का अमल। **करना** के साथ बोला जाता है।

6. पेषा फुलैरी (गंधी)

अबीर (पु0) देखें ग़ाज़ा।

अफ़षाँ (स्त्री) चंद चमकदार अष्या, मस्‌लन, अबरू, सोने चाँदी के वरक़ और बादले की रफी का बनाया हुआ सफूफ़ जो नौजवान औरतें और खुसूसन दुल्हनें माथे पर खुषनुमाई के लिये लगाती और अपने सिंगार का एक जुज़ समझती हैं। इस अमल को इस्तिलाह में अफषाँ चुनना कहा जाता है।

बद्‌दी/बद्‌धी (स्त्री) फूलों का जोडवाँ हार जो तलवार की तरह शाने से कूल्हे पर दो तरफा आड़ा लटका लिया जाता है। इस तरह की छाती और पीठ पर एक दूसरे के ऊपर से गुज़रे। **पहनना** के साथ बोला जाता है।

बसाना (क्रिया) खुष्बूदार फूलों में किसी चीज़ को खुष्बूदार बनाने के लिये रखना। गंधियों की इस्तिलाह में तिलों को खुष्बूदार फूलों में रखने के लिये बोला जाता है। इस अमल से तिलों का तेल खुषबूदार हो जाता है जो सर के बालों में लगाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है।

रचाना (   ) देखें बसाना।

भप्‌का (पु0) बज़रिये अमल तब्‌ख़ेर, केवड़े, गुलाब या बाज़ दीगर खुषबूदार चीजों का अर्क़ निकालने या खींचने का ज़र्फ़।

भपौरा (पु0) खुषबूदार फूलों मस्‌लन गुलाब या किसी दूसरी चीज़ जैसे ख़स का बज़रिये अमल तब्‌ख़ेर निकाला हुआ अर्क़ या रूह। जिस चीज़ का निकाला जाता है उसीके नाम से मौसूम करते हैं। जैसे रूह केवड़ा, रूह गुलाब, रूह ख़स वगैरा। इस तरह की खुषबू बनाई हुई बहुत लतीफ़ और ज़्यादा तेज़ होती है।

फुल माल (पु0) फूलों का कंठा, गजरा या हार जिसका पहनना सिंगार का एक जुज़ समझा जाता है। नौजवान शौक़ीन औरतें, मर्द और नई दुल्हनें आमतौर से पसंद करती हैं।

फुलेरा (पु0) सिंगार और सुहाग की खुष्बूदार चीज़ तैयार करने वाला पेषेवर जो आमतौर से गंधी के नाम से मारूफ़ है।

फुलेल (स्त्री) फूलों से तैयार की हुई खुषबूदार चीज, आमतौर से खुषबूदार तेल और इत्र वगैरा मुराद ली जाती है।

संगत से फूल होत है वही तिल वही तेल।

जात पात छोड़कर पाया नाम फुलेल।

फूल बसाना (क्रिया) देखें बसाना।

फोइय्या (पु0) खुषबूदार तेल या इत्र की गाद जो कुछ दिनों रखे रहने से निथरकर तहनषीन हो जाये। कान या नाक के छेद पर जो ज़ेवर के वज़न से कट या पक जाये। **लगाना** मुफ़ीद होता है।

ख़िज़ाब (पु0) लुग़वी मानी, हर क़िस्म का रंग अमूमन और मेहंदी या नील की पत्ती का रंग खुसूसन, लेकिन उर्फ़े आम में मेहंदी और नील की पत्ती के तैयार किये हुये सफ़ूफ़ को कहते हैं जो सर या डाढ़ी के सफेद बालों को काला करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। जब से ज़दीद किस्म के विलायती ख़िज़ाब निकले हैं। इनका चलन बहुत कम हो गया है।

ज़मीन (स्त्री) खुषबूदार तेल तैयार करने के लिये तिल और इत्र तैयार करने के लिये रौगने संदल पर फूलों की खुषबू होते हैं और इन चीजों को गंधियो की इस्तिलाह में ज़मीन या फुलेल की ज़मीन कहते हैं। ~तिल या रौग़ने स़ंदल मे फूलों को इस तरह बसाना कि इसमें फूलों की खुषबू वस्ल हो जाये।

सुर्मा (पु0) एक क़िस्म के स्याह पत्थर का निहायत बारीक पिसा हुआ सफ़ूफ जो आँखों में सिंगार के लिये भी लगाया जाता है और दवा के तौर पर भी पहली सूरत आम है और दूसरी ख़ास। सुर्मा लगाना भी सिंगार का एक जुज़ समझा जाता है क्योंकि उसकी वजह से आँखों में एक क़िस्म की खुषनुमाई मालूम होती है।

सुर्मादानी (स्त्री) सुर्मा रखने का ज़र्फ।

सिहरा (पु0) फूलों की लड़ीदार बनी हुई नक़ाब जो दूल्हों के लिये मख़सूस हिन्दी तर्ज़ है। बादषाहों और अमीरों के लिये मोतियों का भी बनाया जाता है। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

तुर्रा (पु0) टोपी या पगड़ी में सामने के रुख लटकाने को फूलों का बना हुआ लड़ीदार गुप्फा। खासतौर से दूल्हा के लगाया जाता है।

इत्र (पु0) देखें फुलेल।

इत्रसाज़ (पु0) इत्र बनाने वाला पेषेवर।

इत्र का फोया (पु0) इत्र लगी हुई ज़रा सी रुई जो कान के एक हिस्से में खुषबू के लिये रख ली जाये।

इत्र सुहाग (पु0) कई इत्र मिलाकर बनाया हुआ एक मजमूआ इत्र जिसकी खुषबू बहुत तेज़ होती है इसलिए दुल्हनों के इस्तेमाल के लिए बनाया जाता है।

ग़ाज़ा (पु0) सिंगार के लिए रुख़सारों पर लगाने का निहायत आला क़िस्म का बनाया हुआ सफ़ूफ़ जो चेहरे पर मसनूई तरोताज़गी और रानाई पैदा करने को इस्तेमाल किया जाता है। अब इसका चलन आम हो रहा है। **लगाना, मलना** के साथ बोला जाता है।

गुलगूना ( ) देखें गाज़ा।

क़राबा (पु0) अर्क़ गुलाब या फुलेल रखने का सुराहीनुमा बड़ा शीषा जिसको अंग्रेज़ी में कंटर कहते हैं।

काजल (पु0) चिराग की लौ की कालिक जो सुर्मे के बजाये आँखों में लगाने के लिए ख़ास तरीके से निबतती तेल को जलाकर तैयार किया जाता है। सुर्मे की निस्बत इसमें ज़्यादा स्याही और पायदारी होती है। **~पाड़ना** निबाताती तेल के चिराग की लौ से काजल जमा करना।

भले बुरों के होत हैं, बुरे भलों के होऐं।

दीपक से काजल परगत गूल कीज से जई।।

कंठा (पु0) देखें फूल माल। फूला माला। **गूथना, पिरोना** के साथ बोला जाता है।

गजरा (पु0) देखें फूलमाल।

गुलपोषी (पु0) फूलों का ज़ेवर पहनाने की रस्म जो इज़हारे खुषी या किसी तक़रीब के पूरा करने के लिये की जाती है।

गंधी (पु0) हिन्दी ज़बान में लफ़ज़ गंधः या गंध बू और बाँस के मानों में बोला जाता है। जैसे माँस गंध, इत्र की बास। **देखें** फुलेरा।

लड़ी (स्त्री) तागे में इकहरा और बराबर बराबर पिरोया हुआ फूल या कोई और चीज़ मस्लन मोती वगैरा।

मिस्सी (स्त्री) दाँतों की रेखें और होंठों की स्याही माइल भूरा करने के लिए एक ख़ास क़िस्म का बनाया हुआ सफ़ूफ़ जिसका इस्तेमाल औरतें अपने सिंगार का एक जुज़ समझती है। यूरप में शौक़ीन औरतें एक क़िस्म के सुर्ख़ रंग से अपने होंठों को रंगती है हिन्दुस्तान में उसको पान के रंग का बदल समझा जाता है।

मुकवा/मुखवा (पु0) देखें ग़ाज़ा।

मकोल/मुख ओल (पु0) देखें ग़ाज़ा।

महावर (पु0) एक क़िस्म का ज़र्द सफ़ूफ़ जो दकन में औरतें बाज़ तक़ारीब पर बतौर गाज़ा इस्तेमाल करती हैं।

मेहंदी (स्त्री) एक दरख्त जिसके पत्तों से सुर्ख रंग निकलता है। औरतें इनको पीसकर अपने हाथ और पैर को रंगीन बनाने के लिए इस्तेमाल करती है। यह भी सिंगार का एक जुज़ समझा जाता है। बाल रंगने के लिए वस्मे में भी शरीक की जाती है।

वस्मा (पु0) लुग़वी मानी नील की पत्ती, मुराद बालों के रंगने का एक क़िस्म का सफ़ूफ़। **देखें** ख़िज़ाब।

हार (पु0) देखें फुलमाल।

हारसिंगार (पु0) फूलों की लड़ियाँ या गजरे जो सिंगार के लिए बनाये जायें।

हलकार्नी (स्त्री) ऊद, लोबान और इसी क़िस्म की खुषबूदार चीज़ें जलाने का ज़र्फ़। ऐसा ज़र्फ़ जिसमें खुषबूदार चीजों की धूनी करके सर के बालों और जिस्म को दी जाये।

6. पेषा तंबोली (पनवाड़ी)

आतर/आँतर (स्त्री) पान की बेलों की क़तार या मंढा।

उगाल (पु0) चबाये हुए पान का फूक जो मुंह से ख़ारिज कर दिया जाए।

इलायची (स्त्री) एक क़िस्म का खुषबूदार बीज जो पान में डालकर खाया जाता है।

बरेठ/बरेठा (स्त्री) पान की बेलों की कियारियाँ जिनपर मंढ़वा बना हुआ हो।

बीड़ा (पु0) गिलोरी, तिकोनी, चौकोर या मख़रूती शकल में तह किया हुआ पान जो खाने की ज़रूरत के लिए बना दिया जाए। गिलौरी छोटे बीड़े को कहते हैं जो बिला तकल्लुफ़ गाल के अंदर रख ली जाए और आहिस्ता आहिस्ता चबाने में आए गालिबन यही उसकी वजह तस्मिया है। **बनाना** पान को मुसल्लस या मख़रूती शकल में मोड़ देना ताकि उसको मुंह में रखने में सहूलियत हो।

पान (पु0) पत्ता एक बेल का, जिनको हिन्दी में नागर कहते हैं। पत्ता यह बेल और उसका पत्ता। हिन्दुओं में बहुत मुतर्बरक और किसी देवता की यादगार समझा जाता है। इसलिए हिन्दुओं में पान न सिर्फ खाया ही जाता है। बल्कि मौत और ज़ीस्त की हर तक़रीब में इसका रवाज हिन्दुओं से फैला। **~लगाना, बनाना** पान पर कथ चूना लगाना और दीगर मसाले से पुर तकल्लुफ़ करना।

बिना वसीले चाकरी बिना ढाल के जवान।
यह तीनों फीके लगें बिना तमाकू पान।।
सोहबत अच्छी बैठिये खाइये नागर पान,
बुरी सोहबत बैठ के काटाइये नाक और कान।।
अच्छों के पास बैठिये खाइये नागर पान,
बुरों के पास बैठिये कटाइये नाक कान।।

पानदान (पु0) पान और उसके लवाज़मात रखने का ज़र्फ़ जो देहली और नवाहे देहली में पिटारी के नाम से मारूफ़ है। **~होना** मंगनी की रस्म अंजाम पाना (वस्त हिन्द और दकन के मुसलमान ख़ानदानों की इस्तिलाह)।

पाह (स्त्री) देखें पैंड़।

पक्की निवाड़ी/पक्का निवाड़ा (स्त्री/पु0) देखें निवाड़ा।

पन बरेज (स्त्री) देखें बरेठ।

पनवाड़ी (पु0) तंबोली लुग़वी माने पान की कियारी या खेत और इस्तिलाह में पान के ब्योपारी को कहते हैं। जो पान के बीड़े भी बनाता है और इसके दूसरे लवाज़मात भी तैयार रखता है।

पनवाड़न (स्त्री) पनवाड़ी का इस्मे मुअन्नस।

पेडी (स्त्री) बेल की जड़ के क़रीब के पान जो ज़्यादा बड़े करारे और पुख़्ता रंग होते हैं। इस वजह से बहुत पसंद किये जाते हैं। पान की वह बेल जो पुरानी जड़ से फूटे और दूसरी फ़स्ल के लिए तैयार हो।

पीक (स्त्री) पान का अर्क़ जो कत्थे चूने के साथ चबाने से मुंह में पैदा हो और लुआबे दहन के साथ मिल जाये। **थूकना** के साथ बोला जाता है।

पैंड़ी (स्त्री) पान की बेलों के मंढ़वे के नीचे की पगडंडी जो पेच दर पेच होती है।

पेवड़ी/पेवरी (स्त्री) देखें पेड़ी।

तप्ड़ा (पु0) तीन महीने की बेल के पान जिनमें कच्चा और हरियालापन बाक़ी हो। खाने में बद्मज़ा और जल्द गल जाने वाला होता है। इसको कच्ची निवाड़ी भी कहते हैं।

तुक्कस (पु0) मख़रूती षक्ल का बना हुआ पानों का मुट्ठा, जो शादी ब्याह की तक़रीब में मेहमानों को पेष करने के लिए बनाये जाते हैं।

तंबोली (पु0) देखें पनवाड़ी।

तंबोलन (स्त्री) तंबोली का इस्मे मुअन्नस।

जड़ौना (पु0) देखें पेड़ी।

जहाज़ी छालिया (स्त्री) गोल और बड़ी डली की छालिया।

चिकनी छालिया (स्त्री) चपटी डली की छालिया जो ज़ाइके और षक्ल में आम छालिया से बहुत मुख़्तलिफ़ होती है। इसको पुरतकल्लुफ बनाने के लिए बारीक आरी से काटकर दो–दो, परत कर लिए जाते हैं।

है जो साहब के कफ़े दस्त पे यह चिकनी डली।
ज़ेब देता है इसे जिस क़दर अच्छा कहिये।।

छालिया (स्त्री) नारियल के क़िस्म के दरख़्त के फल की गुठली जो बारीक कतरकर पान के साथ खायी जाती है। ताकि पान देर तक मुंह में रहे।

छू (पु0) कच्चा पान जो खाने के क़ाबिल न हो। **देखें** निवाडा।

खास़दान (पु0) छोटी क़िस्म का ख़ूबसूरत पानदान जो बेगमों और अमीरों के खाने की गिलोरिया रखने के लिए मख़सूस हो और हर वक्त साथ रखा जा सके।

ढ़ोली (स्त्री) दो सौ पानों की एक जुट या थई।

रोल (पु0) जिगर जली छालिया यानी वह छालिया जो गूदा गल जाने से थोती और हलकी हो गयी हो और रोलने में अलग निकल आये।

ज़र्दा (पु0) तम्बाकू के पत्ते जो बारीक कुचलकर और खुषबूदार मसालों में रंगकर पान में खाने के लायक़ तैयार किये गये हो। देहली और नवाहे देहली में ज़र्दा कहलाता है और हुक्के में पीने के लिए जो तैयार किया जाता है। उसको तम्बाकू कहते हैं। दूसरे मुक़ामात पर दोनों के लिये एक ही लफ़ज़ तम्बाकू बोला जाता है।

बिना वसीले चाकरी बिना ढाल के जवान।

यह तीनों फीके लगे बिन तम्बाकू पान।।

सुपारी/सुप्यारी (स्त्री) देखें छालिया।

बंदा परवर के कफे दस्त को दिल कीजिए फ़र्ज़।

और इस चिकनी सुपानी को सवेदा कहिये।।

सरौता (पु0) छालिया कतरने का धारदार आहनी औज़ार। हस्बे जुरूरत छोटा बड़ा खुष वज़अ़ और सादा बनाया जाता है।

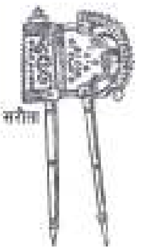

सरौती (स्त्री) सरौते का इस्मे मुसग्गर।

स़ाफी (स्त्री) पान की गिलौरियाँ या पान लपेटने को रखने का कपड़ा जिसको पानी से तर रखा जाता है।

क़िवाम (पु0) तम्बाकू का सत जो पान में खाने के लिए मुष्क, अंबर और दूसरे खुषबूदार मसाले मिलाकर बनाया जाता है।

कत्था (पु0) खेर के दरख़्त की छाल का अर्क़ जो पान के साथ खाने के लिए ख़ास तरीक़े से निकाला और निथारकर जमाया जाता है। हिन्दुस्तान में पान का इस्तेमाल बहुत क़दीम है, जौज़ जोत्री, लौंग, इलायची और सुपारी के साथ पत्ते की तरह चबा लिया जाता है। मुसलमानों के अहेद में उसमें कत्थे चूने का इज़ाफ़ा हुआ और मुग़लों के ज़माने में उसमें तकल्लुफ़ात फैदा किये गये। उसके साथ गीले कत्थे चूने का इस्तेमाल भी उसी ज़माने की यादगार है।

कच्ची निवाड़ी (स्त्री) देखें निवाड़ी और तप्ड़ा।

कच्छी (स्त्री) दखनी ज़बान का लफ़ज़ **देखें** ढ़ोली।

कुरेज (पु0) वह पान या पत्ता जिसका बढ़ना खत्म होकर पुख़ता हो जाये और झड़ने के क़रीब होने लगें।

कौरी/कौंरी (स्त्री) ढ़ोली का अद्धा यानी एक सौ पान की जुट।

गुटका (पु0) कतरी हुई छालिया, कत्थे का बारीक चूरा, लौंग, इलायची और जौज़ जोत्री वग़ैरह हस्बेजुरूरत मिलाकर बनाया हुआ मुरक्क़ब जो इलाक़ा भोपाल में पान के बदल के तौर पर खाया जाता है, इसको पुरतकल्लुफ़ बनाने के लिए पिस्ते, बादाम, सोना चाँदी के वरक़ और चिकनी डली का भी इज़ाफा किया जाता है। पान की खुसूसियत पैदा करने के लिए कत्थे, चूने के मुरक्क़ब में रंग भी लेते हैं। कत्थे की तलख़ी को कम करने को ज़रा ज़रा सा चूना थोड़े थोड़े वक़्फे से चाटा जाता है जो एक चुनैटी में अलाहिदा रहता है और इस्तेमाल के लिए उंगली की पोर पर थोड़ा लगा लिया जाता है।

गिलौरी (स्त्री) देखें बीडा।

गिलौरा (पु0) गिलौरियाँ रखने की डिबिया या डिब्बा। **देखें** ख़ासदान।

गोटा (पु0) पान के बदल के तौर पर खाने के लिए गुटके की तरह का तैयार किया हुआ छालिया का मुरक्कब। यह इस्तिलाह लखनऊ की ईजाद है जहाँ अष्रा ए मुहर्रम के एहतिराम के लिए पान की बजाये इसका इस्तेमाल तकल्लुफन किया

जाता है और इन अय्याम में आमतौर से पनवाड़ी तैयार करके फ़रोख़्त करते हैं। देहली में भी इसका रवाज है मगर बहुत कम मुमकिन है कि लफ़ज़ गुटका लखनऊ की बोलचाल में गोटा कहलाने लगा हो। **देखें** गुटका।

गूदड़ (पु0) पान की पन्द्रह बीस रोज़ की निकली हुई कोपलें जो किसी आ़रिज़े की वजह से सिकुड़कर चुरसदार हो जाये और इनमें नमू की कुव्वत न रही हो।

लगा हुआ पान (पु0) देखें पान लगाना। थोड़ा गला हुआ पान।

लेसू (पु0) पान की साठ ढोलियों का एक गट्ठा।

माँक चंढ़ी छालिया (स्त्री) सख्त क़िस्म की छोटी और लम्बोत्री डली की छालिया।

मानडू (पु0) पान की बेल के मंढ़वे के ऊपर का टट्टी का जाल जिसपर बेल फैलती हो।

मुट्ठा (पु0) देखें कौरी।

मुंह बन्द पान (पु0) पान की कोपल जो पूरी तरह खिली न हो।

नागर बेल/नाकबेल (स्त्री) पान की बेल।

नागर पान (पु0) नागर बेल का पत्ता जो आमतौर से हर जगह पान के नाम से मषहूर है।

नाक की नकटी बूजी कान।
पलका बैठ मंगावे पान।।

निवाड़ा (पु0) एक महीने तक की उम्र का कच्चा और नयापन जो खाने के क़ाबिल न हो, पान को तीन महीने से पहले बेल से नहीं तोड़ा जाता क्योंकि इससे कब्ल वह खाने के क़ाबिल नहीं समझा जाता तीन महीने बाद उसको तोड़ना शुरू करते हैं। उस वक़्त के पान को इस्तिलाह में कच्ची निवाड़ी या तंप्ड़ा कहते हैं। चार पाँच माह में पान अपनी पूरी हालत को पहुँच जाता है। उसमें करारापन और पुख़्तगी आ जाती है उस वक़्त का पान पक्की निवाड़ी कहलाता है और खाने के लिए बहुत अच्छा समझा जाता है।

वर्क़ी बीड़ा (पु0) सोने या चाँदी का वरक़ मंढ़ा हुआ बीड़ा या गिलौरी। **प्रयोग** जलसे में मेहमानों की तवाज़ेह इत्र फूल और वर्क़ी गिलौरियों से की गयी।

वर्क़ी गिलौरी ( ) देखें वर्क़ी बीड़ा।

8. पेषा मुग़लानी गिरी

क़ब्ल इसके कि इस जुज़ की इस्तिलाह लिखी जायें लफ़ज़ मुग़लानी की हक़ीक़त को वाजेह कर देना मुनासिब मालूम होता है। दरअस्ल चोटी कंघी और बनाव सिंगार कराने वाली औरत के लिए मष्षाता का लफ़ज़ है लेकिन उर्दू में इस लफ़ज़ का इत्लाक़ नाते यानी शादी ब्याह के नामे व पयाम ले जाने और रिष्ते कराने वाली औरत पर होने लगा है और यह इस्तिलाह उसके लिए मख़सूस हो गयी है। मुग़ल औरतें जो अपने उरूज के ज़माने मे हुनर मंदी, सलीक़ा शुआ़री और उमूरे ख़ानादारी सर अंजाम के लिए मषहूर थी उमरा की महल सराओं में बेगमात की मुसाहबत और नौ उम्र लड़कियों की अतारलीक़ की ख़िदमत अंजाम देती थीं और घर कि मुंतज़िमा होती थीं जब वक़्त पड़ा तो यही मुग़लानियाँ खुषहाल लोगों के यहाँ सीने पिरोने और कंघी चोटी की ख़िदमत करने लगी अब इन दिनों उनका नाम और काम एक ख्वाबो ख़याल हो गया है। मुग़लानीगिरी को सिंगार से बस इतना ही ताल्लुक़ है जितना ऊपर बयान किया गया लेकिन मफ़हूम के लिहाज़ से मष्षातागिरी के मुक़ाबिले में ज़्यादा मौज़ूं है।

अबीर मलना (क्रिया) सिंगार के लिए रुख़सारों में गुलाल लगाना, भोढल मलना।

आफताब चन (स्त्री) मुंह हाथ धुलाने वाली ख़ादिमा।

अफषाँ चुनना (क्रिया) सिंगार की ज़ुरूरत से चमकदार सुनहरी, रूपहली वरक़ के सफ़ूफ को नौजवान औरतों या दुल्हनों के माथे पर लगाना जिससे चेहरे का हुस्न दो बाला हो।

ओट (पु0) पर्दा या क़नात जो कपड़े बदलने के वक्त बतौर आड़ खड़ी कर दी जाये। **~खड़ी करना** लिबास तब्दील करने के वक़्त पर्दा लगाना।

बाल सूंतना (क्रिया) बालों की लटों में कंघी फेरना। कंघी से चोटी के बालों को खोलना, सुलझाना और साफ करना।

बनाव करना (क्रिया) जिस्म के खुले हिस्से हाथ पैर और चेहरे को मैल से पाक करना, आँख, नाक, कान और दाँतों को साफ करना, बालों को सुधारना मौसूम, रवाज़ और जिस्म के मुताबित लिबास को सँवारकर पहनना जो मौज़ूँ और मुनासिब मालूम हो, बनाव के साथ खुषनुमा चीज़ों का इज़ाफ़ा सिंगार करना कहलाता है। इसलिए आम बोलचाल में इन दोनों अ़मलों के मिलाकर बनाव सिंगार कहा जाता है। जिससे मुराद औरतों की आराइष और ज़ेबाइष होती है।

बनाव सिंगार करना (क्रिया) देखें बनाव करना, सिंगार करना।

बिंदी (स्त्री) संदल या काजल का छोटा सा टीका जो दोनों भवों के बीच में चेहरे की ज़ेबाइष के लिए लगाया और सिंगार का एक ज़ुज़ समझा जाता है। यह तरीक़ा हिन्दू औरतों से मख़सूस है। मर्हटा औरतें गुलाल का तिलक लगातीं है और उसको सुहाग की निषानी समझा जाता है। इसलिए उनको बहुत अज़ीज़ होता है।

चिन ( ) देखें बिंदी।

बंदेलान (स्त्री) इत्र, फुलेल फरोष औरत।

भोढल (पु0) अबरक और गुलाल का मुरक्कब सफ़ूफ़ **देखें** अबीर मलना।

पट्टियाँ (स्त्री) माथे पर झुके हुये लम्बे बाल जो माँग के दोनों तरफ पेषानी पर ऊपर के रुख खुषनुमाई के लिए जमा लिये जायें। **जमाना** के साथ बोला जाता है। **~झुकाना** सर के सामने के बालों को माँग के दोनों तरफ माथे के ऊपर ज़रा नीचे को झुकाकर क़ौसनुमा बनाते हुये चोटी में मिलाना।

फुलैरी (स्त्री) इत्र की शीषी।

तेलगीरी (स्त्री) तेल की चिकनाई से कपड़ों के बचाव के लिए चोटी के नीचे पीठ पर डालने का कपड़ा।

टिक्की (स्त्री) देखें बिंदी।

तिलक (पु0) बड़ी बिंदी, **देखें** बिंदी।

टीका (पु0) टिक्की का इस्मे मुकब्बर। **देखें** टिक्की और बिन्दी।

जूडा/चूडा (पु0) चोटी की गुंडरली जो बालों को पीछे की तरफ इकट्ठा करके गुद्दी से ज़रा ऊपर बनाई जाये। कभी ज़ुरूरत से यह तर्ज़ अख़तियार किया जाता है और कभी वज़अ़दारी के तहत, सिंगार के लिए देहली और नवाहे देहली में जूड़ा और बाज़ दूसरे मुक़ामात पर चूड़ा तलफ़्फ़ुज़ करते हैं। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

जूँ (स्त्री) सर के बालों का कीड़ा जो मैलेपन से पैदा हो जाता है। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

चाँद बरी (स्त्री) सर के सामने के बाल जो चोटी गूँथने में माँग के दोनों तरफ माथे पर हिलाल की षक्ल में रखे जायें इसको मोहम्मद शाही पट्टियों का सर गूँधना भी

कहा जाता है जो उस अहेद में नौजवान औरतों में चोटी गूँधने का एक आम चलन था और अब भी अवध के इलाक़े में अकसर मुक़ामात पर बाक़ी है।

चुट्ला (पु0) चोटी का सिरा लपेटने या बाँधने की कपड़े की पट्टी। पंजाब में बालों जैसे बारीक स्याह ढोरे, जो बालों में मिल जायें। कपड़े की पट्टी की जगह इस्तेमाल किये जाते हैं जिसका मक़सद चोटी को मसनूई तौर पर लम्बा बनाना होता है। तागों के ऐसे मूबाक को वहाँ चुटला कहते हैं दूसरे मुक़ामात पर इसका मफहूम मूबाक से मुख़्तलिफ़ हो गया है। **~डालना** चुटले को चोटी के साथ गूँधकर बाल बाँधना।

चूटिया (स्त्री) चोटी का इस्मे मुसग्गर। छोटी चोटी जो मामूली से ज़्यादा कम हो। वह बालों की लट जो हिन्दू मर्द रस्म के तौर पर चंदिया पर सारे बालों में नुमायाँ और बड़ी हुई हमेषा क़ायम रखते है। बाज़ लोगों में इसको चुर्की के नाम से मौसूम किया जाता है।

चुर्की (स्त्री) देखें चुटिया।

चोटी (स्त्री) सर के आज़ादाना बढ़े हुये कुल बालों का मजमूआ जो गर्दन से नीचे कमर की तरफ बढ़ा और झुका हुआ रहे। **~बाँधना, ढालना** चोटी के बालों को गूथकर कपड़े की पट्टी (मूबाफ़) लपेट देना। **~रखना** के सर के बाल बढ़ने देना यानी उनको उनकी हद तक बढ़ने देना। **~गूँथना** चोटी के लिए लफ़्ज़ गूँधना के बजाये आमतौर से गूंधना बोला जाने लगा है। मुराद गूथना ही होती है यानी कुल बालों को तीन हिस्सों में बाँटकर बाहम एक दूसरे के साथ पेच दर पेच कर दिया जाये ताकि चेहरे पर इधर–उधर बिखरे न रहें।

चूँडा (पु0) चोटी का इस्मे मुकब्बर। (कलमा–ए–तहक़ीर) **देखें** चोटी।

हुसनदान (पु0) देखें सुहाग पिटारा।

हिना बंद (पु0) हाथों में लगाई हुई मेहंदी पर बांधने की बस्तनी या कपड़ा।

दस्तमाल (पु0) सिंगार करते वकत हाथ में रखने का कपड़ा जो हाथ वग़ैरह पोछने में काम आता है।

दुंबाला (पु0) सुर्मे या काजल का ख़त जो आँख के अंदर से कोये के बाहर कनपटी की तरफ ज़रा बढ़ाकर खींचा गया हो।

ढुंबालेदार सुर्मा लगाना (क्रिया) सुर्मे की तहरीर को आँख के बाहर कोये से कनपटी की तरफ को ज़रा खींच देना।

धड़ी (स्त्री) मिस्सी की पप्ड़ी जो होठों पर जमाई जाये। **जमाना** के साथ बोला जाता है।

धक (स्त्री) जूँ का पच्चा जो सर के बाल साफ न रखने से पैदा हो जाये। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

रूखे बाल (पु0) मसाले से धुले हुये बाल जिनमें तेल न लगाया गया हो रूखासर भी कहते हैं।

ज़ानूपोष (पु0) कंघी चोटी करते वक़त कपड़ों की हिफ़ाज़त के लिए सामने ज़ानों पर डाल लेने का कपड़ा।

जुल्फ़ (स्त्री) कानों की तरफ के बाल जो बढ़कर और लम्बे होकर कानों से नीचे लटक आयें। **बढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

जटा ( ) देखें जुल्फ़।

सुरमई तहरीर (स्त्री) सुर्मे की धारियाँ जो आँख के पपोटे की कोरों पर सलाई से बनाई जाती है।

सुर्मगीं आँख (स्त्री) वह आँख जिसमें कुदरती तौर पर पपोटे की कोरें स्याह हों।

सिंगार करना (पु0) ज़ेवर और दीगर लवाज़माते ज़ेवर से औरतों का अपने बदन के खुले हिस्सों को आरास्ता करना, ज़ीनत देना। **देखें** बनाव करना।

सिंगारदान (पु0) देखें सुहाग पिटारा।

सोला सिंगार (पु0) सर से पैर तक औरत के पूरे बदन का सिंगार जो सोलह हिस्सों में बटे हुए होने की वजह से सोला सिंगार कहलाता है। जिससे पूरा और मुकम्मल सिंगार मुराद ली जाती है। जिसमें कोई कसर बाक़ी न रही हों। **करना** के साथ बोला जाता है।

सुहाग (पु0) औरत की खुषी यानी शादी और शादीषुदा रहने का ज़माना जिसमें वह अपना बनाव सिंगार कायम रखती है।

सुहाग पिटारा (पु0) वह संदूकचा या पिटारी जिसमें औरत के सिंगार की जुमला चीजें मौजूद और महफ़ूज़ रहें। देहली और नवाहे देहली में मुसलमान मुक़ाबा के नाम से मौसूम करते हैं। सिंगारदान और हुस्नदान भी कहते है लेकिन इससे मुराद वह पिटारी या पिटारा होता है। जिसमें सिर्फ कंघी चोटी करने और दीगर बनाव का सामान रहे। जैसे सिंगार मेज़।

सुहागपूड़ा (पु0) बनाव की चीज़ें मसलन खुली ओबटना, मिस्सी सुर्मा और सरमे डालने का मसाला जो कागज़ के थैले में रखकर दुल्हन के लिए भेजा जाये।

सीप का सर गूंधना (क्रिया) कुंवारी लड़कियों के सर के बालों की सीधी और साफ गुंधाई जिसमे माँग निकालने का लिहाज़ न रखा जाये ताकि जवानी से क़ब्ल और शादी से पहले माँग फट कर चौड़ी न हो जाये। इस क़िस्म का सर गुंधते है आमतौर से मांग साफ और सीधी नहीं निकाली जाती।

शाना पेच (पु0) कंघी रखने का गिलाफ़ जिसमें कंघी को लपेटकर रखा जा सके ताकि उसके दाँतें हवा के असर से ख़राब न हों।

गाज़ा ( ) देखें करंड।

कजरवी/कजलवी (स्त्री) काजल रखने की डिबिया।

करंड (पु0) भोढल या गुले लाला रखने की डिबिया।

कलंक का टीका (पु0) माथे पर दोनों भवों के दरमियान बनाया हुआ काला निषान जो हिन्दुओं के बाज़ फिरक़ों में बेवा औरतें सुर्मे से गुदवा लेती है जो बेवा होने की अलामत और मुसीबत व रुसवाई की निषानी समझा जाता है। **लगाना, लगना** के साथ बोला जाता है।

कंघी चोटी करना (क्रिया) बाल सँवारना, बाल साफ करके चोटी गूँधना।

फोडे का मूबाफ़ (पु0) चोटी में ऊपर की जड़ से लेकर नीचे की नोक तक पट्टी लपेटने को इस्तिलाह में कोड़े का मूबाफ कहा जाता है यह सूरत आमतौर से छोटी लड़कियों की चोटी में की जाती है ताकि बालों की चिकनाई से उनका कुर्ता खराब न हो। **डालना** के साथ बोला जाता है।

केस (पु0) सर के बाल मुराद, मुराद लम्बे बाल।

खजूरी चोटी (स्त्री) खजूर के पत्ते की वज़अ़ पेच दर पेच गूंधी हुई चोटी।

गुलाल (पु0) भोड़ल **देखें** ग़ाज़ा। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

गेलू (पु0) ज़ुल्फ, कनपटियों के ऊपर के लम्बे बाल जो बढ़कर कानों की नोंक से नीचे आ जाये।

गेसूदानी (स्त्री) गेसू लपेटने का मूबाफ़ या थैली जो खुषनुमा बनाई जाती है।

लाखा (पु0) कत्थे चूने का मुरक्कब जो होंठों पर जमाने के लिए तैयार किया जाये इसमें मिस्सी का जुज़ भी मिला देते हैं। जिससे उसका रंग लाखी हो जाता है

और यही उसकी वजह तस्मिया है जो नौजवान औरतें मिस्सी नहीं लगातीं वह खुषनुमाई के लिए उससे अपने होंठ रंगीन कर लेती हैं। **लगाना, जमाना** के साथ बोला जाता है।

लट (स्त्री) लम्बे लटक हुये बाल जो नीचे के सिरे पर थोड़ी थोड़ी तादाद में आपस में लिपटे हुये हों।

लखोई (स्त्री) लाखा रखने की डिबिया। **देखें** लाखा।

लीख (स्त्री) जूँ का अंडा। जो सर साफ न रहने की वज़ह से मैल से पैदा हो जाये। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

माँग (स्त्री) सर के बालों की दो रुख़ा तक़सीम का निषान जो एक सीधे ख़त की षक्ल में ज़ाहिर हो। बालों की यह तकसीम जो उनको संवारने के लिए की जाती है आमतौर पर सर के बीचो बीच माथे से खत्म चंदिया तक होती है और सीधी माँग के नाम से मौसूम की जाती है जदीद तर्ज़ में शौक़ीन मिज़ाज बीच के हिस्से को छोड़कर दायें या बायें कान की तरफ हटाकर बालों को तक़सीम करते हैं इससे जो माँग पैदा होती है इस्तिलाह में टेढ़ी या आड़ी माँग कहलाती है। **~निकालना** सर के बालों को मौज़ूँ तौर पर दो हिस्से में तक़सीम करना जिससे दोनों हिस्सों के दरमियान एक सीधा ख़त बन जाये। **~फटना** माँग का मामूल से ज़्यादा चौड़ा हो जाना जो बालों के कम होने या चोटी ज़्यादा कसकर बाँधने से फैल जाती और बदनुमा मालूम होती है। **~भरना** खुषनुमाई और ज़ीनत के लिए माँग के निषान को किसी चमकदार सफ़ूफ से भर देना जो बनाव का एक जुज़ समझा जाता है। इस अमल को इस्तिलाह में अफ़षाँ चुनना भी कहते हैं।

फर्क़ ( ) देखें माँग।

माँग पट्टी करना (क्रिया) चोटी कंघी करना, बाल सँवारना यानी ह्रस्बे रवाज सर के बालों को दो हिस्सों में बाटकर सर के दोनों तरफ पट्टियों की षक्ल में जमाना।

मिस्सी मलना (क्रिया) होंठों और दाँतों की रेखों को रंगीन बनाने के लिए मिस्सी लगाना। **देखें** मिस्सी पेषा गंधी पृ0। नौजवान शौक़ीन औरतें और खुसूसन दुल्हनों के लिए उसको बनाव सिंगार का एक जुज़ समझा जाता है। बाज़ मुक़ामात की औरतें पूरे दाँतों को स्याह करना खुषनुमाई समझती है और उसकी बड़ी दिलदादा होती है।

मसल–तन पर नहीं लत्ता मिस्सी चाहिए अलबत्ता

मुखवा करना/मुख ओल करना (क्रिया) देखें अबीर लगाना।

मुषाता (स्त्री) औरतों को बनाव सिंगार कराने वाली औरत। उर्दू में इस लफज़ का मफ़हूम शादी ब्याह कराने वाली औरत के लिए मुख़सूस हो गया है।

मुग़लानी (स्त्री) बेग़मात की अतालीक, मुंतजिमा, उमूरख़ानादारी और मुसाहिबा, मुराद वह औरत जो घर की बेगम वग़ैरह को लिबास और बनाव सिंगार में मदद दे।

मुक़ाबा (पु0) हस्बे हैसियत वज़अ़दार खुषनुमा और आला क़िस्म के जड़ाऊ भी बनाये जाते थे। हर नौजवान औरत के पास किसी न किसी हैसियत का रहता है। **देखें** सुहाग पाड़ा।

मूबाफ (पु0) चोटी को लपेटने की कपड़े की पट्टी। **~डालना** चोटी के बालों को कपड़े की पट्टी में लपेटना।

मेहंदी रचाना (क्रिया) मेहंदी के रंग से हथेलियों और तलुवों को रंगीन बनाना।

मेंड़ी/मेंडिया (स्त्री) माँग के दोनों तरफ माथे के किनारे किनारे गूँधकर जमाये हुये पेषानी के ऐसे छोटे बाल जो चोटी में शरीक न हो सकें और चेहरे पर लटक आयें। **गूंधना** के साथ बोला जाता है।

दूसरा बाल फुनूने लतीफा
पहली फस्ल मज़ामीर साज़ी
1. पेषा बाजासाज़ी

अद्दू (पु0) गट्टा। तब्ले और इसी क़िस्म के दूसरे बाजो की तनाबों को तंग, ढीला करने के चोबी गुटके जो तनावों में फंसे रहते हैं और हस्बेज़ुरूरत ऊपर नीचे किये जाते हैं। **देखें** तब्ला। **ठोकना** के साथ बोला जाता है।

उदोखाई/उदोखई (स्त्री) देखें ढुगढुगी।

एंडवी (स्त्री) चमड़े के तस्मों या कपड़े की धज्जियों का बना हुआ हल्क़ा जो तब्ले के पेंदे के साथ कसा रहता है जो तब्ले के लिए टेक और उसकी तनाबों के लिए रोक का काम देता हे। **देखें** तब्ला।

बाजा (पु0) लफ़्ज़ बजना से मुषतक़ और मुराद बजने वाली चीज़ है और इस्तिलाहे आम में वह तमाम मौसीक़ी के आलात जो तक़ारीब के ऐलान और शुहरत के लिए बजाये जायें। जिनमें गवैयों के वह सब साज़ भी शामिल है जो नग़मे के रुहे रवाँ होते हैं। बाजे और साज़ के मफ़हूम को वाज़ेह करने के लिए जुमला आलात को दो हिस्सों में तक़सीम करके एक जुज़ को बाजे और दूसरे को साज़े के नाम से मौसूम किया जाता है।

बाध (स्त्री) लुग़वी मानी सूत या तस्मों की डोरी या रस्सी इस्तिलाह में उन बंधनो या तनाबों को कहते हैं जिससे तब्ले का चिरमी गिर्वा सब तरफ से बंधा और खिंचा रहता है। **डालना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

बारह ताली (स्त्री) मजीरे बजाने वाली या मजीरे बजाकर गाने वाली औरतें। (गायन) **देखें** मज़ीरे।

बर्तक (पु0) बड़ी क़िस्म का संख। **देखें** संख।

बर्क/बर्ग (पु0) देखें झांज।

बर्क नवाज़/बर्ग नवाज़ (पु0) झाँज बजाने वाले जो बाजे बजाने वाली टोलियों में दूसरे बाजों के साथ बजाते हैं।

भाँट/भांड़ा (पु0) लफ़्ज़ भाँड़े का इस्तिलाही तलफ्फुज़। तब्ले का खोल जो लकड़ी या धात का बना हुआ गमले की षक्ल का ज़र्फ़ होता है जिसपर खाल मंढ़कर तब्ला तैयार किया जाता है। **देखें** तब्ला।

परन (स्त्री) ठेके के अलावा तब्ले के दूसरे मुसलसल बजनेवाले बोल।

पुड़ी (स्त्री) देखें गिर्दा या तब्लक।

पखावज/पख्वाज (स्त्री) एक ख़ास वज़अ का छोटा ढोल जो तब्ले के उसूल पर भवानीदास नामी किसी तब्ला नवाज़ की ईजाद कहलाता है। इसी बाजे को दो हिस्सों में तक़सीम करके बनाने से तब्ले की ईजाद हुई।

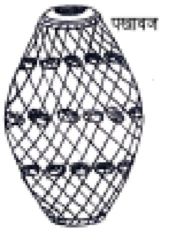

पुम्बई/पोम्बई (स्त्री) ढोल की क़िस्म का दखनी बाजा जो वहाँ भिखारियों में मुरव्विज है। इसका एक रुख चोब से रगड़कर और दूसरा हाथ की थाप से बजाते हैं।

पंज नौबत (स्त्री) पंज वक़्ता नौबत जो बादषाहों और अमीरों की ढ्योड़ी पर आठ पहर में पाँच मर्तबा बजाई जाये। **देखें** नौबत।

ताषा (पु0) लफ़्ज़ तास या तास का उर्दू तलफ़्फ़ुज़। नक्कारे की क़िस्म का बाजा जो कूंडे या उथलवाँ बड़े प्याले की षक्ल

के ज़र्फ़ पर खाल मंढ़कर तैयार किया जाता है जिसको एक आदमी गले में लटकाकर चोबी छड़ियों से बजाते हैं। जो इस्तिलाह में टापक टोई कहलाती है।

तालमेल (पु0) साज़ के सुर और बाजे की आवाज़ का मजमूई तनासुब या हम आहंगी। **~खाना, होना** साज़ और बाजे की आवाज़ में जोड़ मिला रहना, एक दूसरे का साथ देना।

तुमक्ना/तुमक्नारी (स्त्री) फ़ारसी लफ़्ज़ तँबक का हिन्दी या हिन्दुस्तानी तलफ़्फ़ुज़। **देखें** तँबक।

तँबक (स्त्री) बाजीगरों की ढोल्की।

तंतना (पु0) देखें तृंतृना।

तोड़ा (पु0) नाचने वाले का गत में ताल के ऊपर पैर के घुंगरू बजाकर साज़ के साथ हमआहंग होने का इषारा करना। गत आगे बढ़ाना, तेज़ करना, मुक़र्रिरह गत के अलावा जो बजाया जाये। **~लेना** गत की ताल पर नाचने वाले का पैर के घुंगरुओं की आवाज़ से सुरों का हमआहंग होना।

थाप (स्त्री) हथेली का टहोका जो तान के मौक़े पर तबले पर लगाया जाये यानी साज़ के चढ़ाव या उतार के सुरों का आखिरी सुर बनने के बाद पलटने से क़ब्ल ठैराव का इषारा जो तृबलची तृब्ले पर हथेली की ज़रब लगा कर दे। **देना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

टापक टोइया/टपक टोई (पु0/स्त्री) छड़ी, नेज़ेकी पोर, ताषा,नक्क़ारा और इसी क़िस्म के बाजों के बजाने की चोबें यानी छोटी छड़ियाँ या क़मच्चियाँ जो दायें बायें के लिए तादाद में दो होती है। **~करना** ताषे या नक़्क़ारे पर चोबों से दायें बायें ज़रबें लगाना।

टकोर (स्त्री) ताषे, नक़्कारे और इसी क़िस्म के बाजों पर टोई (छड़ी) की हल्की ज़र्ब जो धीमी आवाज़ निकलने को लगाई जाये। **देना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

सिंज (पु0) देखें झाँज।

टकरी/तकरी (स्त्री) देखें टकोरा।

टकोरा (स्त्री) ताषे, नौबत, नक़्क़ारे और इसी क़िस्म के बाजे बजाने की चोब या ढंडी। **देखें** टापक टोइय्या। टकरी और करताल बाज़ मुकामात पर उन चोबी डंडो की जोड़ को भी कहते हैं जिनको लड़ाकर यानी एक दूसरे पर मारकर बाजे के तौर पर ताल और सुर के साथ बजाते है। बहार के मौसम में शौक़ीन हिन्दू नौजवान जो डंडे बजाते हैं साज़ के साथ बजाकर बड़े बड़े करतब दिखाते है। **देखें** टापक टोइय्या।

टिल्ली (स्त्री) छोटी क़िस्म के मजीरे या घुंगरू की वज़अ़ की घंटियाँ जो बाजेवाले बाजों के साथ बजाते है या दफ़ की क़िस्म के बाजों के घेरों में बाजे के साथ आवाज़ देने को लगा रखते हैं।

ठेका (पु0) तब्ले की मुकर्रिरा आवाज़ें या बोल जो किसी ताल से मुतल्लिक़ हों। **लगाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** ताल पेषा साज़गिरी।

झाँज (पु0) मजीरे की क़िस्म का बाजा जो दो पतली पतली सपाट थालियों पर मुष्तमिल और छः सात इंच से दस बारह इंच कुत्र का होता है। इसके दोनों हिस्सों को दोनों हाथों में पकड़कर तालियों की तरह बजाया जाता है।

झड़पत्तियाँ (स्त्री) देखें टापक टोइया।

झन्नी (स्त्री) झाँज का इस्मे मुसग्गर। **देखें** झाँज।

झोंक (स्त्री) तब्ले पर थाप का ख़ास इषारा। तबलची का थाप के मौक़े पर ख़ाली देना सिर्फ इषारा करना। बाजा बजाने में वक़्फा जो ज़रा सी देर को हो। **दिखाना** के साथ बोला जाता है।

चाँटी (स्त्री) तब्ले के गिर्दे यानी मंड़े हुये चमड़े पर क़रीब एक गिरह चौड़े हाषिये का निषान जिसपर उंगलियों से ठोंग लगायी जाती है। **देखें** तब्ला।

चग़ान (पु0) देखें चोपई और दफ़।

चंग (पु0) देखें चोपई और दफ़।

चोब (स्त्री) देखें टापक टोइया।

चोपई (स्त्री) दायरे या दफ़ की क़िस्म का पाँच छः इंच चौड़े चोबी घेरे पर एकतरफ़ा खाल से मड़ा हुआ दहक़ानी बाजा। बाज झाँजदार होता है यानी उसके घेरे में छोटी क़िस्म के झाँज भी पड़े होते हैं। होली के तेहवार पर दहक़ानी नाच के साथ आमतौर से बजाया जाता है। **देखें** दफ़।

खंजनी/खंजरी (स्त्री) देखें डुगडुगी।

दाइरा (पु0) देखें चौपई और दफ़।

दफ़/ढफ़ (पु0) देखें चोपई, एक रूख़ा मंढ़ा हुआ घेरे की षक्ल का बाजा।

दमामा (पु0) देखें धौंसा।

दम्दमा (पु0) नक्क़ारे की जोड़ी में दायें यानी सीधे हाथ की तरफ के तबल की आवाज़। **देखें** नक्क़ारा।

दिनतिन/दीं तीं (स्त्री) तब्ले की आवाज़ के मख़सूस बोल।

दुहुल (पु0) देखें धौंसा।

दुहुल नवाज़ (पु0) दुहुल या धौंसा बजाने वाला।

धाक (पु0) नक्क़ारे की क़िस्म का जंगी बाजा। तादाद में दो होते हैं। सफर में या नक़लो हरकत के वक़्त ऊँट या खंजर की पीठ पर दायें बायें लटका दिया जाता है।

धपड़े (पु0) देखें झांज।

धौंसा (पु0) मामूल से बहुत बड़ी नाँद या गम्ले की षक्ल का खाल मंढ़ा हुआ बाजा जिसकी आवाज़ गरजदार और बहुत बड़ी होती है। फौज में या दूर परे आवाज़ पहुँचाने के लिए किसी जमाने में इस्तेमाल किया जाता था। इस जमाने में भी बाज ख़ास जुरूरतों पर इस्तेमाल किया जाता है। तबल, नक्क़ारा और ढंका भी इसी क़िस्म के मगर किसी कदर छोटे बाजों के नाम है।

ढफ़ (पु0) अरबी लफ़ज़ दफ़्फ़ बमानी पहलू का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ इस्तिलाहमे एक क़िस्म के बाजे की जो क़रीब छह इंच चौड़े घेरे के एक रुख़ पर खाल पंढ़ कर तैयार किया जाता है। हिन्दी में ढ़पला (ढप्ड़ा) घेरा, संस्कृत में मंडली, फ़ारसी में चग़ान, चंग, दफ और दायरे के नाम से मौसूम करते हैं। पूरब में बाज़ मुक़ाम पर चौपई भी कहते है।

चित्र ढफ पेज–138–178तक

ढफ़ली/ढ़पाली (पु0) ढफ़ बजाने वाला।

ढफुली/ढ़प्ली (स्त्री) ढफ़ का इस्मे मुसग्गर।

कहावत *अपनी अपनी ढफ़ल अपना अपना राग।*

ढुगडुगी (स्त्री) जुड़वाँ प्याले की षक्ल दोनों मुंह खाल गड़े छोटा सा बाज़ीगरों का बाजा जो एक हाथ में पकड़कर बजाया जाता है। इस बाजे के बीच में दो डोरियाँ बंधी होती हैं

जिन के सिरों पर मज़बूत गाँठ लगी होती है उनकी ज़र्ब से यह बाजा बनाया जाता है।

ढिमडिमी (स्त्री) देखें डुगडुगी।

ढंका (पु0) धौंसे की क़िस्म का बाजा लेकिन इसकी निसबत बहुत छोटा और हल्का होता है जिसे आदमी आसानी से गले में लटकाकर बजा सके। **बजाना** के साथ बोला जाता है।

बरसात का बज रहा है ढंका।
एक शोर है आसमाँ पे बर्पा।। (हाली)

ढोरू/ढेरू (पु0) देखें ढुगडुगी।

ढोम (पु0) साज़ या बाजा बजाने वाला पेषेवर।

ढोमनी (स्त्री) ढ़पालन। साज़ या बाजा बजाने वाली पेषेवर औरत।

ढोंडी (स्त्री) देखें ढका।

ढेरू/ढोरू (पु0) देखें ढुगडुगी।

ढप्ला/धप्ड़ा (पु0) देखें ढफ़।

ढ़िंडोरा (पु0) देखें ढंका।

ढिंडोर्ची/ढिंडोरिया (पु0) ढिंडोरा पीटने वाला शख़्स।

ढोल (पु0) फारसी लफ़्ज दुहुल का उर्दू तलफ्फुज़ मगर तलफ्फुज़ के साथ मफ़हूम भी बदल गया है उर्दू में ढोल दुहुल से मुखतलिफ़ बेलन की वज़अ़ का दोनों सिरों पर खाल मंड़ा हुआ बाजा कहलाता है। जिसका पेट ज़रा उभरा हुआ और सिरे किसी क़द्र दबे हुये होते हैं। **देखें** पखावज।

ढोलक (पु0) छोटा ढोल। **देखें** ढोल।

ढोलकी (स्त्री) ढोल का इस्मे मुसग्गर।

ढोलकिया (पु0) ढोल बजाने वाला।

रौषन चौकी (स्त्री) शाही जुलूस में नौबत नवाज़ो के बैठने का तख़्त जिसको जुलूस के आगे कहार कंधो पर उठाये चलते हैं।

ज़ेरो बम (पु0) नक़्क़ारे की जोड़ी का दायाँ और बायाँ। सीधे हाथ की तरफ का त़ब्ल, 'बम' और उल्टे हाथ की तरफ का तबल 'ज़ेर' और दोनों मिलाकर ज़ेरोबम कहलाते हैं। नीचे और ऊँची आवाज़ **देखें** नक़्क़ारा।

सर मंडल (पु0) देखें धौंसा।

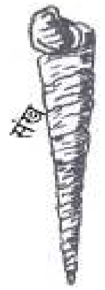

संख (पु0) एक क़िस्म का दरियाई जानवर के जिस्म का पोंगी की षक्ल का ख़ोल क़दीम ज़माने से मंदिरों में पूजापाठ के वक़्त या उसके एलान के लिए बजाया जाता है।

त़ब्ल (पु0) देखें धौंसा। त़ब्ल धौंसे की निस्बत छोटा होता है।

घोंगा (पु0) देखें संख।

धोतू ( ) देखें संख।

त़ब्ला (पु0) साज़ के साथ बजाने का हिन्दुस्तानी मषहूर बाजा जो गमले की षक्ल या प्यालानुमा मुंह खाल से मंड़ा हुआ जोड़वाँ (जोड़ीदार) होता है और इस्तिलाहमे दायाँ तब्ला याँ त़व्ला कहलाता है जिनमे माँ दायें से किसी कदर छोटा होता है। यह बाजा उंगलियों की ज़र्ब और हथेली की थाप से बजाया जाता है। 141 छूटा है।

तबल्ची (पु0) त़ब्ला बजाने वाला माहिर उसताद।

तब्लक़ (स्त्री) त़बले, ढोल और इसी क़िस्म के बाजों के मुंह का मंड़ा हुआ चमड़ा। **चढ़ाना, मंड़ना** के साथ बोला जाता है।

तब्ली (स्त्री) देखें तब्लक़। **~उड़ना** तब्ले ढोल और इसी क़िस्म के बाजे का मंड़ा हुआ चमड़ा फट जाना या उतर जाना।

तबलिया (पु0) देखें त़बलची।

तंतना (पु0) देखें नक़्क़ारा।

करताल (पु0) देखें टकोरा।

कोस (पु0) देखें धौंसा।
कैनी (स्त्री) देखें मजीरा।
खताली (स्त्री) आहनी सलाख का जोड़ा जो साज़ के साथ बतौर मजीरे के बजाया जाता है। **देखें** मजीरा।
खंजरी (स्त्री) देखें ढुगडुगी।
गट्टा/गट्टे (पु0) तबले की तनाबों मे लगे हुये चोबी गुटके। **ठोकना** के साथ बोला जाता है। **देखें** अद्ढू, तब्ला।
गजरा (पु0) तबले की तब्लक़ या गिर्दे का सर बंद। **देखें** तब्ला। **बांधना** के साथ बोला जाता है।
गिर्दा (पु0) देखें तब्लक़।
गंथालम (पु0) तब्ले की क़िस्म का दखनी बाजा। **देखें** तब्ला।
घाट (पु0) तबले की आठ तनाबों मे से हर एक तनाब जो उसके गिर्दे को चारों तरफ से घेरे रहती है। **~मिलाना** तबले की तनावों के गट्ठे ठोंककर गिर्दे के तनाब को दुरुस्त और सही करना।
घे (स्त्री) बायीं तब्ले की गंजीली बंद आवाज।
मजीरा/मजीरे (पु0) फैले हुये मुंह की पीत्ली कटोरियों की जोड़ जिन को टकराकर साज के साथ बतौर बाजा बजाया जाता है।

मजीरिया (पु0) मजीरे वाला। मजीरे बजाने वाला।
मुर्फ़ा (पु0) देखें ताषा।
मिरदंग/मिरीदंग (पु0) पखावज की क़िस्म का मगर उससे ज़्यादा लम्बा और पतला क़दीम वज़अ़ का ढ़ोल की क़िस्म का बाजा हिन्दुओं में ब्रह्मा देवता से मंसूब किया जाता है। **देखें** पखाज।

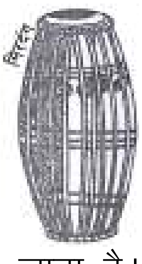

मंदल (स्त्री) देखें ढुगडुगी।
मंढल (पु0) देखें ढ़फ।
मंढली (पु0) मंढल बजाने वाला।
मुहरा (पु0) एक ठेके से दूसरे ठेके तक तबले पर तरतीबवार थाप लगाने को इस्तिलाह में मुहरा कहते हैं। **बजाना** के साथ बोला जाता है।
मैदान (पु0) तबले के गिर्दे या तब्लक़ का दरमियानी हिस्सा जिसपर हथेली की थाप लगाई जाती है। **देखें** तबला।
नाक़ूस (पु0) देखें संख।
नक़्क़ारा (पु0) तबले की वज़अ़ पर जोड़वाँ बाजा जो नौबत के साथ होता है और चोबों से बजाया जाता है। नक़्कारे की जोड़ में दायें तबल को 'बम' और बायें को 'ज़ेर' कहते है और दोनों को मिलाकर ज़ेरोबम। नक्कारे का दायाँ तबल बायें तबल से बड़ा होता है इसकी आवाज़ को इस्तिलाह में दमदमा और बायें तबल की आवाज को तंतना (तंत़ना) कहते हैं। **देखें** धौंसा।

नौबत (स्त्री) अमीरों और बादषाहों की ढ्योड़ी पर मुक़र्रिरा औक़ात में बजाने के बाजों का मजमूई नाम जो नक़्क़ारा, तबल और नफ़ीरी पर मुषतमिल होता है। बड़ी क़िस्म का जोड़ीदार तबल और नौबत बजाने का मकान जो अमूमन उमरा की ढ्योड़ी के फाटक के ऊपर बतौर बाला ख़ाना बना होता है।
नौबतख़ाना (पु0) नौबत नवाज़ों के बैठने।
नौबत नवाज़ (पु0) नौबत बजाने वाले पेषेवर माहिर।

2. पेषा साज़गिरी

उप अंग/उपांग (पु0) देखें नस्तरन।
अचल सुर (पु0) देखें बाज।

आड़ (स्त्री) देखें पीलक और जोआरी।

आस (पु0) साज़ के सुरों की मजमूई या मुफ़रिद आवाज़। साज़ के तारों की झंकार जो छेड से पैदा हो। **~देना** साज़ के चंद सुरों की आवाज़ मिलाना और हम आहंगी पैदा करना। चंद सुरों को तरतीब से बजाना, झंकार पैदा करना। फूँक से बजने वाले साज़ के सुर से ज़ाइद अज़ जुरूरत हवा निकलना।

इस्राज (पु0) सारंगी की क़िस्म का मगर उससे लम्बा, बंगाली साज़ जिसको कमाँचा से बजाया जाता है इसमें फौलादी तार की तुरबें होती हैं। सारंगी की तरह ताँत के तार नहीं होते बाज़ मुक़ामात पर इसको त़ाऊस कहते हैं। **देखें** त़ाऊस।

इकतारा (पु0) देखें तम्बूरा (तंबूरा) और आनन्द लहरी।

आलाप/अलाप (स्त्री) साज़ के सुरों की आवाज़ का उतार चढ़ाव। सुरों की ऊँची तान लै, तान और सुर।

एलबो सारंगी (स्त्री) अंग्रेज़ी साज़ बायलेन से मुषाबा सारंगी की क़िस्म का बाजा जिसमे के चार तार होते हैं और कमाँचा से बजाया जाता है।

अल्ग़ोज़ा (पु0) बाँसुरी से मिलता जुलता नफ़ीरी की क़िस्म का साज़। **देखें** नफ़ीरी।

आनंद लहरी (पु0) तँबूरे की क़िस्म का इकतारा साज़ जिसको भिखारी भजन गाते वक्त तुनतुनाते रहते हैं। **देखें** तंबूरा।

बाज (स्त्री) सितार के तार या तारों की वह आवाज़ जो धीमा और ऊँचे सुरों के साथ जारी रहे। इस आवाज़ के तीन दर्जे होते हैं। ऊँचा (चड़ाव का) धीम या दरमियानी नीचा (उतार का) पहले को टेप दूसरे को पंचम और तीसरे को खरज कहते है। **देखें** सितार।

बाँसरी (स्त्री) नफ़ीरी की क़िस्म का साज़ जो पत्ली क़िस्म के बाँस की पोर या चोबी नली का बनाया जाता है। जिसके सिरे पर पपिय्या लगा होता है जो मुंह की फूंक से आवाज़ देता है और सुरों के सूराख़ आवाज़ का उतार चढ़ाव बनाते हैं। नफ़ीरी की निस्बत इसका पपिय्या धीमी आवाज़ का और नली पत्ली और शुरू से आखिरी तक यकसाँ होती है अच्छे बजाने वाले जोड़ी बजाते है। षिमाल मग़रिबी इलाक़े में बाज मुक़ामात पर ऊद और बर्बत के नाम से मौसूम किया जाता है।

मुरली ( ) देखें बाँसरी।

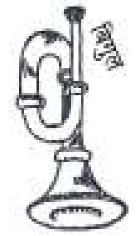

बर्बत (पु0) देखें बाँसुरी और नफ़ीरी।

बिगुल (पु0) नफ़ीरी की क़िस्म का बगैर सुरों का (बेसुरा) बाजा जो फ़ौज में किसी एलान के लिए बजाया जाता है।

बुलबुले तरंग (पु0) कमाँचा से बजाया जाने वाला सारंगी की क़िस्म का जापानी साज़ (ट्वेषी कोटो)

बंसी (स्त्री) सुरीले साज़ों में का एक सीधा सादा क़दीम साज़ जिसको कृष्ण देवता की ईजाद कहा जाता है। नफीरी इसकी इस्लाह शुदा सूरत है। जोड़ीदार बंसी मे सुरों की आवाज़ वाली सुरन बंसी और लै मिलाने वाली 'लै' बंसी कहलाती है।

बूक़ (पु0) देखें नफ़ीरी।

बेसुरा होना (क्रिया) साज़ के तार चढ़ाव की मुक़र्रिरा आवाजों यानी सुरों में अदल बदल या ग़लती होना।

बेल (स्त्री) गाने बजाने वाले का ईनाम जो मुक़र्रिरा उजरत के सिवा दिया जाये। उर्दू ए मुअ़ल्ला की ज़बान में बेल खैरात की रक़म को कहते थे। जैसे बेले का

हाथी। **ढाल्ना देना** के साथ बोला जाता है।

बेला (पु0) सारंगी की क़िस्म का बगैर तुर्बों का यूरोपियन साज़ जिसमें ताँत के चार तार होते है और कमानी से बजाया जाता है इसको चौबेला और चौतारा भी कहते हैं। **देखें** इलबो सारंगीं।

चहारगह ( ) देखें बेला।

बीन (स्त्री) वीना, हिन्दुस्तान का निहायत क़दीम साज़ जिसकी आसान और इस्लाह शुदा षक्ल सितार की

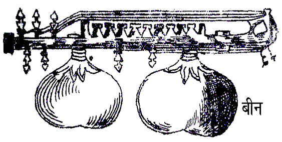

ईजाद है। दो ताँबों पर एक ढंड लगाकर बनाई जाती है। सुरों के उतार चढ़ाव के लिए इसमें पर्दे नहीं होते सिर्फ तार और तुरबें होती है और मिज़राब से बजाया जाता है।

वीना (स्त्री) देखें बीन।

चतरबीन ( ) बीन की एक क़िस्म जो मामूल से बड़ी और ज़मीन पर रखकर मुहरक से बजाई जाती है।

दुद्र बीन (दुद्रा बीन) बीन की एक दूसरी क़िस्म जो ईरान और अफ़गानिस्तान में रबाब के नाम से मषहूर है। यह सितार की तरह बग़ैर पर्दों का साज़ होता है। इसमें ताँत के छह तार होते हैं और कंघे पर रखकर मिज़राब से बजाया जाता है इसकी तब्ली चोबी और मख़रूती होती है।

बेनू (पु0) बाँसूरी की क़िस्म का क़रीब साढ़े छह फुट लम्बा क़दीम वज़अ़ का उड़ीसा वालों का बाजा।

भान (स्त्री) देखें शुआ़अ्।

भानी (स्त्री) सितार या सारंगी की तुर्बों की धीमी झंकार। दिल पसंद मौसमी गीत।

भोंगा (पु0) देखें पोंगा।

पपय्या/पपइये (पु0) देखें चिकारी।

पर्दा (पु0) साज़ की सुर की आवाज़ का मुक़ाम अमूमन और हारमोनियम या इसी क़िस्म के साज़ मे सुर का धर या उसका ढक्कन खुसूसन पर्दा कहलाता है।

परसरानी बीन (स्त्री) मामूली क़िस्म का तूँबरा जिसमें सिर्फ तीन तार होते हैं। **देखें** तँबूरा।

पल्टा (पु0) साज़ से मुत्अल्लिक़ बाज़ सुरों की ऊँची नीची तरतीब। गाने से मुत्अल्लिक़ तान की क़िस्म के सुरों की तरतीब। ठाट का उतार। **लेना** के साथ बोला जाता है। **देखें** ठाट।

पंचम (पु0) सितार के एक सुर की आवाज़। **देखें** बाज़।

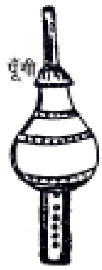

पोंगा (पु0) देखें बिगुल।

पूंगी (स्त्री) नफ़ीरी का संगती साज़। जो एक क़िस्म की बग़ैर परदों की एक सुरी नफ़ीरी होती है और नफीरी के साथ लै मिलाने को पूनकारी के तौर पर बजायी जाती है जिससे सिर्फ मिलाने को पूनकारी के तौर पर बजायी जाती है जिससे सिर्फ पून की आवाज़ निकलती रहती है। सपेरों का सुरीला साज़ जो जुड़वाँ बाँसूरी की क़िस्म का होता है। जिसके सिरे पर फूँक भरने को एक छोटी तौंबी लगी रहती है। इस को बाज़ मुक़ामात पर तौंब्ड़ी और बाज़ जगह मजीदी कहते हैं। तौंब्ड़ी नाम दरअस्ल तौंबी लगाने की वजह से पड़ गया है।

प्यानो (पु0) बहुत से पर्दों का हारमोनियम की क़िस्म का मग़रबी साज़।

पेषकार (पु0) देखें साज़िंदा।

पेषकारा (पु0) ठेके का एक ख़ास बोल। **देखें** ठेका पेषा बाजासाज़ी पृ0

पीलक (स्त्री) हाथी दाँत की छोटी सी तख़्ती जो सारंगी के निचले सिरे (त़व्ली) के ऊपर रोदे यानी ताँत के तार खिंचे

होते है। जिस से तार की छंकार साफ़ रहती है। सितार साज़ो की इस्तिलाह में जो आरी कहलाती है। **देखें** सारंगी।

फूँक देना (क्रिया) फूँक निकलना। **देखें** आस देना।

तारदान (पु0) देखें पीलक।

तारकष (पु0) सारंगी या सितार के तारों की खूंटियाँ जिन पर सुरों के, तारों के सिरे लिपटे रहते और हस्बेजुरूरत तंग, ढीले किये जाते हैं।

ताल/ताली (स्त्री) लुग़वी मानी हतेलियों को आपस में एक दूसरे पर मारकर बजाना। मौसीक़ी की इस्तिलाह में लै की तेज़ी या कमी या बाक़ाइद्गी मालूम होना। साज़ के मुअय्यना सुरों के बोलों की मौज़ूनियत। सुरों की मुतवाज़िन आवाज़ जिसकी इकाई ज़र्ब पर सम होता है। ताल की बहुत क़िस्मे हैं जिनमे चंद मषहूर है। जैसे इकताला चौताला, आड़ा चौताला, धीमा चौताला। **देना** के साथ बोला जाता है। ताल को ज़ाहिर करने के लिए त़ब्ले पर ठेका बजाया जाता है। **देखें** ठेका पेषा बाजा साज़ी पृ0।

तान (स्त्री) साज़ के सुरों की आवाज़ का मुसल्सल चड़ाव उतार जो तेज़ी के साथ हो। **लेना** के साथ बोला जाता है।

तख़्त (पु0) देखें जो आरी।

तरकी/तरकीन (स्त्री) देखें तब्ली।

तुरम (पु0) देखें बिगुल।

तुरई (स्त्री) देखें पोंगी।

तुकमा (पु0) सितार की तुर्ब का तार पिरोने का ढाँड़ में बना हुआ सूराख जो हर तुर्ब के लिए जुदा जुदा होता है जिसमें से तार को निकालकर खूंटी में बाँध दिया जाता है। **देखें** सितार।

तँबूरा (पु0) अरबी लफ़्ज़ तँबूर का उर्दू रस्मे ख़त बग़ैर पर्दों और

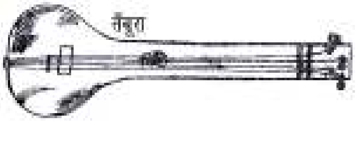

तुरबों के चार तार वाला सितार की क़िस्म का मामूली साज़। जिस तरह नफ़ीरी के साथ पोंगी लै मिलाने को बजाई जाती है। इसी तरह सितार के साथ इस को गूंज के लिए बतौर संगत बजाया जाता है। तँबूरे की मामूली क़िस्म एकतारा, तुनतुनी और आनंद लहरी के नाम से मौसूम और भिकारियो से मंसूब की जाती है। तँबूरा इतावली ज़बान में ढोल को कहते है। **देखें** आनंद लहरी।

तँबूरा बीन (स्त्री) बगैर पर्दों और तुरबों का सितार की क़िस्म का चार या छह तारों का साज़ जो एक तोंबे और ढाँड़ पर मुष्तमिल होता है।

तँबूरची (पु0) तँबूरा नवाज़।

तंतरी (पु0) गवय्या, ढोम।

तुनतुनी (स्त्री) देखें आनंद लहरी और तँबूरा।

तोंब्ड़ी/तुमरी (स्त्री) देखें पोंगी।

थुत्थी (स्त्री) देखें सरनू।

थड़ी (स्त्री) देखें जोआरी।

टीप (स्त्री) ऊँचा सुर या ऊँची लै सितार के एक सुर की आवाज़। **देखें** बाज।

टेक (स्त्री) देखें पीलक।

बंद ( ) देखें टीप।

ठाट (पु0) साज़ के वह सुर जिनकी धीमी और तेज़ या ऊँची और नीची मुक़र्रिरा आवाज़ों से राग या राबनी के बोल निकलते हैं। जिसको मौसीक़ी की इस्तिलाह मे कोमल और तीव्र को मुक़र्रर करना कहा जाता है। **~बजाना** गत बजाना, गाने का समा बाँधने के लिए साज़ के पर्दों से सुरीली और मौज़ूँ आवाज़ पैदा करना।

जाचक (पु0) साजिंदा, त़बल्चिया, सारंगिया।

जब (स्त्री) देखें सुरघोटा और मुहरक।

जलतरंग (पु0) ऊपर तले ढके हुये दो प्यालों की षक्ल का साज़ जिसमे पानी भरा और दरमियान में एक तार पड़ा रहता है। तार को पकड़कर चोब या एक ख़ास क़िस्म के बने हुये तार से बजाया जाता है। इसके पानी की कमी बेषी आवाज़ की कमी बेषी का सबब होती है।

जौ (पु0) इसका तलफ़्फ़ुज़ 'जब' भी किया जाता है। **देखें** सरघोटा और मुहरक पृ0 53 **किस पेषे का शब्द है।**

जू आरी (स्त्री) सारंगी की तरह सितार की त़ब्ली पर लगी हुई हाथी दाँत या किसी और चीज़ की तख़्ती जो तारों को त़ब्ली की सतह से ज़रा ऊपर को उठाये रखती है। इसमे तारों के लिए खाँचे बने होते है। जिनमे तार बैठे होते है। जूआरी लफ़्ज़ जूए से मुषतक़ है। बाज़ साजिंदे जवाहरी कहते है। सारंगी मे इसी चीज़ को पीलक कहा जाता है। **देखें** पीलक और सितार।

पाया ( ) देखें जूआरी।

चाबी/चापी (स्त्री) गुंज, गूंज। सारंगी, सितार और इसी क़िस्म के दूसरे साज़ो के तार की खूँटी या खूँटिया जिसमें तार का सिरा लिपटा होता है और बवक्त जुरूरत उसके ज़रिये तार को ढीला किया या ताना जा सकता है। **~ऐंठना, कस्ना, मरोड़ना** साज़ के तार या तारों को खींचने या तानने के लिए चाबी को फेरना, बल देना। **देखें** सितार।

चतरबीन (स्त्री) देखें बीन।

चिकारा (पु0) सारंगी की क़िस्म का तीन तार और पाँच तुरबों वाला साज़ इसके बाज के तार घोड़े की दुम बालों

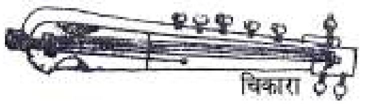

के बनाये जाते हैं। पंजाब के इलाक़े मे साधुओं में मुरव्वज है।

चिकारी (स्त्री) सितार और इसी क़िस्म के दूसरे साज़ों के बाज के तार जिनको मिज़राब या किसी चीज़ से छेड़कर आवाज़ पैदा की जाती है और राग या रागनी के बोल निकाले जाते हैं। यह तार हर साज़ में मुख़्तलिफ़ तादाद के होते हैं। आला और मुकम्मल क़िस्म के सितार मे उनकी तादाद सात होती है और तँबूरे मे चार। तुर्ब की छोटी खूँटी। पपय्या सितार की एक ख़ास खूँटी का भी नाम है जो टेप के सुर में मिलाई जाती है और नफीरी के मुंह पर लगी हुई बाज को भी कहते हैं। **देखें** सितार और नफ़ीरी।

चौबेला/चहारगह (पु0) देखें बेला।

ख़निया (पु0) साज़िंदा, बाजा नवाज़।

दिल रुबा (पु0) देखें इसराज।

दो तारा (पु0) दो चिकारियों वाला सितार की क़िस्म का साज़।

दुहरा (पु0) बजाना के साथ बोला जाता है। **देखें** पल्टा।

धौंकनी (स्त्री) हारमोनियम के सुरों की फूक्नी यानी सुरों में हवा भरने का आलः।

ढाँड (पु0) सितार की ढंडी जिस पर पर्दे बने और तार तने होते हैं। **देखें** सितार।

jkx ¼iq0½ ns[ksa lqjA

jkx cktk ¼iq0½ ns[ksa lkt+A

रागनी (स्त्री) देखें सुर।

रबाब (पु0) ईरानी साख़्त का छोटी क़िस्म का बगैर परदों का सितार। इसमें छह तार ताँत के होते हैं।

चित्र रबाब।

रुद्रा बीन (स्त्री) देखें बीन।

रुदे (पु0) सारंगी की चिकारियाँ यानी ताँत के तार या तानें जिन से बहुत ऊँची और गुंजीली आवाज़ निकलती है जो तादाद में चार होती है। **देखें** सारंगी।

रन सिरिंग (पु0) संख की क़िस्म का क़दीम ज़माने का फौजी बिगुल।

सारन/सारान (पु0) सितार और इसी क़िस्म के दूसरे साज़ों के पर्दे जो ढाँड़ पर मौज़ूं फास्ले से बंधे होते हैं और जिन पर सितार के बाज के तार तने रहते हैं। **देखें** सितार।

सारंगी (स्त्री) हिन्दुस्तान का मषहूर साज़ जिसमें चार ताँत की तानें और अमूमन तेरह तुर्बें होती हैं और कमाचा से बजाया जाता है। मौसीक़ी में इसका शुमार मुकम्मल साजों में किया जाता है। औरतों की आवाज से ख़ास मुनासिबत रखता है बाज़ मे नौ से सत्रह तक तुर्बें होती है।

सारंगिया (पु0) सारंगी बजाने वाला पेषेवर उसताद।

साज़ (पु0) सुरीले बाजे जिस मे इंसान की आवाज के बोल बजें या जिसकी आवाज़ मे लै और सुरह हो। मुख्तलिफ बाजों का मजमूआ जो गवय्ये के साथ बजाये जायें। **~छेड़ना** साज़ बजाना।

साज़गर (पु0) सुरीले बाजे बनाने वाला कारीगर, हिन्दुस्तान मे साज़गिरी के मषहूर मुक़ामात हस्बेज़ेल थे और अब भी इन मुकामात पर उन चीजों के बनाने वाले कारीगर थोड़े बहुत मौजूद है। मद्रास के इलाके मे तंजोर, मालाबार, नीलगिरी। **बंगाल** के इलाके मे कलकत्ता मुर्षिदाबाद, ढाका, पुष्तापुर। मुमालिक मुत्तहिदा **आगरा व अवध** के इलाक़े मे लखनऊ, बनारस, रामपूर और देहली।

साज़गिरी (स्त्री) सुरीले बाजे बनाने का पेषा।

साज़िंदा (पु0) सुरीला बाजा बजाने वाला पेषेवर।

साया बजाना/सोहा बजाना (क्रिया) सुहाग का ग़लत तलफ़्फ़ुज़, सुहाग से साया साज़िंदों की इस्तिलाह हो गयी है; मुराद शादियाने बजाना या शादियों के बाजे बजाना। **प्रयोग** शादी मे साया बजाने के लिए शहर से साज़िंदे बुलाये गये थे।

सितार (पु0) हिन्दुस्तान का मषहूर और क़दीमसाज़ मौसूमा बीन की क़िस्म का इस्लाहषुदा साज़ जिसका मूजिद हज़रत अमीर खुसरू को बताया जाता है। इसकी एक सीधी सादी शकल तंबूरा है। सितार अमीर खुसरू का रख हुआ नाम है। बीन को मौसीक़ी की देवी सरस्वती का दिल पसंद बाजा माना जाता है। बीन मे तीन तार होते थे मगर सितार मे पाँच से सात तक तार होते है। ढाका मे आला क़िस्म के सितार तैयार होते हैं। मद्रास के साजगर सितार को **चित्तारी** कहते है। जो ग़लिबन सहतारी का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है। सितार की क़िस्मो मे सब से ज़्यादा **मद्धम, चारगह और तुर्बदार** सितार मषहूर है। **मद्धम** सितार अमीर खुसरु की ईजाद है। इसकी ढाँड लम्बी और अंदर से ख़ाली होती है इसके पर्दे ऊपर नीचे सरकाये जा सकते है और तादाद मे सोला हाते है मषहूर पर्दे **खरज पंजम** और **टीप** के होते हैं। **~**बाज के तार पाँच या छह होते हैं इनमें पहला तार फौलादी और बारीक होता है और मद्धम कहलाता है उसके बाद दो तार पीत्ली और फिर एक तार फौलादी होता है और आखिर में तीन तार संगत के होते हैं। जो बराबर आवाज़ देते रहते हैं।

सितारिया (पु0) सितार बजाने वाला उस्ताद।

सितार नवाज़ (पु0) देखें सितारिया।

सुर (पु0) साज़ के किसी पर्दे की आवाज़, हवा का सदमा या तमव्वुज। पाँच हजार फी सेकेंड तमव्वुज से ऊँचा 'सुर' और दो हज़ार पाँच सौ फी सेकेंड तमव्वुज से नीचा सुर पैदा होता है सुर से रूह को हर्कत और लै से स़द्मा होता है सुर और लै की ग़ायत आह है। साज़ के सात पर्दों की सात मुख़तलिफ़ आवाजें। इन आवाजों के उलट फेर और तरतीब से जो आवाज़ पैदा की जाती है वह इस्तिलाहमे राग और रागनी कहलाती है। **~देना** फूँक से बजने वाले साज़ के पर्दे की वजह किसी ख़राबी, ज़ाइद अज़ जुरूरत से ज़्यादा हवा निकलना। **देखें** आस देना। **~बिगड़ना** साज़ के पर्दे की आवाज़ ख़राब या ग़लत होना। **~मिलाना** साज़ के पर्दों या सुरों की आवाज़ को बोलों के मुताबिक़ करना।

सर बथ (पु0) ताऊस से मिलता जुलता दखन वालों का एक साज़ जो एक खोखली ढाँड़ की षक्ल का जिसके सिरे पर किसी परिंद की षक्ल बनी हो, बनाया जाता है। इसमें ताँत की छह ताने और चार तार होते हैं। **देखें** मोर बीन।

सुर बहार सितार (पु0) आम मुरव्विजा सितारों से ज़्यादा तुरबों वाला खुषनुमा बना हुआ सितार इसमें बारीक फौलादी तारों का एक मजमूअ़ा, बाज के तारों और परदों के नीचे होता है जो गम्मत (सरगम) की आवाजों के साथ गूँजते हैं। इन तारों की खूंटियाँ ढाँड़ की बग़ली में होती है इसका मूजिद गुलाम मुहम्मद खाँ नामी कोई लखनवी था जिसने अल़ाप के लिए इसको ईजाद किया था।

सुर सरिंग (पु0) त़ाऊस की क़िस्म का बगैर तुरबों का सितार जो सीता राम दास पुष्ता पूरी (बंगाल) की ईजाद कहा जाता था।

सुर सरिंगा (पु0) प्यारे खाँ नामी का ईजाद किया हुआ सितार की क़िस्म का बाजा जो महावती, कछ्पी और रुद्रा बीन का मुलख्ख़स है इसमें छह तार और ऊपर सिरे पर एक ताँबा भी होता है। **देखें** मोरबीन और त़ाऊस।

थरु चनम् ( ) देखें सुरना।

पच्चम ( ) देखें सुरना।

नग सुरम् ( ) देखें सुरना।

सरिस्का/सुरसिंगा (पु0) कर्ना की वज़अ़ की लम्बी पौंगी। **देखें** करना और पोंगी।

सर्गम (पु0) देखें सुर।

सुरघोंटा (पु0) बीन की एक ग़िस्म को बजाने की मख़रूती शक्ल की छह इंच लम्बी चोब जो उसके लिये मिज़राब का काम देती है। बाज़ साज़िंदे **मूरक** या **मुहरक** कहते हैं।

सुरना (पु0) पौंगी की क़िस्म के बाजे। **सुरसेंगा** भी इसी क़िस्म के बाजे का नाम है सुर बमानी जष्न और नेयाना/नेयानी बमानी बंसी, जष्न या शादी के मौक़े पर खुषी का एलान करने को क़दीम ज़माने में बजाया जाता था और अब भी कहीं कहीं इसका रवाज है। जिस तरह बाज़ कौमों में शादी का एलान करने को बंदूकें छोड़ते हैं। **देखें** शहनाई और करना।

सुरनाई (स्त्री) सुर बमानी जष्न और नाई बमानी ने यानी जष्न या शादी की तक़रीब पर बजाने की ने। **देखें** नफ़ीरी।

सुरिंग (पु0) बाँसरी की क़िस्म का षिव देवता का मक़बूल बाजा।

सरनो/षरनो (पु0) हिन्दुस्तान के षिमाल मग़रिबी सरहदी सूबेवालों का मष्क का क़दीम बाजा।

सुरुद (पु0) बगैर परदों का सितार की क़िस्म का

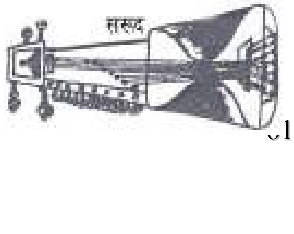

मिज़राब से बजाया जाने वाला पंजाब वालों का बाजा। बाज़ में सात से ग्यारह तक ताने और बग़ली तार भी होते हैं।

सम (पु0) सुर की तरतीब वार आवाज़ के दरमियान का वक़्फ़ा मुक़र्रिरा ताल, जहाँ से दोबारा सुर या राग बजाने को लौटें।

सुंदरी (स्त्री) छोटा सितार। **देखें** सारन।

संगत (पु0) मद्धम सितार के आखिरी दो तार जो राग या रागनी बजते वक़्त बराबर आवाज देते रहते हैं। साजिंदे के साज़ की आवाज़ के साथ लै मिलाने वाला। साथी बाजेवाला, साथी गवैय्या जो राग के साथ लै मिला दे। जुड़वाँ बाजों में का एक बाजा जैसे तब्ले का बायाँ।

संगतिया (पु0) देखें संगत।

संख ( ) देखें कर्ना।

शादियाना (पु0) शादी ब्याह या जष्न के मौकों पर बजने वाले बाजे। **बजाना बजना** के साथ बोला जाता।

शुआअ़ (स्त्री) सितार या सारंगी की तुरबों की गूंज या झंकार जो बाज के तारों को छेड़ने से गूंजती है।

शहनाई ( ) देखें सुर्ना।

शहपूरा (पु0) बड़ी किस्म का तँबूरा। **देखें** तँबूरा।

ताऊस (पु0) बेले की क़िस्म का साज़। बाज़ मुक़ामात पर बेले ही को ताऊस कहते हैं। बनावट में मोर की शक्ल से मिलता जुलता होता है और यही उसकी वजह तस्मिया है। इस साज़ में चार तार तीन फ़ौलादी और एक पीत्ली होते हैं। इसके अलावा सोला पर्दे और सोला तुऱ्बें होती है। **देखें** मोरबीन और बेला।

तब्ली (स्त्री) सितार का निचला सिरा या पेंदा जो ताँबे की शक्ल का और ऊपर से हमवार होता है। **देखें** सितार। ढोल ताषे तब्ले और इसी क़िस्म के बाजों के मुंह पर मँड़ी हुई खाल तब्लक कहलाती है। **देखें** सितार।

तुर्बें (स्त्री) सितार या सारंगी के गूंज के तार जो उसकी ढाँड़ की सतह से तादाद में सात से सत्रह तक उतार चढ़ाव से लगाये जाते हैं। आमतौर से नौ होते हैं। जिनमें आठ गुमत के और एक उनके नीचे। यह कुल तार चिकारियों की आवाज़ से गूंजते यानी बजने वाले तारों की आवाज़ से गुमकते है। **देखें** सितार और सारंगी।

तुरब्दार सितार (पु0) देखें सुर बहार सितार।

तँबूर (पु0) देखें तँबूरा।

ऊ़द (पु0) सारंगी की क़िस्म का एक साज़।

ग़िच्का (पु0) देखें सारंगी।

ग़च्की (स्त्री) देखें सारंगी।

क़ानून/क़ानूनचा (पु0) मिस्तर की वज़अ़ का तेईस फौलादी तारों का एक क़िस्म का साज़। इसके कुल तार तह ताले में बँटे होते हैं और चोबी मुहरक से जिस को इस्तिलाह मे **'जौ'** और **सुर घोटा** भी कहते है, बजाया जाता है।

क़र्ना (पु0) देखें करना।

काँटा (पु0) सितार की तब्ली या सारंगी की कोठी की बाड़ के बीच में हाथी दाँत या किसी धात की जड़ी हुई एक छोटी सी मेख़ जिसमें चिकारियों यानी बाज के तारों के सिरे बाँधे जाते हैं। **देखें** सितार।

कर्ना (पु0) पोंगी की वज़अ़ का बहुत लम्बी और ऊँची आवाज़ का साज़। **देखें** सुर्ना।

कमाँचा (पु0) कषमीर वालों का सारंगी की क़िस्म का साज़ जो जसामत मे सारंगी से बड़ा और कमानी से बजाया जाता है।

कमानी (स्त्री) सारंगी बजाने का घोड़े की दुम के बालों की तान के साथ बनाया हुआ गज, सारंगी बजाने के लिए उसकी

बालों की तान को बाज पर रगड़ते हैं। **देखें** सारंगी।

कम्बो (स्त्री) अंग्रेजी हर्फ एस (s) की शकल की पोंगी।

कमसुरा/कनसुरा (पु0) साज़ के एक सुर के बराबर का दूसरा उतरा हुआ धीमा सुर। सुर के तार की सितार या सारंगी की खूँटी। हारमोनियम की आवाज़ को कमती बढ़ती करने वाली खूंटी।

किंक (स्त्री) देखें आनंद लगहरी।

कोठी (स्त्री) सारंगी का निचला फैला हुआ हिस्सा जो अन्दर से खाली और सितार के तोंबे की बजाये होता है।

खूँटी (स्त्री) देखें चाबी और कनसुरा (कमसुरा)।

गत (स्त्री) साज़ के परदों की मुकर्रिरा और मजमूई आवाज़ या बोल जिनपर साज़ बजाना शुरू किया जाये। **~बजाना** बोल बजाना, लै छेड़ना। **~भर्ना** नाच का ठाट सोला अअ़ज़ा की हरकत जो नाचते वक्त नाचने वाला दिखाये।

गिरह (स्त्री) देखें सम।

गज़ (पु0) देखें कमानी।

गुलू (पु0) सितार की ढाँड़ और तोंबे के जोड़ का मुक़ाम जो रपटवाँ बना होने की जगह से जोड़ को छिपा लेता है। **देखें** सितार।

गुमक (स्त्री) देखें भान और शुआअ़।

गम्मत (स्त्री) सरगम। **देखें** सुर।

गोपी जंतर (पु0) देखें आनंद लहरी।

धुरच (स्त्री) देखें जुवारी।

घोड़ी (स्त्री) देखें जोआरी।

लर्ज़ (स्त्री) एक ख़ास क़िस्म की तुर्ब जिसके ऊपर पतला पीत्लीतार बला हुआ होता है। जो एक ख़ास वज़अ़ की बीन में लगाया जाता है। जिसको सिर्फ माहिरे उस्ताद बजा सकता है। **देखें** शुआअ़, भान।

लै (स्त्री) राग के मात्रों को मदद देने वाली आवाज़। हवा के सद्मा ए तमव्वुज की गिनती का इस्तिलाही नाम **लै** है। सुर का तवाजुन यानी सुर के तमव्वुज़ की मुतवाज़िन आवाज़। **निकालना** के साथ बोला जाता है।

लै बंसी (स्त्री) देखें बंसी।

लैकार (पु0) लै मिलाने वाला साज़ जो नफीरी और सितार के साथ राग की आवाज़ की मदद को होता है लै मिलाने वाला संगत।

लैकारी (पु0) साज़ के साथ या साज़ पर लै मिलाने वाला संगत।

मात्रा (पु0) देखें सुर।

मान (पु0) देखें सम।

मुटठा (पु0) सितार की ढ़ाँड़ का ऊपर का खुषनुमा बना हुआ सिरा जिसमे बाज़ की खूँटियाँ लगी होती है। **देखें** सितार।

मजीदी (स्त्री) देखें पोंगी।

मचंग/मुरजौंग (पु0) सह शाखा बर्छे की शक्ल का तारवाला छोटा सा एक सुरा क़दीम साज़। इसकी आवाज़ बहुत सुरीली होती है।

मदाख़िल (स्त्री) सुर बहार सितार के ढाँड़ और तब्ली पर हाथी दाँत का बना हुआ हाषिया।

मुरजौंग (पु0) देखें मचंग।

मिज़राब (स्त्री) सितार और इसी क़िस्म का साज़ बजाने का सुल्सनुमा बना हुआ आहनी छल्ला। **देखें** सितार।

मगबीन (स्त्री) दखन वालों का बंसी की क़िस्म का बाजा जिसमे आठ सूराख़ ऊपर और एक नीचे होता है।

मोरबीन (स्त्री) वह बीन जिसका सिरा मोर के मुंह और गर्दन की शक्ल का बना हो। **देखें**

महा तँबूरा (पु0) बड़ी क़िस्म का तँबूरा जो अमूमन नाटक अखाड़ों और दंगलों मे बजाया जाता था।

महाती बीन/महती बीन (स्त्री) हिन्दुस्तान का सबसे क़दीम तार वाला साज़ जिसका मूजिद नारो साधू बताया जाता है। इस बीन में पाँच तार ऊपर और दो या तीन तार पहलू मे लै के होते है जिनसे लै मिलाई जाती है। इसका बजाना मुष्किल है माहिरे संगत ही बजा सकते है। इसके दोनो सिरों पर तोंबे होते है। मामूल से बड़ी और बहुत ऊँची आवाज़ की होती है। इसलिए गवय्ये की आवाज़ के साथ नही बजाई जाती। **देखें** बीन।

मेंड़ (स्त्री) सारन की ऊपर की कोर जिसपर सितार के तार छेड़ के साथ लग्गा खाते हैं। सितार के पर्दे की उभरी हुई कोर। **देखें** सारन।

नाद तरंग (पु0) देखें महा तँबूरा।

नर सिंघा (पु0) देखे कर्ना।

नस्तरंग (पु0) षिमाल मग़रिबी सरहदी सूबेवालों का सितार या सारंगी की क़िस्म का साज़।

नफीरी (स्त्री) बाँस्री की क़िस्म का इस्लाह शुदा हिन्दुस्तान का क़दीम सुरीला साज़ नफ़ीरी के पपिय्ये को **चिकारी** कहते है।

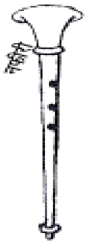

नैरी (स्त्री) देखें नफ़ीरी।

हारमोनियम (पु0) धौकनी से बजने वाला यूरप वालों का बाजा। आम साज़ों के मानिंद इसमें भी सुरों के पर्दे होते है लेकिन यह साज हिन्दुस्तानी मौसीक़ी के लिए मौज़ूँ नही आला मौसीक़ी का साथ नहीं देता। इसलिए बड़े गायक या नायक उस पर नही गाते।

दूसरी फस्ल नक़्क़ाषी

1. पेषा मुसव्विरी

अबरक उतारना (क्रिया) अबरक के वरक़ पर तस्वीर का **चर्बा** लेना। सच इस तरह के अबरक के वरक़ को तस्वीर के ऊपर रखकर उसके ख़तो ख़ाल के निषान लगा लेना।

आबी रंग (पु0) तस्वीर मे भरने का या तस्वीर के ख़तोख़ाल बनाने का पानी में घोलकर तैयार किया हुआ रंग जिसको अंग्रेज़ी मे वाटर कलर कहते हैं। **भरना** के साथ बोला जाता है।

आरतंग/अर्ज़ंग (स्त्री) मानी नक़्क़ाष की तस्नीफ की हुई नक़्क़ाषी की किताब का नाम। नक़्क़ाषों के काम करने का मुसत्ता सख़ता या मोटे मुक़व्वे का पट्ठा।

इर्तिफ़ाई नक़षा (पु0) खड़ा नक़्ष किसी चीज़ का क़ामती यानी खडा नक़्षा जिसमे उस चीज़ की बुलंदी और वज़अ़ ज़ाहिर हो।

इस्पंच (पु0) एक आबी जानवर का ख़ानेदार और नर्म जिस्म जो पानी से निकलने के बाद मुर्दा हो जाता है और तस्वीर या इसी क़िस्म की दूसरी चीज़े धोने और साफ़ करने के काम मे लाया जाता है।

आस्मान (पु0) किसी तस्वीर का पसमंज़र। **~करना** तस्वीर का पसमंज़र बनाना या दुरुस्त करना।

दायरा कष ( ) देखें परकार।

बुर्ष (पु0) तस़ावीर मे रंग भरने की बालों की बनी हुई गाव दुम शक्ल की फुरेरी हस्बेजुरूरत छोटी बड़ी बनाई जाती है। बुर्ष अंग्रेजी लफ़ज़ है जो कस्रते इस्तेमाल से उर्दू में शामिल हो गया है।

मुख़तलिफ जुरूरतों के लिए मुख़तलिफ इक़साम के बनाये और बुर्ष के नाम से मौसूम किये जाते हैं।

पर्दाज़ (स्त्री) तस्वीर की तकमील सफ़ाई और इसके अतराफ़ आराइषी काम की तैयारी। इसको इस्तिलाहमे तैयारी का भी हाथ कहते हैं।

परकार (स्त्री) दायरा खींचने का क़लम, दो नुक़तों के दरमियान फ़ास्ला नापने का आला।

परवाना (पु0) देखें झुरमुट।

पोता (पु0) तैयार तस्वीर पर रंग की हिफाज़त के लिए ख़ास क़िस्म का तैयार किया हुआ पुचारा। **~फेरना** तस्वीर पर रौगनी रंग करना।

पोते का बुर्ष (पु0) तस्वीर पर रौग़नी रंग फेरने का बुर्ष।

पैमाना (पु0) पैमाइषी आलः, फुट पट्टी, नाप की तख़्ती, मिस्तर।

पैमानाकषी (पु0) किसी नक़्षे या तस्वीर की नाप लेना या नापकर अंदाज़ा करना। तैयारी मे नापकर मुक़ाबला करना।

तस्वीर (स्त्री) किसी जिस्म की अक़्सी या क़लमी हूबहू नक़ल। **~लेना** फोटो से किसी चीज़ का अक्स हासिल करना।

तैयारी का हाथ (पु0) फेरना के साथ बोला जाता है। **देखें** पर्दाज़।

टिपाई (हासिल क्रिया) देखें टीप्ना, टीप करना।

टीप (स्त्री) क़लमकारी। तस्वीर मे हस्बे मौक़ा रंग भरने का अमल। अक्सी तस्वीर में

हल्के या गहरे अक्स को सही और दुरुस्त करने का अमल, धब्बे साफ करने या भरने का काम। **~करना** तस्वीर के धब्बे दुरुस्त करना या हस्बे जुरूरत या मौक़अ़ रंग भरना।

टीपना (क्रिया) *देखें टीप करना।*

जद्दल (स्त्री) तस्वीर के गिर्द हाषिये का ख़त।

जद्दल कष (पु0) चमड़े की शक्ल का एक ख़ास क़िस्म का बना हुआ बारीक या मोटी लकीर खीचने का क़लम।

शेड ( ) देखें झुरमुट।

परछायीं ( ) देखें झुरमुट।

अक्स ( ) देखें झुरमुट।

झाँकी (स्त्री) फ़ोटो का कमरा।

झायीं झप्पा (पु0) फोटो का अद्सा (लेंस)

झुरमुट/झुरमेट (पु0/स्त्री) तस्वीर में उसके किसी हिस्से की परछायीं या साया जो बारीक या मोटे ख़तों या रंग के उतार चढ़ाव से ज़ाहिर किया जाता है। जिससे वह हिस्सा बखूबी वाज़ेह हो जाता है। **करना** के साथ बोला जाता है।

चाँदा (पु0) ज़ाविया बनाने या ज़ाविये के दर्जे शुमार करने का निस्फ दायरे की शक्ल का पैमाना। **~लगाना** ज़ाविये के दर्जे मालूम करने के लिये चाँदे का इस्तेमाल करना।

चिटोरा (पु0) तस्वीर के रंग के धब्बों को दुरुस्त या उसकी रंग आमेज़ी करने वाला माहिर शख़्स।

चख़/चख़ियाँ (स्त्री) तस्वीर की रंग आमेज़ी के बदनुमा दाग धब्बे जो रंग की खराबी या किसी दूसरी वजह से पड़ जाये। **पड़ना डालना** के साथ बोला जाता है।

चर्बा (पु0) वज़अ़ झाड़, मुसव्विरों की इस्तिलाह मे किसी तस्वीर, तहरीर या नक़्ष की हू ब हू नक़ल जो किसी बारीक कागज़ को उस के ऊपर रखकर और उसके असल निषान पर निषान लगाकर तैयार की गयी हो। **उतारना, लेना** किसी तस्वीर या नक़्ष के ऊपर बारीक क़िस्म का काग़ज या कपड़ा रखकर असल नक़्ष पर नक़्ष बनाना।

चिर्मी काग़ज (पु0) चर्बा उतारने का झिल्लीनुमा काग़ज़ जिसमे नीचे का नक़्ष दिखाई दे। चर्बा उतारने के लिए आला क़िस्म का ट्रेसिंग क्लाथ भी जो एक क़िस्म का मोम जामा होता है, तैयार किया जाता है।

चौमहला (पु0) चार तस्वीरों का मजमूआ जो एक चौकटे मे आमने सामने लगी हों या एक कागज़ पर बनी हुई हों।

चेहरा (पु0) सर, गर्दन और शानों तक का हिस्सा या तस्वीर। **~उतारना** चेहराकषी, चेहरे गर्दन और शानों तक की तस्वीर बनाना या खींचना। सर, चेहरा,गर्दन और शानों तक की तस्वीर खदोख़ाल के साथ बनाना। यह लफ़्ज़ हक़ीक़त मे फौजी इस्तिलाह मे अस्प सवार के लिए है जिससे सवार और घोड़े का हुलिया मुराद है जो षिनाख्त के लिए दर्ज रजिस्टर किया जाता है और अजज़ाऐ तंख्वाह के वक्त मुक़ाबले के लिए पेष होता था मगर उर्दू में मज़कूर उस सदर मफ़हूम के लिए एक लफ़्ज़ के तौर पर बोला जाने लगा है।

चेहरा पर्दाज़ (पु0) मुसव्विर, नक़्क़ाष, रूनिगार।

चेहरा पर्दाज़ी (स्त्री) मुसव्विरी या नक़्क़ाषी का फन।

चेहरा कषी (स्त्री) देखें चेहरा उतारना।

ज़मीनी नक़्षा ( ) देखें सत्ही नक़्षा।

हुलिया (पु0) ~मगड़ना तस्वीर के चेहरे के ख़दो ख़ाल खराब हो जाता था उनकी तैयारी मे नुक़्स आ जाना। **देखें** चेहरा।

ख़ाका उतारना (क्रिया) किसी तस्वीर या नक़्ष के चर्बा लेने का एक ख़ास तरीक़ा जिसमे असल तस्वीर या नक़्ष के ख़दोख़ाल को सुई की नोक से बराबर बराबर बारीक छेद लेते हैं और फिर उसको कागज वगैरह पर रखकर ऊपर बारीक ख़ाका की पोटली फेरते हैं जिससे ख़ाका के ज़र्रे सूराख़ मे से छनकर नीचे की सतह पर असल नक्ष का हू ब हू अक़्स बना देता है। इस अमल को इस्तिलाह में खाका उतारना या ख़ाका करना कहते हैं।

ख़दोख़ाल (पु0) देखें चेहरा गुमरा।

ख़याली तस्वीर/ख़याली नक़्षा (पु0) बगैर नमूने या मिसाल के तसव्वुर से बनाई हुई तस्वीर।

दो महल्ला (पु0) एक चौकटै मे आमने सामने बनी हुई दो तस्वीरें।

रौग़नी तस्वीर (स्त्री) रौग़नी रंग से बनाई हुई तस्वीर।

रौग़नी रंग (पु0) तस्वीर बनाने का या उसमे रंग आमेज़ी करने का किसी क़िस्म के रौगन मे तैयार किया हुआ रंग।

रंग घुलाना (क्रिया) तस्वीर मे रंग का यकसाँ करना।

रू निगार (पु0) देखें चेहरा पर्दाज़।

ज़बर दस्त (पु0) मुसव्विरों का मष्क़ी तख्ता या मुक़्व्वी जिसपर वह रंगों की तैयारी का नमूना और तस्वीर मे भरने की मष्क़ करके देखते है।

ज़मीनी ख़ाका (पु0) देखें सत्ही नक़्षा।

साया (पु0) अक़्स। **देखें** झुरमुट।

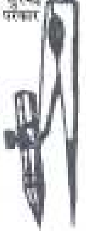

सुरमई परकार (स्त्री) सुर्मे की क़लम की परकार। इसी क़िस्म की स्याही की परकार भी होती है। **देखें** परकार।

सुरमई क़लम (स्त्री) पिंसलनुमा सुर्मे की सलाई पर बनी हुई क़लम।

सतही नक़्षा (पु0) किसी चीज़ का ज़मीनी नक़्षा जो सिर्फ खतों के ज़रिये दिखाया जाये।

स्याह क़लम करना (क्रिया) तस्वीर के ख़ाके या चर्बे पर स्याही का हाथ फेरना।

तस्वीर के पिंसली धुंधले निषानात को रौषन करना। रौषनाई से पक्का करना।

शबी (स्त्री) उतारना के साथ बोला जाता है। **देखें** चेहरा परदाज़ी।

शबी कषी (स्त्री) देखें चेहरा परदाज़ी।

अद्सा (पु0) लेंस, फोटोग्राफी के कैमरे का शीषा जिससे किसी चीज़ का अक्स लिया जाता है।

अक्साला (पु0) फोटोग्राफी का कमरा।

अक्सी तस्वीर (स्त्री) फोटो, ज़दीद तरीके के फोटो कैमरे के ज़रीए परछायीं से तैयार की हुई तस्वीर।

अक्सी कागज़ (पु0) फोटो के ज़रीए किसी चीज़ की परछायीं उतारने का कागज़ या परछायीं का नक्ष ले लेने वाला कागज़।

अक्कासी (पु0) फोटोग्राफर, अक्सी तस्वीर तैयार करने वाला मुसव्विर।

फोटो (पु0) देखे अक्सी तस्वीर।

फोटोग्राफर (पु0) देखें अक्कास।

क़ामत कषी (स्त्री) किसी खड़ी चीज़ का नक्ष उतारने का अमल।

क़दे आदम तस्वीर (स्त्री) सर से पैर तक पूरी खड़ी तस्वीर। **उतारना बनाना** के साथ बोला जाता है।

क़लमकारी (स्त्री) फोटोग्राफी मे टचिंग करना कहलाता है तस्वीर के हलके या धुंधले निषानों का रौषनाई से रौषन और दुरुस्त करना। **देखें** टीप और टीप करना।

क़लमी तस्वीर (स्त्री) क़दीम तरीके पर हाथ से बनाई हुई तस्वीर।

गिर्दा (पु0) निहायत बारीक मुदविर और मुन्हनी ख़तों से तैयार किया हुआ खयाली हुलिया जिसपर तस्वीर के असली ख़दोख़ाल तैयार किये जा सकें। बाज़ मुसव्विर गिर्दा को सियाह क़लम भी कहते हैं। **करना** के साथ बोला जाता है।

मुजस्सिमा (पु0) वह तस्वीर जो पत्थर मिट्टी या धात से ढालकर या गढ़कर बनाई जाये। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

मुसव्विर (पु0) तस्वीर बनाने वाला माहिरे फन।

मिल्लत (स्त्री) किसी चीज़ या जिस्म की अस्ली शान यानी हू ब हू वज़्अ को मुसव्विरी इस्तिलाह मे मिल्लत कहते है।

मंज़र कषी (स्त्री) नज़र की पहुँच तक पूरे समे की तस्वीर उतारना।

मूरत (स्त्री) देखें मुजस्सिमा।

मूक़लम (पु0) देखे बुर्ष।

मोमजामा (पु0) तसावीर बनाने का एक क़िस्म का चिर्मी कागज़ की क़िस्म का मुचर्रब कागज़।

मोमी काम (पु0) क़लमी काम की रौग़नी रंग आमेज़ी जो उसके ख़दोख़ाल की पायदारी के लिए किया जाता है।

नज़री तस्वीर/नज़री नक़्षा ( ) पेषे नज़र चीज की नक़्षकषी, किसी चीज़ को सामने रखकर उतारी हुई तस्वीर।

नक़्क़ाषी (पु0) एक आम लफ़्ज़ है और मुसव्विर ख़ास। **देखें** मुसव्विर।

नक़्षपरदाज़ ( ) देखें मुसव्विर।

नक़्ष पैमा (पु0) तस्वीर या नक़्ष नापने का आलःया मीज़ान।

नक़्षा (पु0) कागज़ या मुसत्तह जगह पर बनाई हुई किसी जिस्म या चीज की सही सूरत या अलामत जिससे उस चीज़ का हुलिया और अतापता समझा जा सके। **बनाने** के साथ बोला जाता है।

नक़्षा नवीस (पु0) नक्षे बनाने वाला माहिर। यह लफ़्ज ख़ासतौर से इमारत और दीगर पैमाइषी नक़्षे या शक़्लें बनाने वाले के लिए बोला जाता है।

निगार ख़ाना (पु0) वह मकान जो मुख़तलिफ़ क़िस्म की तस्वीरों से सजाया

हुआ हो या जिसमें मुख़तलिफ क़िस्म की तस्वीरें बनी हुई हों।

वज़अ़ झाड़ना (क्रिया) देखें ख़ाका उतारना।

2. पेषा मुहर कनी

तीलसिल/तील सिल्ली (स्त्री) मुहर खोदने की फौलादी सलाई या बर्मे की नोक तेज़ करने का एक क़िस्म का नर्म पत्थर।

चाँती/चाँटी (स्त्री) मुहर के हर्फ़ का दौर काटने की तेज़ धारदार फौलादी फिरकी जिसको मुहरकन के वक्त ज़ुरूरत बर्मे के मुंह पर चढ़ा लेते हैं। **देखें** चर्ख मुहर कनी।

चाहा (पु0) लकड़ी की दस्ती जिसके मुंह पर मुहर के नग को काम की ग़रज़ के लिए मसाले से जमा लिया जाता है।

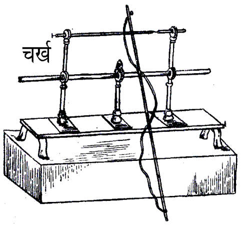

चर्ख़ (पु0) मुहर खोदने का कारख़ाना जो एक क़िस्म की तिपाई होती है। जिसमे बर्मा और कमानी लगा होता है।

चफ्ती (स्त्री) मुहर के चर्ख़ की तिपाई का तख्ता जिस पर बर्मे की खूँटियाँ जड़ी होती हैं। **देखें** चर्ख़।

छाप ( ) देखें मुहर।

हाषिया करना (क्रिया) नग पर हर्फ़ खोदने से क़ब्ल किनारों पर जदूल बनाना।

हर्फ़ पक्का करना (क्रिया) मुहर के नग पर क़लम से लिखे हुये हुरूफ को, बर्मे से खोदकर कटाव बनाना।

खातम ( ) देखें मुहर।

ज़ेरे चोब (स्त्री) देखें चाहा।

षिकंजा (पु0) बड़ी क़िस्म की मुहर के हुरूफ को बर्माने के लिए मुहर के पत्तर को मज़बूत पकड़ने का औज़ार।

अ़क़रब/अक़रब (पु0) मुहरकनी के चर्ख़े के बर्मे की खूंटियाँ जिनका ऊपर का सिरा छल्लेदार बिच्छू की दुम की वज़अ़ का होता है और यही उसकी वजह तस्मिया है। **देखें** चर्ख़।

कुर्सी करना (क्रिया) स्याही या पिंसल से मुहर के नगीने या पत्तर पर नाम के साफ और खुषख़त अल्फाज़ लिखना जिनपर बर्मा चलाकर कंदा किया जा सके।

कुरंड (पु0) मुहर खोदने के बर्मे की धार तेज़ करने का मसाला।

गुलज़ार मुहर (स्त्री) ऐसी खुदी हुई मुहर जिसके अल्फ़ाज़ के दरमियान खाली जगह पर बारीक क़िस्म के फूल और पत्ते खुषनुमाई के लिए कंदा कर दिए जायें बाज़ कारीगर इस तरह फूल पत्ते बनाते हैं कि असल अल्फ़ाज उनमें मिलकर खुषनुमा गुलदस्ते का नमूना बन जाते हैं।

मुहर (स्त्री) कोई नाम या निषानी कंदा किया हुआ नगीना या धात का पत्थर जो किसी तहरीर पर बजाये दस्तख़त या निषानी छाप दिया जाये। क़दीम ज़माने से अब तक मुहर एक ख़ास अहमियत रखती है और तरह तरह से बनाई जाने लगी है। **~खोदना** हस्बे ज़ुरुरत छोटे बड़े नगीने या धात के पत्थर पर नाम को हुरूफ़ तराषना। **~उतारना, लगाना, करना** किसी चीज़ पर मुहर छापना। इसतरह की उसके हुरूफ इस चीज़ पर साफ़ बने हुये दिखाई दें।

मुहर कन (पु0) मुहर तैयार करने वाला पेषेवर।

निषस्त बिठाना (क्रिया) देखें कुर्सी करना।

तीसरी फस्ल. किताबत, त़बाअ़त और स़हाफ़त

1. पेषा क़लम साज़ी

इंसी (स्त्री) देखें दायाँ परा।

बाँसी (स्त्री) क़लम बनाने की छड़ जो बांस की क़िस्म के दरख़्त का क़लम बनाने के काबिल बहुत पत्‌ला होता है।

बायाँपरा (पु0) मैदाने क़लम की बायीं नोंक, बायाँ रुख जो बीच के षिगाफ़ की वजह से दो हिस्सों मे बँटा होता है। **देखें** परा और क़लम।

बेदे मुष्क (पु0) बाँस की क़िस्म के एक दरख्त का क़लम बनाने का ढंठल। यह दरख़्त पंजाब मे दानियालपूर और ठट्‌ठ के इलाके में पैदा होता है।

पत्ती (स्त्री) लोहे, पीतल या किसी दूसरी धात की बनाई हुई ज़बाने क़ल अहले यूरप की ईजाद है। **देखें** ढंक।

पर का क़लम (पु0) मोर या इसी क़िस्म के किसी बड़े परिंद के बाजू के पर का बनाया हुआ क़लम।

परा (पु0) ज़बाने क़लम की नोक जो बीच मे षिगाफ देने से दो बराबर बराबर हिस्सों मे बट जाती है इन दोनो हिस्सों मे से दायें या ऊपर के रुख के हिस्से को दायाँ परा और ख़ानदानी खुषनवीस दाये परे को इंसी और बायें परे को वहषी कहते हैं जो कि अरबी लफ्‌ज़ है। **देखें** क़लम।

पिंसल (स्त्री) देखें सुरमई क़लम।

तुस (पु0) देखें रेषा क़ालम।

तंग मैदान (पु0) देखें मैदान।

जली क़लम (स्त्री) मामूल से ज़्यादा हस्बे ज़ुरूरत चौड़ी नोक की क़लम यानी वह क़लम जिससे मोटे और रौषन हर्फ लिखे जायें।

छाप लगाना (क्रिया) बाँसी की क़लम पर धुएँ या मेहंदी का रंग चढ़ाना जिससे वह पक्की मालूम हो।

हवाशी क़लम (पु0) क़लम के मैदान की दोनों बग़ली कोरें। **देखें** क़लम और मैदान।

ख़ामा (स्त्री) देखें क़लम।

ख़फी क़लम (स्त्री) मालू से कम हस्बेज़ुरूरत पतली नोक की क़लम यानी वह क़लम जिससे बारीक हर्फ़ लिखे जायें।

दायाँपरा (पु0) मैदाने क़लम की दायीं नोक या दायाँ रुख या ऊपर का सिरा जो बीच के षिग़ाफ़ की वजह से दो हिस्सों में बटा होता है **देखें** परा और क़लम।

दौर ए क़लम (पु0) क़लम की मोटान।

दो क़लमी नेज़ा (पु0) बाँसी या इसी क़िस्म के किसी दरख़्त की शाख़ का जिसकी क़लम बनाई जाती है। दो पोरों का एक टुकड़ा, इसको बीच मे से काटकर दा क़लमे बनाई जाती है।

दहाने क़लम (पु0) क़लम के दौर की सलामीदार तराष जो ज़बान बनाने के लिये छीलकर बनाया जाता है।

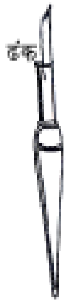

ढंक (पु0) आहनी या पीतली धात की ज़बान वाला क़लम। यह अहले यूरप की ईजाद है और अंग्रेजो के अहेद से हिन्दुस्तान मे मुरव्वज है। इस की जबान की नोक बारीक और सख़्त होने की वजह से षिमाली हिन्द मे इसका नाम ढंक मषहूर हो गया। देसी क़लम और इस क़लम मे इमतियाज़ के लिये लफ्‌ज़ ढंक अंग्रेजी लिखने की क़लम के लिए बोला जाने लगा अब उसके कसरते इस्तेमाल की वज़ह से नाम का याह फर्क़ बहुत कुछ कम हो गया है। **देखें** पत्ती।

रेषे क़लम (पु0) क़लम की पोर के अंदर के बारीक तार की बज़अ़ के पर्दे। क़लम की पोर के रेषे जो उसकी साख्त मे होते हैं **देखें** क़लम।

ज़बाने कलम (स्त्री) दहाने क़लम का आगे को निकला हुआ लम्बोत्‌रा और नुकीला हिस्सा। **देखे** क़लम।

शक़े यमीन ( ) देखें दायाँ परा।
शक़े बसार ( ) देखें परा, दाया परा।
षिगाफ़ (पु0) ज़बाने क़लम का चिराव जो रोषनाई की रवानी के लिए नोक के बीच मे किया जाता है। **लगाना, देना** के साथ बोला जाता है। **देखें** क़लम।
सूफ़ (पु0) देखें रेषे क़लम।
फाउन्टेन पेन (पु0) ज़दीद ईजाद का क़लम जिसके जौफ़ मे स्याही भर ली जाती है। जो लिखते वक़्त ज़बाने क़लम मे आती है।
क़ब्ज़ा (पु0) ढंक यानी अंग्रेज़ी लिखने के क़लम का मुंह जिसमे पत्ती (ज़वाने क़लम) लगाई जाती है। **देखें** ढंक।
क़त (पु0) ज़बाने क़लम की तराष। क़लम की नोक की मोटे या बारीक हुरूफ लिखने के लिये हस्बे जुरूरत चौड़ी या तंग काट। **लगाना, देना** के साथ बोला जाता है **प्रयोग** हुरूफ की पैमाइष क़लम के क़त से की जाती और बताई जाती है। जीम की गर्दन और मिंक़ार के दरमियान एक क़त का फ़ास्ला होता है।
क़त ज़न (पु0) क़लम पर क़त लगाने की चार पाँच इंच लम्बी और क़रीब एक इंच चौड़ी सख्त क़िस्म की लकड़ी या हड्डी की बनी हुई पट्टी।
क़लम (स्त्री/पु0) लिखने की जुरूरत के लिए तैयार की हुई किसी दरख्त की शाख ढंठल लकड़ी य धात की आठ, नौ इंच लम्बी, गोल और पतली डंडी। सन्नाअ् हर ऐसे औज़ार को मज़कूर उस सदर शक्ल व सूरत का हो, तषबीह के तौर पर क़लम कहते है।

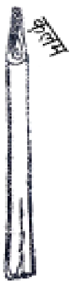

क़लम पाक (पु0) क़लम के मुँह की स्याही पोछने और साफ करने का कपड़ा सूफ़, बुर्ष वगैरा।
क़लम तराष (पु0) क़लम बनाने का उमदा क़िस्म का चाकू।
क़लमदान (पु0) क़लम और दीगर सामाने नविष्त रखने का ढिब्बा या संदूक़चा मुख़तालिफ़ क़िस्म के ज़दीद वज़अ़ के क़लमदानों के चलन ने कदीम क़िस्म के क़लमदानों का रवाज घटा दिया है।
कबूतर दुम क़लम (स्त्री) बहुत जली हुरूफ लिखने का चौड़े क़त का बना हुआ क़लम जिसकी ज़बान का सिरा क़बूतर की दुम की शक्ल का ज़रा फैला हुआ बनाया जाता है और यही उसकी वजह तस्मिया है।

कज रेषा क़लम (स्त्री) देसी क़लम का वह नेज़ा जिस के रेषे बजाये सीधे होने के किसी क़दर तिरछे और चक्करदार हो ऐसी कलम की जबान का षिगाफ़ सही नही पड़ता और परों मे बहुत ज़्यादा कमी बेषी रहती है। जो लिखने में नुक़्स देते हैं इसलिए ऐसी क़लम को नाक़िस समझा जाता है।
कजक़त (पु0) ज़बाने क़लम की नोक की किसी क़दर तिरछी काट।
किल्क (स्त्री) देखें कलम।
लेखन (पु0) देखें क़लम। **कहावत** करकाँपे लेखन डिगे।
मिर्ज़ाई क़लम (स्त्री) औसत दर्जे के क़त का क़लम यानी जिसका क़त जली और ख़फ़ी के दरमियान हो।
मुहर्रफ़ क़त ( ) देखें कज क़त।
मैदाने क़लम (पु0) ज़बाने क़लम की लम्बान जो हस्बे जुरूरत और मुहर्रिरों की मष्क़ के बमुवज्जिब बड़ी या छोटी बनाई और वसीअ़ या तंग मैदान से मौसूम की जाती है।
नेज़ा (पु0) बाँस या उसी क़िस्म के किसी दरख्त का तना (ढंठल) जिसकी पोरें

क़लमें बनाने के काम आयें। बगैर बनी क़लम।

वास्ती क़लम (स्त्री) सरकंडे की क़िस्म के एक शाख़ा पौदे के ढंठल की क़लम। यह पौदा बस्रा और बगदाद के दरमियान वास्ता नामी मुक़ाम पर खुदरौ होता है इसका ढंठल निहायत मज़बूत और उमदा रेषेदार होने की वजह से क़लम बनाने के काम आता है आला क़िस्म का नेज़ा होने की वजह से इसका नाम वास्ती कलम मषहूर हो गया है।

वहषी (पु0) देखें बायाँ परा और परा।

2. पेषा रौषनाई साज़ी

देसी रोषनाई जो आमतौर से स्याही के नाम से मषहूर है चिराग़ की कालिक को घोंटकर बहुत मामूली तरीक़े से बनायी जाती है देहली मे अलिफ़ खाँ नामी रोषनाई साज़ का बहुत क़दीम और मषहूर एक कारख़ाना था लेकिन वह इस क़दर पोषीदा रखा जाता था कि किसी ग़ैर शख़्स का उसमे जाना और हालात मालूम करना क़रीब क़रीब नामुमकिन था इसलिए इस पेषे के मुतअ़ल्लिक न कोई अमली काम देखने मे आया न तफ़सीली इस्तिलाहात मालूम हो सकी चूंकि फन्ने किताबत का यह एक जुरूरी पेषा है इसलिए ख़ाना पुरी के तौर पर चंद आम इस्तिलाहात दर्जकर दी गयी हैं।

विलायती रोषनाई के आम.... ने इस पेषे को और भी .... नामी की हालात को पहुंचा दिया....बनियों और महाजनों के....से कुछ बराये नाम क़ायम ..... जोर शोर रहा और न माँग...... नीली स्याही और कापी की .....चंद चीजों का महज़ ..... होता है उसमें सिनअत कुछ नहीं।

दवात (स्त्री) लिखने की जुरूरत के लिए रोषनाई रखने का ज़र्फ़।

रोषनाई (स्त्री) लिखने की जुरूरत के लिए तैयार किया हुआ किसी रंग का महलूल या सफ़ूफ़ जो उर्फे आम मे स्याही कहता है।

सुर्ख़ी (स्त्री) सुर्ख़ रोषनाई क़दीम ज़माने मे सिंगर्फ से बनाई जाती थी अब एक ख़ास क़िस्म के सुर्ख़ रंग की बनाई जाती है।

स्याही (स्त्री) चिराग़ की कालिक (काजल) की तैयार की हुई रौषनाई चूंकि इसका चलन हर जगह और कस्रत से था इसलिए रोज़मर्रा मे हर रौषनाई स्याही के नाम से मौसूम की जाने लगी है।

सूफ़/सफ़ूफ़ (पु0) ऊन, सूत या सन के रेषों का गुच्छा जो क़दीम वज़अ़ की स्याही के महलूल मे डाल दिया जाता है ताकि ज़बाने क़लम पर स्याही जुरूरत से ज़्यादा न चढ़े। **डालना** के साथ बोला जाता है।

तिलस्मी रौषनानी (स्त्री) एक ख़ास क़िस्म का कीमियाई महलूल जिसकी तहरीर कागज़ पर से ग़ायब हो जाती है और आग की हरारत पहुँचाने से भूरे रंग मे ज़ाहिर हो जाती है।

नीली रौषनाई (स्त्री) नील और माजू से तैयार की हुई जदीद क़िस्म की रौषनाई।

मिदाद (स्त्री) देखें रौषनाई।

मिस (स्त्री) देखें रौषनाई।

3. पेषा काग़ज़ साज़ी

आबी निषान (पु0) काग़ज़ की बनावट मे छुपे हुये हुरूफ़ अलामात जो काग़ज़ की तैयारी के वक्त लोहे के बने हुये मतलूबा हुरूफ़ या अलामात को छलने के दरमियान उलटा रख देने से जिसकी वजह से काग़ज़ मा गूदा उस जगह कम मिक़दार मे जमता है बन जाते है।

इस्त्री (स्त्री) कागज़ को चिकना करने का वज़नी बेलन।

पत्तर (पु0) यह लफ़्ज़ उर्दू मे कागज के साथ मिलाकर बोला जाता है। काग़ज़ पत्तर जैसे बाज़ दूसरे हिन्दी अल्फाज़ जो मुरक्कब सूरत मे उर्दू में बोले जाते है। **देखें** वरक़।

पट्ठा (पु0) मोटा और सख़्त काग़ज़ जो मुड़ न सके और लकड़ी के तखते की तरह हो। किताब की जिल्द का पुष्ता बनाने के काम आता है शायद लफ़्ज़ पुष्ता का ग़लत तलफ्फुज़ है।

पर्चा (पु0) क़ागज़ का बा क़रीना छोटा टुकड़ा। वरक़ का हिस्सा। **प्रयोग** मैंने एक पर्चे पर किताब का नाम और पता लिखकर भेज दिया है। **काट्ना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

पर्ची (स्त्री) पर्चे का इस्मे मुसग्गर।

पर्दला (पु0) तेलिया काग़ज़ या बारीक कपड़ा जिस पर कागज सुखाया जाता है और जो इस्त्री करने यानी कागज को चिकनाने से क़ब्ल हर तख़ते के दरमियान उनको आपस में जुदा रखने के लिए रहता है।

पुर्ज़ा (पु0) काग़ज़ का बेक़रीना फटा हुआ छोटा सा नाकारा टुकड़ा। **करना** के साथ बोला जाता है।

पिंजरा (पु0) कागज़ का घोल्वा (गूदा) साफ करने का तार की जाली का बना हुआ मख़रूती शक्ल का ज़र्फ़।

पिंडी (स्त्री) चीथ्ड़े कूटकर तैयार किया हुआ काग़ज़ बनाने के मसाले का गोंदा जिसका घोल्वा बनाया जाता है।

फोटक (पु0) वह कागज जिसकी दबाज़त यकसाँ न हो यानी घोल्वे के रेषों की खराबी की वजह से कहीं ज़्यादा कम हो और रोषनी के रुख देखने से झाइयाँ पड़ी मालूम हों। वह कागज़ जो मोड़ने से टूट जायें।

ताव (पु0) बडी माप के काग़ज़ का एक तख़ता जो काग़ज़ियों के शुमार मे कम से कम 18''X22'' का दुगना हो।

जाज़िब (पु0) देखें स्याही चूस या स्याही चट।

झारन (स्त्री) देखें छप्री।

चट (स्त्री) देखें पुर्ज़ा।

चेपी (स्त्री) काग़ज़ की छोटी कतरन जो फ़टे हुए काग़ज़ को जोड़ने के लिए बतौर पेवंद लगाई जाये। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

छप्री (स्त्री) काग़ज़ बनाने का बारीक तीलियों, तारों या घोड़े की दुम के बालों का छल्नी की वज़अ़ का बनाया हुआ चौखोंटा ज़र्फ जिसपर पूरे एक काग़ज़ के तखते को घोल्वा फैलाकर पानी निथारा जाता है। पानी निथरने के बाद घोल्वे की एक मुंजमिद सतह छपरी के जाल पर बन जाती है वह काग़ज़ की इब्तिदाई शक्ल होती है।

हरीर/हरीरी काग़ज़ (पु0) बहुत बारीक क़िस्म का चिकना और शफ़्फ़ाफ़ काग़ज़।

ह़िनाई काग़ज़ (पु0) सुर्ख़ी माइल भूरे रंग का मामूली क़िस्म का काग़ज़।

दाम (पु0) देखें छप्री।

दस्ता (पु0) पचीस ताव या मामूल के मुवाफिक़ पचीस काग़ज़ों की एक गड्डी।

दस्ती साँचा (पु0) काग़ज़ बनाने की छप्री या झारन जिसपर हाथ से काम किया जाये जो अमल मे कलदार साँचे से मुख़तालिफ़ और ज़्यादा मेहनत तलब होता है।

रपाट (पु0) ताज़ा बने हुये काग़ज़ को दबाने और चिकनाने का बेलन की क़िस्म का फिसल्वाँ भारी औज़ार। काग़ज़ के मसामात भरने और चिकनाने का बारीक सफ़ूफ़। बाज़ कारीगर पर्दला कहते हैं।

रद्दी (स्त्री) इस्तेमाल शुदा यानी लिखा हुआ नाकारा काग़ज़ या काग़ज़ों का मजमूआ जो लिखने के काम मे न आये। फटे पुराने काग़ज़।

रिम (पु0) काग़ज़ के बीस दस्तों की एक जुट हिन्दुस्तानी ज़बान मे एक कोड़ी कहते हैं। मगर लफ़्ज़ रिम कसरते इस्तेमाल से उर्दू में शामिल हो गया है।

रट सफूफ़ (पु0) काग़ज़ की तैयारी के गूदे का रंग साफ करने वाला कीमियावी मसाला।

रोबकारी काग़ज़ (पु0) सरकारी तहरीरात के इस्तेमाल का काग़ज़ जो उमदा और बेहतर क़िस्म का होता है नवाबे अवध के दरबार की कार्रवाई (एह्क़ामो फ़र्मान) जो क़ाबिले एह्तराम और वाजिब उल तामील होती थी रोब्कारी कहलाती थी यही इस्तिलाह इस काग़ज़ की वजह तस्मिया मालूम होती है।

रूलदार काग़ज़ (पु0) सत्रों की वज़अ़ पर लकीरें बना हुआ काग़ज़।

स्याही चट/स्याही चूस (पु0) रतूबत को जज़्ब करने वाला ख़ास क़िस्म की बनावट का कच्चा काग़ज़ जो ताज़ा तहरीर पर लगाने से रौषनाई की नमी को चूस लेता है।

स्याही चूस (पु0) देखें स्याही चट।

सँचा ( ) देखें छप्री।

सुत (स्त्री) सुदा का गलत तलफ्फुज़। काग़ज़ बनाने के साँचे या झारन को सीधा और सही जमा रखने वाला चौकटा।

सुफ़हा (पु0) काग़ज़ के वरक़ का कोई एक रुख।

अ़रुसक (पु0) सुर्ख काग़ज़ बनाने का रंग, गुले कल्ग़ी से तैयार किया हुआ सुर्ख रंग।

काग़ज़ (पु0) किसी रेषेदार चीज़ को हस्बे ज़ुरूरत बारीक, मोटा, लम्बा, चौड़ा तैयार किया हुआ पत्तर, वरक़। हिन्दुस्तान में काग़ज़ बनाने के मषहूर दस्ती कारखाने, सियालकोट, कषमीर, देहली, आगरा, कनौज, काल्पी और दौलताबाद (दकन) मे थे इन सब मे दौलताबाद का क़ागज़ अच्छाा मषहूर था अब भी बाज़ मुकामात दस्ती साँचों से काग़ज़ बनाया जाता है। **~काड़ना** पुराने तरीक़े पर साँचे के ज़रिये कागज़ के ताव की तैयारी का अमल करना।

काग़ज़ साज़ (पु0) काग़ज़ बनाने वाला कारीगर।

कागज़ी (पु0) काग़ज़ का ताजिर।

कच्चा काग़ज़ (पु0) देखें खुर्रा काग़ज़।

किरपास (पु0) एक क़िस्म का झारन या साँचा जिसमे काग़ज़ का पानी निथारा जाता है।

गड्डी (स्त्री) कागज़ों की थई या जुट। ऊपर तले जमाकर रखे हुये काग़ज़।

गूदा (स्त्री) देखें घोल्वा।

घोल्वा (पु0) दही के मानिंद काग़ज़ बनाने का तैयार मसाला। जिसको हस्बे ज़ुरूरत पानी मे घोलकर पतला कर लिया जाये। **बनाना** करना के साथ बोला जाता है। **~लतना** काग़ज़ बनाने के मसाले को खूब बारीक कूटने और साफ़ करने के बाद अच्छी तरह मसलना, मिलाना।

लटकन (पु0) घोल्वा बनाने वाले मज़दूर के पकड़ने का सहारा जो रस्सी का बना हुआ छत या किसी दूसरी चीज़ के साथ लटका रहता है।

मुक़व्वा (पु0) देखें पट्ठा।

मलट (पु0) अदना क़िस्म का मोटा, खुरदुरा और बदरंग काग़ज़। मलट सर्राफी इस्तिलाह मे चिकने और सपाट सिक्के के

हैं जिसके हुरूफ मिट गये हो बोला जाता है। किसी शायर ने शेर कहा है।

घिसते घिसते हो गयी ऐसी मलट।
चार पैसे की दो अन्नी रह गयी।।

मुहराकष (पु0) कागज़ की घुटाई या इस्त्री करने वाला कारीगर।

मुहरा (पु0) कागज़ की सतह को घोटने और चिकना करने का बेलन की वज़अ़ का औज़ार। **करना** के साथ बोला जाता है।

वरक़ (पु0) औसत दर्जे की नाप का क़रीने से कटा हुआ कागज़।

4. पेषा मुहर्रिरी

अबितुस़ (स्त्री) देखें बस्त हुरूफ़।

अब्जद (स्त्री) देखे बस्त हुरूफ़।

इअ़राब (पु0) मात्रा। **देखें** हर्कते हुरूफ़।

इंषा परदांज़ (स्त्री) जज़बाती कैफियात की तहरीर।

इंषा परदाज़ (स्त्री) जज़बाती कैफियात और वारिदात को फित्री ज़बान में तहरीर करने वाला।

इंषा नवीस (पु0) देखें इंषा परदाज़।

एक पुष्ता तहरीर (स्त्री) एक सफ़हा तहरीर। **देखें** एक रूखा तहरीर।

एक रूखा तहरीर (स्त्री) एक सफ़हा तहरीर। कागज़ के वरक़ के सिर्फ़ एक तरफ लिखा हुआ मज़मून। कागज़ के सफ़हे को लम्बान से दो बराबर हिस्सों में बाँटकर किसी एक हिस्से पर लिखाई करना। जब वरक़ के दोनों रुख़ लिखे जायें तो दो रूखा लिखाई कहलाती है।

उल्टा पेष (पु0) बाव ( ) की आवाज़ को खींचकर बोलने की तहरीरी अलामत जो लफ़ज़ के हर्फ़ वाव के ऊपर एक छोटी सी उल्टी वाव () की शक्ल बना कर ज़ाहिर की जाती है। **लगाना, देना** के साथ बोला जाता है। **नमूना ( )** सोत पानी का झिरा। ( ) सूत तागा।

उल्टा जज़्म (पु0) तहरीर मे किसी कलमे के हर्फ नून या वाव की आवाज़ को बदलकर पढ़ने के अलामत जो उल्टे आठ के हिन्दसे की शक्ल () उन पर बना दी जाती है। **लगाना, देना** के साथ बोला जाता है। **नमूना** खोजा, ख्वाजा, गुंज, गूँज।

बालूदानी (स्त्री) एक क़िस्म की बारीक रेत रखने का ज़र्फ़ जो तहरीर की रौषनाई खुष्क करने के लिए मुहर्रिर अपने पास रखते और इससे स्याही चूस का काम लेते हैं।

बदख़त (पु0) बुरा खत, खराब खत ऐसी तहरीर जिसमें लफ़्जों और हरफों की बनावट और कषिष बे क़ाइदा, बद वज़अ़, बेढंगी और अधूरी . . . . . . । वह शख्स जिसका ख़त अच्छा न हो।

बस्त हुरूफ़ (पु0) अब्जद के चंद मुफ़रद हुरूफ़ की मुरक्कब शक्ल में बतौर लफ़्ज़ तहरीर। अबजद के हुरूफ़ की गिरोहबंदी करके मुरक्कब शकल में बतौर कलमा लिखी हुई सूरत। उसके लिखने के दो तरीक़े हैं एक बस्त त़बई और दूसरा बस्त अ़ददी कहलाता है। बस्त त़बई और बस्त अ़ददी कहलाता है। **बस्त त़बई** अरबी अबज्द के मुरव्वज हुरूफ की तरतीब वार तरकीबी कल्मों मे तहरीर। **जैसे** इब्तुस़, जहिखुद वगैरा ( )। **बस्त अ़दरी** अरबी हुरूफ़ की एअ़दादे मुक़र्रिरा के एतबार से तरतीबी कलमों की शक्ल मे तहरीर। **जैसे** अबजद, हव्वज़, हुत्ती, कलिमन वगैरा ( )।

बेमात (पु0) बगैर एअ़राब या अलामत लिखा हुआ हर्फ़।

बे नुक़्ता (पु0) बगैर नुक़ते वाला हर्फ़ या हुरूफ़ वह हर्फ़ जिसपर नुक़्ता न लिखा जाये।

पुख़्ता ख़त (पु0) वह तरीक़ा ए तहरीर या लिखत जो बहुत दिनों की मष्क़ के बाद किसी एक तर्ज़ पर क़ायम हो गयी हो और उसमें तबदीली का इमकान न हो।

पक्का ख़त (पु0) देखें पुख़ता ख़त।

ग़ैर मंक़ूता ( ) देखें बे नुक़ता।

मुहमिला ( ) देखें बे नुक़ता।

ज़म्मा ( ) देखें पेष।

पेष (पु0) हर्फ़ की तीन हरकतों में से एक हर्कत की अलामत जो तहरीर मे वाव की सूरत ( ) हर्फ़ के ऊपर लिख दी जाती है जिसकी वजह से उस हर्फ की आवाज़ हर्फ़ वाव से मिलती हुई पढ़ी जाती है। **लगाना देना** के साथ बोला जाता है। **नमूना** दम ( ) (साँस) दुम ( ) (पूँछ)

तहरीर (स्त्री) लिखाई। **देखें** खत।

तष्दीद (स्त्री) सीन के सर की शक्ल की अलामत ( ) जो लफ़्ज़ के किसी हुरूफ़ को दो मर्तबा पढ़ने के लिए उस हर्फ पर लिख दी जाये। **नमूना** बततख़ (बत्तख), कललू (कल्लू)।

तकीदान (पु0) सादे लिफ़ाफे ख़त या रुक़अ़े लिखने के पर्चे और उसी क़िस्म की दूसरी चीज़े रखने का ख़ानादार बना हुआ क़ागज़दान।

तन्वीन (स्त्री) लफ़्ज़ के किसी हर्फ पर लगी हुई ज़बर ( ), ज़ेर ( ), पेष ( ) की दुहरी अलामत ( ) जिसकी वजह से पढ़ने मे उस हर्फ़ की आवाज़। हर्फ़ नून के साथ मिलती हुई लगाई जाती है। **लगाना** के साथ बोला जाता है। **नमूना** –

टीपना (क्रिया) लिखना, किसी मुख़तसर बात फेहरिस्त, याददाष्त या फर्दे हिसाब में दर्ज करना।

जज़म (पु0) लफ़्ज़ के किसी हर्फ को बगैर हरकत यानी साकिन पढ़ने के लिए उस हर्फ पर लिखी हुई आठ के हिन्दसे की वज़अ़ की अलामत। **नमूना ( )**

चिट्ठी (स्त्री) ज़ाती हालात या कारोबारी कैफ़ियत लिखा हुआ पर्चा, रुक़आ़ (उर्दू में इस लफ्ज़ का मफ़हूम हिन्दी मफ़हूम से किसी क़दर जुदा है। **देखें** पेषा कागज़ साज़ी। **प्रयोग** वतन से चिट्ठी आई है मौसम का हाल और कारोबार की कैफ़ियत दरयाफ्त की है। **लिखना** के बोला जाता है।

चिट (स्त्री) चिट्ठी का इस्मे मुसग्गर।

चिट नवीस (पु0) कारोबारी कैफ़ियत की छोटी पर्चियाँ लिखने वाला।

चेहरा ए लफ्ज़ (पु0) चेहरा ए लुग़त, लफ्ज़ के हुरूफ की हर्कातो सकनात तहरीर करने का तरीक़ा जैसा की क़दीम फ़ारसी व अरबी के लुग़तों मे मुरव्विज था। **लिखना** के साथ बोला जाता है।

हर्फ (पु0) इंसान के मुंह की हर मुफ़रद आवाज़ का जो बाक़ाइदा फरह व क़लअ़ निकलती है किसी चीज़ पर बनाया हुआ एक नक़्ष। फन्ने तहरीर में इंसानी बोलों (कलाम) उन तमाम मुन्फरिद नुकूष या शक्लों को जो हर क़ौम में मुक़र्रिरह तादाद और मुख़तलिफ बनावट की है हुरूफ़े हिज्जा या हुरूफ़ तहिज्जी कहते हैं। ज़बाने उर्दू में इनकी तादाद इक्यावन है। अरबी फ़ारसी और हिन्दी के हर्फ़ से मुरक्कब है। **नमूना** इन हुरूफ़ की अहले इल्म ने गिरोह बंदी की है। इनमें से हर गिरोह के लिए एक इस्तिलाही नाम रखा गया है। जिसकी तफ़सील दर्ज ज़ेल है। **1 हुरूफ़े आबी** इस मजमूऐ मे....... शामिल है। **2 हुरूफ़े आतषी** इनका मजमूआ....है। **3हुरूफ़े बादी** यह गिरोह..... पर मुष्तमिल है। इल्मे ज़फर में इन हुरुफ की अलामत ज़बर रखी गयी है। **4 हुरूफ हल्क़ी** इल्मे तजवीद में..... एक गिरोह कहलाते हैं। **5 हुरूफ़े ख़ाकी**.... इल्मे जफ़र में इन हुरूफ़ की अलामत

जज़्म क़रार दी जाती है। 6 उसूलेक़िरात में हुरूफ़े शमसी और.... हुरूफ़े क़मरी कहलाते हैं।

~तहतानी (पु0) वह नुक़्तेदार हर्फ़ जिसका नुक्ता या नुक्ते उसके नीचे लिखे जाते हैं। **~साकिन (पु0)** हर्फ़ मौकूफ़, वह हर्फ़ जिसपर अलामते जज़्म लिखी हो। **देखें** जज़्म। **~ग़ैर मंकूता देखें** बे नुक़ता। **~फौक़ानी (पु0)** वह नुक़्तेदार हर्फ़ जिसका नुक़्ता या नुक़्ते उसके ऊपर लिखे जाते हैं। **जैसे.....मुतहर्रिक (पु0)** वह हर्फ़ जिसपर तीनो हर्कतों में से कोई हर्कत हो। **देखें** हर्कत।

मुत्षाबा (पु0) वह हर्फ़ जो बनावट में हमषक्ल और नुक़्तों के फर्क़ से पहचाने जाते हैं। जैसे......वगैरा। **~मुरक्कब** दो या दो से ज़्यादा मिलाके लिखे हुए हुरूफ़ जैसे...।

चूँ फरागत ज़ेमुफ़रिहात आमद।
वकत मष्क मुरक्किबात आमद।।

~मुषद्दद (पु0) वह हर्फ़ जिसपर अलामते तष्दीद लिखी हो। **देखें** तष्दीद।

~मज़मूम (पु0) वह हर्फ़ जिसपर पेष की अलामत लिखी हो। **देखें** पेष।

~मुअ़जमा (पु0) देखें हर्फ़ मंकूता।

~मफ़तूह (पु0) वह हर्फ़ जिस पर ज़ेर की अलामत लिखी हो। **देखें** ज़बर।

~मुफ़रद (पु0) मुफरिद आवाज की शक्ल जैसे......वगैरा। **देखें** हर्फ।

~मकतूबी (पु0) वह हर्फ़ जिसके तलफ्फुज में अव्वल आखिर एक ही हर्फ़ की आवाज़ ज़ाहिर हो जैसे मीम, नून।

~मकसूर (पु0) वह हर्फ़ जिस के नीचे ज़ेर की अलामत लिखी हो। **देखें** ज़ेर।

~मलफूज़ी (पु0) वह हर्फ़ जिसके तलफ़्फुज़ में अव्वल आखिर दो मुख़तालिफ़ हुरूफ़ की आवाज निकले जैसे जीम, दाल।

~ममदूदा (पु0) वह हर्फ़ जिसपर अलामत मद लिखी हो। **देखें** मद।

~मंकूता (पु0) हर्फ़ मुअ़जमा या नुक़्ते वाला हर्फ जैसे..... बगैरा।

~मौकूफ़ (पु0) देखें हर्फ़ साकिन।

~मुहमिला (पु0) देखें बे नुकता।

~हिज्जा (पु0) देखें हर्फ़।

हर्कत (स्त्री) मुंह की कुषादगी और होंठों की हर्कत से हर्फ़ मे जो मुख़तलिफ़ कैफियत पैदा होती है या जिसके सहारे हर्फ़ या हुरूफ़ अदा किये जाते हैं। उसको हर्कते हर्फ़ कहते हैं। जिन निषानियों से उन हर्कत को तहरीर मे ज़ाहिर किया जाता है वह अलामात, एअ़राब या मातरा कहलाती है और अलामते हर्फ़ भी कहते हैं। इब्तिदा मे एअ़राब नुक़्ता की शक्ल का, हज्जाज बिन यूसूफ ने ईजाद किया उसके बाद एअराब की तरह लकीर और वाव (ៗ) ख़लील इब्ने अहमद बसरी अ़रूसी की ईजाद है। जिसने उन की जगह भी मुक़र्रर की एअ़राब जो नुक़्ता की तरह लगाये जाते थे उनमें पेष की जगह हर्फ के आखिर मे महाज़ी होती थी।

ख़त् (पु0) जदूल का निषान, **देखें** लकीर, कोर। **खींचना, लगाना, बनाना** के साथ बोला जाता है। **चिट्ठी, पर्चा, रुक़आ** ज़ाती हालात या कारोबारी कैफियत की तहरीर। **लिखना, भेजना, जाना, आना, मंगाना, लेना, मिलना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** आप का खत आया कैफियत मिज़ाज व दीगर हालात मालूम हुये। यहाँ से मैं चौथे रोज़ खत भेजता हूँ मगर तुम को नही मिलता। **~डालना** किसी जगह ख़त भेजने के लिए डाकख़ाने में रवाना करना। **~मिलाना** दो तहरीरों का मुक़ाबला करना। किसी ज़बान की तर्ज़ तहरीर, लिखत, नविष्त। **प्रयोग** उर्दू

ज़बान की तर्ज तहरीर, लिखत, नविष्त। **प्रयोग** उर्दू ख़त जगह कम घेरता है। **देखें** रस्मे खत।

~ख़ते उर्दू (पु0) हिन्दुस्तानी यानी उर्दू ज़बान का रस्मे मुख़्तसर नवीसी में अपनी नज़ीर आप हैं। **~इषारा (पु0)** वह तहरीर या लिखत जिसमें हुरूफ़ की हक़ीक़ी और असली अष्काल के बाज़ मख़सूस अलामात, मुक़र्रिरा निषानात या इअ़दाद मे दर्ज किया जाये ताकि इन रमूज़ से नावाक़िफ़ शख़्स उस तहरीर को न समझ सके। **~बालबुद (पु0) देखें** ख़ते देवनागरी। **~तअ़लीक़ (पु0)** ख़ते षिकस्ता का एक तर्ज़ जिसमें हुरूफ के दायरे लम्बे और सतह छोटी लिखी जाती है। अ़हेदे अकबरी तक हिन्दुस्तान में यही ख़त राइज था मुहर्रिरों ने ख़ते रिफ़ाअ़ और ख़ते तौक़ीअ़ से इस्तिंबात करके वज़अ़ किया था इस ख़त के बाद ख़ते नस्तालीक़ राइज हुआ। **नमूना भी देना है।**

कातिबाँ राहफ्त ख़त बाषद।
बतर्ज मुखतलिफ सुल्सो रैहानो मुहक़्क़िक़
नस्ख़ो तौक़ीओ रिक़ाअ़ बअ़द अज़ाँ तअ़लीक़
आँ ख़त अस्त कष अहले अ़जम (जामी)

अनुवाद

~तिलंगी (पु0) हिन्दुस्तान के मुरव्विजा चार असल रस्मे ख़त जो षिमाली हिन्द के देवनागरी ख़त के मुक़ाबले मे जुनूबी हिन्द मे गैर आर्या नस्ल का क़दीम रस्मे ख़त है इसकी कई शाख़े है। **नमूना?**

~तौक़ीअ़ (पु0) ख़ते रिक़ाअ़ की जली क़लम तहरीर। **देखें** ख़ते रिक़ाअ़। **~सुल्स़ (पु0)** ख़ते नस्ख़ की जली क़लम तहरीर। इस ख़त मे हर्फ़ का दौर हर्फ़ की कुल लम्बान का दो हिस्से और सतह उसकी दुगनी होती है। **नमूना –**

~जली (पु0) मामूली और मुरव्विजा किताबत से किसी क़दर मोटी और कुषादा लिखत। जली क़लम तहरीर। **~ख़फ़ी (पु0)** बारीक और गुथी हुई लिखत ख़फी क़लम तहरीर। **~दीवानी (पु0)** ख़ते षिकस्ता, ख़ते तअ़लीक़ की एक दूसरी तर्ज़ जूद नवीसी के लिए उसूले खुष नवीसी को नज़रअंदाज़ करके क़लम की रवानी पर वज़अ़ की गयी है दफ़तरी और कारोबारी ज़ुरूरत के लिए इसको घसीट लिखत कहा जाये तो दुरुस्त है इसकी इब्तिदा और तरक़्क़ी शाहजहानी अहेद में हुई जबकि माल या दीवानी का दफ़तरी काम बहुत बढ़ गया था यही इसकी वजहे तस्मिया है। सअ़द उल्लाह ख़ाँ की विज़ारत के ज़माने मे मकतूब निगारी के लिए इस ख़त ने खूब रवाज पाया इस तर्ज़ तहरीर को मुंषी चन्द्र भान ब्रह्मन अहेलकारे शाह जहानी। मुहम्मद जाफर मुख़ातिब ब किफ़ायत ख़ाँ दीवान नौरतन आलमगीरी और शेख़ अहमद ने कमाल को पहुँचाया। मीर पंजाकष का नाम भी इसी जुमरे मे लिया जाता है। **~देवनाग्री (पु0)** ख़ते हिन्दी ( ) **देखें** ख़ते देवनाग्री। आर्या क़ौम का रस्मे ख़त। ख़ते बंगाली, ख़ते गुतराती इस ख़त की ख़ास और बड़ी शाख़ें हैं। इनके अलावा चंद और छोटी छोटी मिस्ख़षुदा शक्लें भी हैं जो ख़ते स़र्राफ़ी, ख़ते महाजनी और ख़ते मारवाड़ी के नाम से मषहूर है। **ख़ते देवनागरी** की दो सूरतें हैं एक किताबी जो इस्तिलाह मे कालबुद कहलाती है और दूसरी षिकस्ता और मुख़तसर नवीसी की सूरत मुड़िया या मोड़ी के नाम से मअ़रूफ़ है। **~रिक़ाअ (पु0)** ख़ते नस्ख़ की वज़अ़ का ख़त जिसमें हुरूफ़ की सतह और दौर बराबर बनाये जाते हैं (दौर 4 1/2 दाँग और

सतह 4 1/2 दाँग) इसी तर्ज़ तहरीर को जली क़लम तहरीर को ख़ते तौक़ीअ़ कहते हैं। **देखें** ख़ते नस्ख़। **~रक़ीमतुल अअ़दाद (पु0) देखें** रक़म। **~ रम्ज़ (पु0) देखें** ख़ते इषारा। **~रेहान (पु0)** ख़ते नस्ख़ की एक तर्ज़े तहरीर जिसमें हुरूफ की सतह तंग और दौर वसीअ़ बनाया जाता है यानी सतह 1 1/2दाँग और दौर 4 1/2 दाँग लिखी जाती है। इस ख़त की जली क़लम तहरीर ख़ते मुहक़्क़िक के नाम से मअ़रूफ़ है। **देखें** ख़ते तअ़लीक़।

~सरू (पु0) ख़ते इषारा की एक तर्ज़ जो बारीक लकीरों से बोलो के मुकर्रिरा इषारों मे सरू के दरख़्त की तर्ज शक़्ल लिखी जाती है

चित्र देना है।

~षास्त्री (पु0) देखें ख़ते देवनागरी।

~षफ़ीआ़ (पु0) खत षिकसता या दीवानी की एक बाक़रीना तर्ज़तहरीर जिस का मुआज्जिद मोहम्मद शफ़ी नामी खुषनवीस था इस तर्ज़तहरीर को ख़ते षिकस्ता की खुषखती समझना चाहिये। देखें ख़ते दीवानी।

~षिकसता (पु0) देखें ख़ते दीवानी ।

~खत्ताती (स्त्री) देखें ख़त और लिखत।

~किनाया (पु0) देखें ख़ते इषारा।

~कूफ़ी (पु0) ख़ते मुअ़क़ली की किसी कदर तरक़्क़ी याफ़्ता षक़्ल। देखें ख़ते मुअ़क़ली।

चित्र देना है।

~मुहर्रफ़ (पु0) ख़ते नस्ख़ की एक तर्ज़ तहरीर जिसमें अल्फ़ाज और हुरूफ़ की कषिष तिर्छी बनाई जाती है।

~मुहक़्क़िक (पु0) देखें ख़ते रेहान।

~मूज़ा (पु0) देखें ख़ते इषारा।

~गोड़ी (पु0) देखें ख़ते देवनागरी।

~मसतूरा (पु0) ख़ते तिलिस्म। राज़दारी के लिये किसी ख़स अष्या को पानी से लिखी हुई तहरीर जो खुष्क हो कर कागज पर से ग़ायब हो जाये और काग़ज को गर्म या पानी से तर किये बगैर न किखाई दे। आबे प्याज़, आबे सज्जी, आबे लेमू, आबे नारंज, या दूध मे कदरें नौसादर मिला कर लिखनें से सूरते मज़कूर उस सदर पैदा होती है कुत्ते चीते और बाज के .... मिला कर लिखने या स्याह बिल्ली की आँख के पानी से लिखने से तहरीरों के वक़्त काग़ज पर बे मालूम रहेगी और रात के वक्त अंधेरे मे दिखाई देगी।

~मुअ़्कली (पु0) कदीय सामी रस्मेख़त जो अरबी रस्मे ख़त के नाम से मषहूर है इस खत मे हुरुफका दौर नही होता सिर्फ सतह होती है अकसर क़दीय कुतुबे अरबी इसी ख़त मे लिखी हुई है। इसी ख़त की किसी क़दर तरक़्क़ी याफ़्ता षक़्ल जिसको **203** की बनावट मे दौर का निषान होता है यानी पूरे दाँग कहते है दौर का क़रीब छटा हिस्सा जिसको इस्तिलाह मे दाँग कहते हैं, दौर का निषान और बाक़ी सतह होती है। **ख़त कोफ़ी** के नाम से **मारुफ** मअरुफ है इब़्ने मुक़ला ने ख़ते मुअ़क़ली और ख़ते कूफ़ी से छः मुंदर्जा ज़ेल रस्मेख़त ईजाद किये।

चित्र देना है।

(1) ख़ते हौक़ीअ़ (2) ख़ते सुलूस (3) ख़ते रिक़ाअ़ (4) खते रेहान (5) ख़ते मुहक़्क़ि (6) ख़ते नस्ख। इस के बाद आली बिन हिलाल ने जो इब्ने अय्यूब के नाम से मअरूफ़ है इन खतों को दुरस्त किया और ख्वाजा अ़माद उद्दीन अलमअरुफ ब याकूत। मुस्तसमी ने इन में कमाल पैदा किया उसके छः नामवर शार्गिदों (1) शेख़ अहमद मअ़रूफ़ व शेख ज़ादा सुहरूरदी

(2) इरओ़न काबुली (3) मौलाना यूसूफ़ मुषहदी (4) मौलाना मुबारक शाह ज़र्री क़लम (5) सैय्यद हैदर (6) मीर यह्या ने इन ख़तों को खूब रवाज दिया।

~मनाषीर (पु0) देखें ख़ते रिक़ाअ और ख़ते तौक़ीअ़।

~नस्ख़ (पु0) लम्बे दौर यानी क़तअ़ दायरे की तर्ज़ के दौर दार हुरूफ़ की षक्लों की ख़फी क़लम तहरीर। इसकी जली क़लम तहरीर ख़ते सुल्स के नाम से मअरूफ़ है। देखे सुल्स।

चित्र देना है

~नज़ीरा (पु0) ख़ते इषारा की एक क़िस्म जो अपने मूजिद के नाम से मषहूर है। इस तर्ज़े तहरीर का नमूना दायरा नज़ीरा–ए–अबजद कहलााता है। यह एक दायरा होता है जिस के अंदर हुरूफ़ अबजद लिखे जाते है जिन को हुरूफ़े इषारा के साथ ख़ास तरीक़ो से मिला कर पढ़ने से कातिब का मतलब मकतूब इलै पर वाज़ह हो जाता है मकतूब अलै के पास से दायरा–ए–नज़ीरा का नमूना होना जुरूरी है जिसके ज़रीय वह कातिब के हुरूफ़ इषारा से मतलब निकाल सके। मसलन अगर कातिब अल्फाज़ लिख भेजे तो मकतूब अलै दायरा–ए–मज़कूर मे इनअल्फाज़ के हुरूफ के मुकाबिल हुरूफ को देखकर मालूम कर लेगा कि अलफ़ाज ग़रीब परवर लिखने का इषारा है।

चित्र

–दायरा–ए–नजीरा–ए–अबजद

~वा़हदानी। खुतूते वहदानी (पु0) कौसनुमा ख़त जो तहरीर मे किसी कलमे या इबारत को असल इबारत से जुदा दिखाने के लिये इस को अव्वल आखिर बना दिया जाये जैसे मोर जो एक खूब सूरत परिंदा है साँप को खा जाता है।

~हिंदसा (पु0) देखें ख़ते इषारा।

दायरा–ए–नजीरा–ए–अबजदी (पु0) देखें ख़ते नजीरा।

दस्तख़त (पु0) खत्ताती या कातिब की अपने हाथ की लिखत या तहरीरा। करना के साथ बोला जाता है। 2 किसी तहरीर की तस्दीक़ के लिये अपने हाथ से अपना नाम लिख देने का तरीक़े अमल। **प्रयोग** तुम्हारा दस्तख़ती ख़त आये तो दिल को इतमीनान हो। **प्रयोग** हुकुमनामे पर सब ने इत्तिलायाबी के दस्तख़त कर दिये।

दो चष्मी हर्फ़ (पु0) ऐसे हिन्दी हर्फ जो दो चष्मी हे (हायमख़लूत) से मिला कर हर्फ़ मुफ़रद की तरह पढ़े और लिखे जाते है और उर्दू अबजद में शरीक और दो चष्मी हर्फ़ कहलाता है।

नमूना.......................... वग़ैरह।

दो रूखा़ तहरीर (पु0) वरक़ के दोनों तरफ लिखा हुआ मज़मून देखें इक रुखा तहरीर।

रस्मे ख़त (पु) किसी क़ौम की तर्ज़ तहरीर या तरीका–ए–किताबत। हिदुस्तान में कई रस्में खत मुरव्वज है उन मे मषहूर उर्दू देवनागरी, तिलंगी, तमिल, और अंग्रेजी है।

रक़म (स्त्री) वह छोटी सी उफ़क़ी लकीर जो तहरीर मे किसी कलमे या कलाम को मख़सूस या नुमायाँ करने के लिये उस के ऊपर बषक्ल (मद) बना दी जाये था सिल सिला–ए–षुमार के अदद के लिये लिखी जाये जैसे...........बगैरा।

रेतदानी (स्त्री) देखें बालूदानी।

रेख (स्त्री) देखें ख़त।

फ़त्हा ( ) देखें ज़बर।

ज़बर (पु0) हर्फ़ की तीन हर्कतों मे से एक हर्कत की अलामत जो तहरीर मे एक छोटी सी तिर्छी लकीर की सूरत, हर्फ़ अलिफ से मिलती हुई पढी़ जाती है।

लगाना के साथ बोला जाता है। नमूना ... . ।

ज़ेर (पु0) हर्फ़ की तीन हर्कतों मे से एक हर्कत की अलामत जो जब़र की षक्ल की होती है और हर्फ़ के नीचे लिखी जाती है जिसकी वजह से उस हर्फ की आवाज़ याय मजहूल ( ) से मिजती हुई पढ़ी जाती है।

नमूना..............मोटान ....

संग मात (पु0) बेमात की ज़िद। **देखें** हर्फे मुअर्रब।

अ़लामत(स्त्री) इअ़राब, मात्रा, निषान,। देखें हर्फ़त।

अलामते वक़्फ़ (स्त्री) तहरीर मे दो जुमलो या कलाम के दरमियान थोड़े ठेराव का निषान जिस के लिये मुख़्तलिफ़ अ़लामात मुक़र्रर है। **बनाना, डालना, लिखना** के साथ बोला जाता है।

क़लम बंद करना (क्रिया) किसी कलमें या कलाम को तहरीर मे ले आना या लिख लेना। **प्रयोग** हाकिम ने मुल्ज़िम के बयान को क़लम बंद किया।

कावाफ (पु0) मोटे और टेढ़ें तिर्छे बंद ख़त लिखे हुये हुरूफ।

कच्चा ख़त (पु0) ऐसी लिखाई जो मष्क की कमी की वजह से किसी एक वज़अ़ पर क़ायम न हुई हो, नौ मष्क़ी तहरीर।

खड़ा ज़बर (पु0) अलामत जबर जो ऐसे अरबी अलफाज़ पर जिनका आखिरी हर्फ हम्ज़ा होता और रस्मे ख़त मे बषक्ल या लिखा जाता है। उमूदी सूरत मे माक़बल आखिर लिखी जाती है जिस की वजह से उस हर्फ़ की आवाज आलिफ़ ममदूदा से मिलती हुई पढ़ी जाती है।

नमूना

खड़ा जब़र (पु0) उमूदी षक्ल का ज़ेर जो हर्फ़ के नीचे लिखा जाता है जिस की वजह से उस हर्फ़ की आवाज़ याय मअ़रूफ़ से मिलती हुई पढ़ी जाती है।

.... **वग़ैरह नमूना**

लिखत (स्त्री) । देखें ख़त।

लिखय्या (पु0) देखें गुहर्रिर, मुंषी।

मात्रा (पु0) देखें एअ़राब और अलामत।

मुहर्रिर (पु0) फन्नेतहरीर का जानने वाला।

खत्तात ( ) देखें मुहर्रिर।

मुहर्रफ तहरीर (स्त्री) आम और मुरब्बिजा सीधी तर्ज़ तहरीर के खिलाफ तिर्छी लिखत।

मुहर्रफ़ नवीस (स्त्री) तिर्छे फ़त की कलम से मुहर्रफ़ लिखने वाला, लिखय्या।

मुहर्रफ तराषो मुहर्रफ़ नवीस।
बाँक ज़माना शवी खुष नवीस।।

मद (पु0) उफ़की बना हुआ अरबी रस्में खत का अलिफ जो कलमे के किसी हर्फ़ पर उसकी आवाज़ को दराज़ करने के लिये लिख दिया जाता है। **लिखना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

मुंषी (पु0) अंग्रेजी दफ़्तरों में इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल अपने असली मानों से हट कर उर्दू दाँ मुहर्रिरों के लिये बोला जाने लगा और अब उर्दू दाँ ज़बान मे इस का वही मफहूम हो गया है।

नुक़्ता (पु0) उर्दू अबजद के बाज़ हुरूफ़ की निषानी जो बगैर लम्बाई चौड़ाई गोल या मुरब्बा शक्ल की होती और बतौर अलामत उनके गोल साथ लिखी जाती है जिस की वजह से मुतषाबा हुरूफ़ का तलफ़्फ़ुज बदल जाता है जैसे..................... वग़ैरह, खुषनवीस नुक़्ते की षक्ल चहार गोषा, मुरब्बअ़ माइल बअ़लों (ख़मीदा) मुरब्बअ़ मसावी और गोल बनाते हैं।

नमूना

नविष्त (स्त्री) देखें तहरीर एक कलम।

तहरीर (स्त्री) बबकते वाहिद और एक उनवान और यकसाँ लिखी हुई तहरीर।

5. पेषा–ए–खुषनवीसी

अलिफ हिलाली (पु0) अलिफ़ जो बषक्ल हिलाल लिखा जाता है–

बे तवील (स्त्री) क़लम के ग्यारह क़त के बराबर लम्बी लिखी हुई बे। हर्फ़ बे और इसी गिरोह के हुरूफ़ जो क़लम के सात क़त की लम्बान से ज्यादा ग्यारह क़त तक लम्बी लिखी जाये इस्तिलाह पैमूदे हर्फ मे बे तवील कहलाती है।

बे मयाना (स्त्री) क़लम के सात क़त कें लम्बी लिखी हुई बे।

बे–नाखुनी (स्त्री) क़लम के चार पाँच क़त के बराबर लम्बी लिखी हुई बे जिसका आखिर सिरा किसी कद्र ऊपर को उठा कर बकद्र एक क़त कलम उलट दिया जाता है।

पैकरे हर्फ (पु0) अबजद के हर्फ़ की वज़अ़ सा मुकम्मल षक्लों सूरत।

पैमूदे हर्फ (पु0) अबजद के हर्फ़ की सूरत बनाने का उसूल, पैमाइष। अबजद के हर्फ़ की क़लम के क़त से नाप खुषनवीसी मे क़लम का क़त हर्फ़ की बनावट के लिये पैमाना शुमार किया जाता है। **नमूना गिरह ( ) देखें** पेवंदे हर्फ़।

पेवंदे हर्फ़ (पु0) दो हर्फ़ो के इत्तिसाल या जोड़ की जगह का नुकता या शोषा जैसे (मिट्टी) में हर्फ (मीम) और (टे) का दरमियानी शोषा। लगाना के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** हुरूफ के पेवंद खराब बने है उसकी वजह से जोड़ अलाहिदा मालूम होते है।

तख़ती (स्त्री) खत्ताती की मषक करने की चोबी पट्री।

जम्जा (पु0) मिनक़ारे जीम और के हमषक्ल हुरुफ का सर या सिरा

जोफ़ें हर्फ (स्त्री) देखें चष्मे हर्फ़।

चष्में हर्फ़ (स्त्री) पैकरे हर्फ़ का गोल या बैज़वी शक्ल का जुज़। जैसे–.......... वग़ैरह। चष्मदार हुरुफ को हुरूफ मुजव्वफ् कहते है। एक जोफ़ वाले को दो चष्मी हर्फ़ जैसे ....वगैरा कहते है। जो हिन्दी हुरूफ है और उर्दू अबजद मे शामिल हो गये है।

हर्फे मुजव्वफ़ (पु0) देखें चष्मे हर्फ़।

हर्फ़े मुहर्रफ़ (पु0) तिरछी काषिष का लिखा हुआ हर्फ़। **देखें** ख़ते मुहर्रफ़ पेषा–ए–मुहर्रिरी। पृ0

ख़तेबहार (पु0) फूल पत्तों की शक्ल या गुलबूटों के अन्दर लिखा हुआ कोई कलमा या कलाम। खुषनवीसी की एक सिनअ़त जो ख़ते मसनूआ के नाम से मअ़रूफ है।

चित्र देना है।

~तवाम (पु0) दो कलमों को बाहम मिलाकर लिखने की सिन्अत जिसमें दोनों कलमों के दायरे मुष्तरक और कषिषें अलाहिदा रहती हैं।

चित्र

~तुग़्रा (पु0) दो कलमों या कलाम को इस तरह तहरीर करने की सिन्अ़त कि उनकी कषिषों के बाहमी इत्तिसाल से कोई शक्ल हिंदसा, फूल, इंसानी सूरत, परिंद या चरिंद की सूरत बन जाये।

चित्र

~ग़ुबार (पु0) गुबार की सूरत लिखी हुई तहरीर जो निहायत बारीक नुक़ते लगाकर वज़अ़ की जाती है। यानी बारीक नुक़तों के मजमूअ़े से जली क़लम तहरीर बनायी जाती है।

~कष (पु0) देखें चफ्ती।

~गुल्ज़ार (पु0) देखें ख़त बहार।

~माही (पु0) मछलियों की शक्लें बनाकर लिखा हुआ कलमा या कलाम।

चित्र

~मसनूआ (पु0) खुष नवीसों की ईजाद करदा चंद तहरीरी सन्अ़तें जो एक

क़िस्म की मुसव्वरी है जिसमें रस्मे ख़त को ज़ेरे मष्क़ बनाया गया है।

~मअ़कूस (पु0) किसी कलमे या कलाम को इस तरह उलट पुलट लिखने की सिन्अ़त जिसमें एक ही कलमा मुकर्रर लिखा हुआ एक दूसरे का अ़क्स बन जाता है।

~नाखुनी (पु0) सत्हे कागज़ पर उभरी हुई तहरीर जो नाखुन की कोर को काग़ज़ की सतह में गड़ो कर लिखी जाती है। इस तरह हुरूफ़ की शक्ल काग़ज़ की सतह पर उभर आती और साफ़ पढ़ी जाती है।

~नस्तालीक़ (पु0) मुरव्विजा उर्दू रस्मे ख़त जो ख़ते नस्ख़ और ख़ते तालीक़ से ईरानियों या फारस वालों ने ईजाद किया था। शहनषाहे अकबर के अ़हेद मे हिन्दुस्तान मे राइज हुआ। इस तर्ज़े तहरीर मे हुरूफ़ के दवाथर ज़्यादा नुमायाँ, खुषवज़अ़ और मुदव्वर बनाये जाते हैं। इससे क़ब्ल हिन्दुस्तान मे ख़ते तालीक़ मुरव्वज था। **देखें** ख़ते तालीक़ और ख़ते नस्ख़। अ़हेदे शाहजहाँनी मे ख़ते नस्तालीक़ की तरक़्क़ी हुई हिन्दुस्तान मे इस ख़त को तरक़्क़ी देने वाले मीर इमाद नामी एक ईरानी थे।

रक़म ( ) देखें खिल्अ़त।

खिल्अ़त (पु0) अ़लामते मद ( ) सिरे स़ाद ( ) जो खुषनवीस शागिर्द की मष्क़ के किसी हर्फ़ या लफ़ज़ के सही तहरीर होने पर बतौर सनद उस हर्फ़ पर बना दे। **लगाना, पहनाना** के साथ बोला जाता है।

खुष ख़त (पु0) साफ और खुषवज़अ़ तहरीर।

खुष नवीस (पु0) खुष वज़अ़ और सजीली लिखत लिखने वाला हुनर मंद।

दामने हर्फ़ (पु0) हर्फ़ की शक्ल का आखिरी हिस्सा, कषिषे हर्फ़।

दामनदार–रे (स्त्री) अरबी रस्मे ख़त की तर्ज़ पर लिखी हुई रे ( )

दाँग (पु0) किसी हर्फ़ की कषिष और दौर का छटा हिस्सा। खुषनवीसी इस्तिलाह मे दाँग कहलाता है।

दायरा (पु0) हर्फ़ का क़ौसनुमा हिस्सा। **देखें** दौर हर्फ़।

दायरा ए नजूली (पु0) नीचे को फेला हुआ दौर या दायरा ए हर्फ़ जो अमूमन कषीदा ख़त में बनाया जाता है।

दराज़ रे (स्त्री) बगैर दामन की फ़ारसी रस्मे ख़त की तर्ज़ पर लिखी हुई रे। **जैसे**. . . . . की रे।

दंदाना सीन (पु0) हर्फ़ सीन के सर के शीषे जो बषक्ल तष्दीद लिखे जाते हैं।

दौर मुज़्दवज (पु0) दो मुख़्तलिफ़ कलमों के दवाएर जो तहरीर मे एक कर दिये जायें यानी एक हर्फ़ का दौर दूसरे हर्फ़ के दौर मे ज़म कर दिया जाये और वह दौर दोनों हर्फ़ में मुष्तरक पाया जाये। **देखें** दौर हर्फ़।

चित्र–

दायरा ए माकूसी (पु0) देखें दौर ए मुज़्दवज।

दायरा ए आफ़ताबी/दौर ए आफ़ताबी (पु0) गोल बनावट का दायरा ए हर्फ़। **देखें** दौर ए हर्फ़।

चित्र

दौर ए तुरंजी/दायरा ए तुरंजी (पु0) हर्फ़ के दायरे या दौर की ऐसी कषिष जिसके दोनों सिरों को बढ़ाकर मिलाने से शल्जम की शक्ल मालूम हो। **देखें** दौर ए हर्फ़।

दौर ए हर्फ़/ दायरा ए हर्फ़ (पु0) हर्फ़ की क़तअ़ दायरे की शक्ल यानी हल्क़ानुमा बना हुआ हिस्सा।

दौर ए शल्जमी/दायरा ए शल्जमी (पु0) देखें दौर ए तुरंजी।

दौर ए माषूक़ी/दायरा ए माषूक़ी (पु0) देखें दवाएर ए मुज़्दवज।

ज़ेर ए मष्क़ (पु0) खुष नवीस की मष्क करते वक़्त वस्ली के नीचे रखने का मुक़व्वा या दबीज़ काग़ज़ जिसकी वजह से वस्ली की ज़मीन सख्त रहती है।

सरापा हर्फ़ (पु0) देखें सरापा हर्फ़। तसावीर–ए–हर्फ, अबजद के हर हर्फ़ की महमूई शक्ल या बज़अ़ क़तअ़।

सरे हर्फ़ (पु0) हर्फ़ का सिरा या इब्तिदाई शीष जहाँ से इसकी कषिष शुरू हो।

सिब्तर (स्त्री) हर्फ़ की कषिष और दौर की चौड़ाई।

सत्हे हर्फ (पु0) किसी हर्फ़ का लकीर यानी सीधे ख़त की शक्ल का बना हुआ हिस्सा।

सतर (स्त्री) सीधी लकीर जो ज़ेरे मष्क़ पर हुरूफ़ और अल्फाज़ की कषिष व दौर की निषस्त सही रखने को बना ली जाए। **प्रयोग** कापी की पहली सतर में दो गलतियाँ थीं। **खींचना** के साथ बोला जाता है।।

षिकम हर्फ़ (पु0) किसी हर्फ़ का वस्ती हिस्सा यानी सरे हर्फ़ और दामने हर्फ़ के दरमियान की कषिष।

शोषा (पु0) क़लम के क़त़ का निषान सरे हर्फ़ या दामने हर्फ़ की नोंक मुरक्क्ब हुरूफ़ का पेवंद या जोड़। **लगाना, देना, मिलाना** के साथ बोला जाता है।

तुग़्रा ( ) देखें ख़ते तुग़्रा।

अ़क़्द् (पु0) देखें पेवंदे हर्फ़।

ईदी (स्त्री) ईद की खुषी का खुषख़त लिखा क़तआ़, जो खुषनवीस ईद के तेहवार पर खुष खत लिख कर रऊसा को पेष करते हैं और दाद पाते थे। मकतब में ईद की नज़र के मौक़े पर अखुंद जी शागिर्दों को देते थे।

फस्ले हर्फ़ (पु0) उसूले खुषनवीसी के बमुवज्जिब दो हर्फ़ों की तहरीर के दरमियान छोड़ा हुआ फ़ासिला।

क़ामते हर्फ़ (पु0) देखें सरापा हर्फ़।

क़लम उठाना (क्रिया) कोई मज़मून तहरीर करने का इरादा करना या तहरीर करना। **फेरना** किसी तहरीर को काट देना। **~तोड़ना** कोई लाजवाब मज़मून लिखना। **~चलाना, मारना** बेतवज्जही से लिखना। जल्दी में लिखना।

हर्फ़ (पु0) हर्फ़ की बनावट बलिहाज़ जली या ख़फी।

कट खने (पु0) नुक़ते या शोषे जिन को तरतीबवार लगाकर हर्फ़ की शक्ल बनाई जाती है । खत्ताती सिखाने के लिए खुषनवीस मुबतदी को अव्वल इस क़िस्म के लिखे हुए हर्फ पर मष्क़ कराता है। **लगाना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

चित्र लगाना

कुर्सी (स्त्री) हर्फ़ के दौर और कषिष के दरमियान का उठाना। तहरीर में हर्फ़ की निषस्त का तनासुब।

कषिषे हर्फ़ (पु0) देखें सतह।

गुर्बा चष्में–ह (पु0) दो चष्मी हे (हाय हव्वज़)

गुंज/कुंज (पु0) देखें दौर–ए–मुज़्दवज।

मर्कज़ (पु0) हर्फ काफ (...) के सर पर खींचा हुआ तिर्छा ख़त जो हर्फ़ की क़ामत के मुनासिब होता है। षिकम क़ाफ में बनी हुई हम्ज़ा की शक्ल दर अस्ल मर्कज़ कहलाती है। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

मक़ादीर–ए–हर्फ़ (पु0) देखें सरापा हर्फ़।

मिनक़ारे जीम (पु0) हर्फ़ जीम ( ) के सर का शोषा। हर्फ़ की कषिष की जगह। **देना, छोड़ना** के साथ बोला जाता है।

हर्फ़ की कषिष की जगह। **देना, छोड़ना** के साथ बोला जाता है। **देखें** जमजमा।

मैदाने हर्फ़ (पु0) हर्फ़ की कषिष की जगह। **देना, छोड़ना** के साथ बोला जाता है।

नस्ख़े जय्यद (पु0) मामूल से ज़्यादा मोटी लिखत। आम तहरीरों से ज़्यादा कुषादा और बहुत जली क़लम हतरीर।

वस्ले हर्फ़ (पु0) देखें पेवंदे हर्फ़।

वस्ली (स्त्री) खुषनवीसी की मष्क़ के लिए दो तहा दबीब बना हुआ काग़ज़ जो लेई लगाकर खुष्क और मुहरा करके चिकना लिया जाता है। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

हाथ फेरना (क्रिया) ख़त सुधरने और लिखाई पर हाथ जमने के लिए हुरूफ़ के कट खनों या निषानों पर क़लम चलाना। **देखें** कटखना।

पाए वाज़ों (स्त्री) आधे दौर की शक्ल की या जैसे लै ही और ने की या।

एक चष्म हर्फ (पु0) देखें चष्मे हर्फ़।

6. पेषा–कापी नवीस

उसारा (पु0) कापी का काग़ज़ रंगने का मसाला जो निषास्ते और रेवंद के कार्क से तैयार किया जाता है और अहार कहलाता है। इस मसाले की वजह से कापी छापे के पत्थर पर जमती है। **फेरना** के साथ बोला जाता है।

अहार (पु0) फेरना, लगाना के साथ बोला जाता है। **देखें** उसारा।

पोट (स्त्री) सफ्हे की हाषिये का निच्ला आखिरी कोना ज़हाँ आइंदा सफ़हे की इबारत का पहला लफ़ज़ कलिब बतौर याददाष्त लिखते हैं। **देखें** लंगर।

पेषानी (स्त्री) किसी मुतबर्रक कलमें या उनवान मज़मून लिखने को किताब के पहले सफ़हे का ब़क़द्र जुरूरत सादा छोड़ा हुआ हिस्सा, बाज़ कातिब इस जगह कुछ नक़्षो निगार बना देते हैं। उनवान मज़मून या कोई और इबारत लिखने को काग़ज़ के सफ़्हे का बक़द्र जुरूरत सादा छोड़ा हुआ हिस्सा। **छोड़ना** के साथ बोला जाता है।

तर्क (स्त्री) देखें लगंर।

तक़्तीअ़ किताब (स्त्री) किताब के अवराक़ की मुक़र्रर कर्दा लम्बान चौड़ान। किताब के वरक़ का तूल व अर्ज़। **प्रयोग** इस किताब की तक़्तीअ़ बहुत छोटी है।

जदवल कश

टीप (स्त्री) पेषानी।

जदूलकश (पु0) काग़ज़ पर लकीरें खींचने का कातिब की चफ़्ती।

हाषिया (पु0) किताब या कापी के सफ़्हे के चारों तरफ छोड़ी हुई जगह। छोड़ना के साथ बोला जाता है।

ख़तकष (पु0) देखें जदूलकष।

रकाब (स्त्री) देखें लंगर।

सरे वरक़ (पु0) किताब का शुरू का वरक़ जिस पर किताब, मुसन्निफ़ और मतबअ़ वगैरा का नाम लिखा होता है।

उ़सारा (पु0) देखें उसारा।

क़तअ़ लफ़ज़ (पु0) किसी कलमें का टुकड़ा, किसी वाहिद कलमें को तोड़कर दो सतरों में लिखने की सूरत जो किताबत का ऐब कहलाता है।

कापी (स्त्री) (अंग्रेजी लफ़्ज़) बमानी नक़ल या नक़ल करना कस़रते इस्तेमाल से उर्द बन गया है और आमतौर से छपाई की किताबत के लिए बोला जाता है। **प्रयोग** छः जुज़ की कापी लिखी जा चुकी है। कापी लिखने में अकसर गलतियाँ रह जाती हैं। **लिखना** के साथ बोला जाता है।

कापीनवीस (पु0) कापी लिखने वाला।

कातिब (पु0) देखें कापीनवीस।

किताबत (स्त्री) कापी लिखने का काम, कापीनवीसी।

लंगर (पु0) कापी के हाषिये के आखिरी कोने पर आइंदा सफ्हेका पहला कलमा जो बतौर याददाष्त लिखा जाता है। कापी नवीसों की इस्तिलाह में लगंर पोट, तर्क या रकाब के नाम से मौसूम किया जाता है।

लौह (पु0) देखें पेषानी।

मुबय्यज़ा (पु0) साफ लिखी हुई तहरीर जिसमें कोई तरमीम या इज़ाफा न हो।

मख़तूतात् (पु0) क़दीम कलमी तहरीरात और किताबें वगैरा।

मिस्त़र (पु0) सत्रें खींचा हुआ काग़ज जिसको कापी नवीस किताब के लिए ज़ेरे मष्क़ के तौर पर इस्तेमाल करता है। पुराने कातिब एक मुक़व्वे पर डोरे की सतरें बना लेते हैं और उसके जरिए कागज़ पर लकीरों के निषान उभार लेते थे। उनकी इस्तिलाह में वह मिस्तर कहलाता था।

मुसव्विदा (पु0) कच्ची तहरीर, सरसरी तौर पर लिखा हुआ मज़मून जो इसलाह और तरमीम से जगह–जगह कटा और बना हुआ हो।

6. पेषा छपाई (त़बाअत़)

उभरी छपाई (स्त्री) वह छापे जिसमें हुरूफ का काग़ज़ के ऊपर उभरे रहते हैं, दावती कार्ड, तुग़रे, मोनोग्राम और इसी क़िस्म की दूसरी नुमाइषी चीजें इसी वज़अ़ की छापी जाती हैं। यह छपाई बहुत खुषनुमा होती है। यह एक किस्म की जदीद तर्ज़े तबाअ़त है जो गुटके बनाकर की जाती है।

इचंग (स्त्री) (अंग्रेजी) देखें पत्थर सेंकना।

अधरना (क्रिया) देखें कापी।

अस्तर (पु0) चंद काग़ज़ों की सतर जो छापे के पत्थर पर कापी जमा कर उसके ऊपर बतौर हिफ़ाज़त लगाई जाती है। **रखना, देना, लगाना, जमाना** के साथ बोला जाता है।

पुष्ता ( ) देखें अस्तर।

अस्तरिया (पु0) कापी जमाने और दाब चलाने वालाा कारीगर।

इस्लाह (स्त्री) देखें मिस्ल।

बेलन (पु0) देखें रूल।

पत्थर उड़ाना (क्रिया) छपाई के पत्थर पर से कापी की जमी हुई तहरीर को घिस कर मिटाना, पत्थर साफ़ करना।

पत्थर भरना (क्रिया) छापे के पत्थर की सत्ह को घिस कर हम्वार और मुजल्ला करना ताकि संग साज़ी से जो नुक़्स सत्ह मे पैदा हो वह रफ़अ़ हो जाये।

पत्थर सेंकना (क्रिया) पत्थर को गरमाना ताकि कापी के हुरूफ उस पर अच्छी तरह जम जायें और छपाई मे अड़े नहीं।

पुचारा (क्रिया) छापे के पत्थर को तर रखनें का कपड़ा। **~फेरना, देना** छपाई के दौरान में पत्थर को बार–बार पानी से तर करना।

पुरूफ़ (पु0) देखें दाब।

प्रेस (पु0) देखें दाब।

प्रेसमैन (पु0) छापे की दाब या कल का काम जानने और करने वाला कारीगर।

पेज (पु0) देखें दाब।

तरक (पु0) छपाई में दाब के अन्दर छीज के लिये, मुकर्रिरा तादाद से किसी कद्र ज़्यादा लगाया हुये कागज। **देना** के साथ बोला जाता है।

छापा (पु0) नकष जो किसी चीज़ पर बनाया, उतारा हुआ और दूसरी चीज़ पर उतारा जा सके।

ठप्पा ( ) देखें छापा।

छापा ख़ाना (पु0) वह जगह जहाँ लिखाई की छपाई का पूरा निज़ाम हो। **छापे का**

पत्थर छपाई के लिये बनाया हुआ एक क़िस्म का पत्थर।

............**उड़ाना (क्रिया)** छापे के पत्थर पर से ग़लत या ज़ाइद लफ़्ज मिटाना।

............**भरना (क्रिया)** पत्थर के ऊपर कापी के उतरे हुयें कटे मिटे हुरूफ़ मे स्याही भर कर दुरुस्त करना, बनाना।

दाब (क्रिया) छापने की कल क़दीम बज़अ़ की हाथ से और जदीद तर्ज़ की इंजन की कुव्वत से चलाई जाती है। क़दीम तर्ज़ की फल अब तक बाकी हैऔर क़दीम तर्ज़की मामूली छपाई की ज़ुरूरत के लिये आती है। दाब का अंदर का सिरा माचा और छपाई माचें की तरफ से शुरू हो कर गोद पर ख़त्म होती है।

चित्र देना है।

दस्ती दाब (स्त्री) दस्ती प्रेस या छाया।

देखें दाब।

दो पुष्ता दाब (स्त्री) कागज़ के दोनो रुख़ो की छपाई।

दो रुखा पत्थर (पु0) छापे का वह पत्थर जिस पर कागज की दो तरफा छपाई के लिये कापी जमाई गयी हो।

रक़म (पु0) अ़लामते तस्हीह़ जो मुस्हिह मिस्ल (प्रूफ़) पर बतौर निषान लगाता है। **देखें** पेषा खुषनवीसी। पृ0

रोषनाई उठाना (क्रिया) छापे के पत्थर पर जमी हुई कापी के हुरूफ का छापे की स्याही पकड़ना।

रोषनाई कार (पु0) छपाई के वक़्त छापे के पत्थर पर स्याही का बेलन फेरने वाला शख़्स।

रूल (पु0) छापे की स्याही का बेलन।

फेरना के साथ बोला जाता है।

सरपोष (पु0) दाब का ढ़क्कन जो छपाई के वक़्त छपने वाले कागज़ के ऊपर हिफाज़त के लिये रख दिया जाता है। **देखें दाब।**

संग साज़ (पु0) पत्थर पर जमी हुई कापी की इस्लाह और दुरुस्ती करने वाला कातिब।

संदूक़ पेच (पु0) दाब का वह हिस्सा जिस पर छपाई का पत्थर जमाया जाता है देखें दाब।

फ़र्द (पु0) छपाई का वह कागज़ जिसका तूल, अर्ज़ से दो चंद हो।

फ़र्मा (पु0) अंग्रेजी लफ़्ज़ फ़ार्म का उर्दू तलफ़्फुज। इस्तिलाहमे पुरुफ़ या सीसे के हुरूफ़ की तरतीब दी हुई प्लेट (तख़्ती) को कहते हैं। छपा हुआ पूरा ताब। देखें प्रूफ़।

फ्रेम (पु0) देखें संदूक़ पेच।

कापी (स्त्री) छापने की गरज़ से अहार कागज़ पर नक़ल की हुई इबारत।

~अधरना कापी के जमने में नुक़्स होना। दाब में कापी का मसक जाना जिसकी वजह से पत्थर पर प्रूफ साफ नहीं जमते और प्रूफ में कटे–कटे और फैले हुए उतरते हैं, कहीं दुहरे बन जाते हैं। **~जमाना, चढ़ाना** छापे के पत्थर पर कापी की इबारत को उतारना। **~जमना** कापी के हुरूफ़ का छापे के पत्थर पर उतर आना या बैठ जाना।

कटघर (पु0) दाब की पाड़ जिस पर छापे का पत्थर रखा और हर्कत में लाया जाता है। देखें दाब।

कल (स्त्री) दस्ती प्रेस का पहिया जिसको घुमाने से छापे का पत्थर हरकत करता है यानी आगे–पीछें सरकता है। **देखें** दाब।

कम्पोज़ीटर (पु0) टाइप के हुरूफ़ जमाकर कापी (प्लेट) तैयार करनेवाला शख़्स।

खट्टू (पु0) छापे का पत्थर धोने का एक क़िस्म का तुर्ष मसाला। जैसलमेर की कान का एक क़िस्म का ज़र्दी माइल पत्थर जो छापने के काम आता है।

गुट्का (पु0) लकड़ी या सीसे वगैरा का मुक़अ़ब की शक्ल का टुकड़ा जिस पर इबारत या तस्वी कंदा करके छापा बनाते हैं।

गोद (स्त्री) देखें दाब।

माथा (पु0) देखें दाब।

मिस्ल (स्त्री) छपाई का नमूना, कापी जमे हुए पत्थर की पहली दाब की छपाई। **~उठाना** पहली दाब का छपा हुआ काग़ज़ निकालना।

मुसह्हिह (पु0) मिस्ल (प्रूफ) की तसहीह़ करने वाला छपाई के नमूने के नुक़्स और ख़राबियों की निषानदही करने वाला। मिस्ल ख्वान (प्रूफ रीडर)

मतबअ़ (पु0) छापा ख़ाना, वह मुक़ाम जहाँ तबाअत का काम अंजाम पाये।

मुनक़िलब कापी (स्त्री) छापे के पत्थर पर उल्टी उतरी हुई तहरीर पलट कर ज़मी हुई कापी।

एक पुष्ता दाब (पु0) एक रूखी छपाई यानी वह छपाई जो काग़ज़ के सिर्फ एक तरफ हो।

8. पेषा ए जिल्दसाज़ी

अब्री (स्त्री) जिल्द के पुट्ठे के ऊपर चिपकाने का खुषनुमा बना हुआ काग़ज़ या कपड़ा। **लगाना चढाना** के साथ बोला जाता है।

अब्री की जिल्द (स्त्री) वह जिल्द जिसके पुट्ठे पर काग़ज़, कपड़ा, चमड़ा मंढ़ा हो।

अस्तर (पु0) जिल्द के पुट्ठो के अंदर चिपकाया हुआ काग़ज़ या कपड़े की पट्टी जो पुट्ठे को पुष्ते से जोड़ेर रखती है। **देना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

बग़्लियाँ (स्त्री) जिल्द की ऊपर नीचे की मुकव्वे की सतह जिससे किताब के वरक़ों की तराष के ऊँचे नीचे निषान। **डालना, पड़ना** के साथ बोला जाता है।

बेनी (स्त्री) जिल्द के मुंह का ढक्कन या बंद जो एक पुट्ठे के साथ बना होता है और दूसरे पुट्ठे पर चढ़ा दिया जाता है। जिससे पुट्ठे बंद हो जाते हैं। **लगाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** जिल्द।

पाखे (पु0) किताब के वरक़ों की हिफाज़त के मुक़व्वे। **देखें** जिल्द।

पचीसिया (पु0) छपे हुए काग़ज़ों की किताबी मुड़ाई करने वाला मज़दूर।

पुष्ता (पु0) जिल्द की बग़्लियों का बंद या किताब के वर्क़ों की रोक जो कुल वरकों को एक जगह सी कर बनाई जाती है। **देखें** जिल्द।

तरक साज़ (पु0) देखें पचीसिया।

तरक साज़ी करना (क्रिया) जुज़बंदी करना। देखें फर्मा भाँजना।

टीस (स्त्री) किताब की जिल्द की मामूली सिलाई जो वरकों की तह में दो–तीन आर–पार टाँके लगाकर कर दी जाती है। इस तरह की सिलाई में किताब के वरक पूरे फैले हुए नहीं खुलते। करना के साथ बोला जाता है। **देखें** जिल्द।

जुज़बंदी करना (स्त्री) दो वरक़ या जुज़ की सिलाई जो वरक़ों की तह के अन्दर से की जाती है, जिसके वरक़ पूरे खुलते हैं। करना के साथ बोला जाता है।

जिल्द (स्त्री) किताब के वरक़ों के हिफाज़ती पुष्ते या पाखे जो दबीज़ कागज़ या चमड़े के बनाकर दोनों बग़लियों पर लगा लिए जाएँ (**बाँधना, बनाना** के साथ बोला जाता है)

चित्र

जिल्दबंदी (स्त्री) जिल्द बनाने का काम।

जिल्दसाज़ (पु0) जिल्द बनाने वाला कारीगर।

चिर्मी जिल्द (स्त्री) पुष्ते और पाखों पर चमड़ा मँढ़ी हुई जिल्द।

चूल (स्त्री) जिल्द के पुष्ते और पाखों के जोड़ का मुक़ाम। पुष्ते और पाखों की दरमियानी कोर जिसकी वजह पाखें पूरे खुलते हैं। **बनाना, निकालना** के साथ बोला जाता है। **देखें** जिल्द।

ज़ंजीरा (पु0) किताब के पाखों के ऊपर बना हुआ गुनक़्क़ष हाषिया।

सुताई (स्त्री) किताब की जुज़बंदी की सिलाई का सूआ।

सेफ़ा (पु0) जिल्द साज़ का छुरा जिससे किताब के रुख़ तराषे और हमवार किए जाते हैं।

षिकंजा (पु0) किताब के पुष्ते को कसकर दबाने की कल। कसना के साथ बोला जाता है।

शीराज़ा (पु0) किताब के वरक़ों की सिलाई के बंद या वह बंदिष जिस की वजह से वरकों की सिलाई मज़बूत और मिली रहती है।

शीराज़ाबंदी (स्त्री) किताब के वरक़ों की जुज़बंद सिलाई, जुज़बंदी। **बाँधना, खुलना, टूटना, बिखरना** के साथ बोला जाता है। **देखें** जिल्द।

फ़र्मा (पु0) किताब का छपा हुआ पूरा ताव जिसमें आठ वरक़ होते हैं। **~भाँजना तरक साज़ी करना, मिस्ल बनाना**, छपे हुए ताव की किताबी मुड़ा करना, जुज़ बनाना।

कालीकों (पु0) जिल्द की अब्री का मस्नूई बना हुआ चमड़ा जो कागज़ या कपड़े का बनाया जाता है।

कटपेच (पु0) षिकंजे की चूड़ीदार चोबें। देखें षिकंजा।

किरकतू (पु0) किताब के वरक़ों के सिरे घिसने का एक क़िस्म का रेगमाल।

कग्री (स्त्री) देखें चूल।

गीरा (पु0) देखें षिकंजा।

घाट (पु0) किताब के वरक़ों की सिलाई का छोटा–सा साँचा, जिसमें टाँके का डोरा बैठ जाए। **बनाना, काटना** के साथ बोला जाता है। **देखें** जिल्द।

लपेट (स्त्री) किताब की दो वर्क़ी या जुज़ की सिलाई जो वरक़ों की तह के अंदर से की जाती है, जिसके रक़ पूरे खुलते हैं। **करना** के साथ बोला जाता है।

लग्गा (पु0) किताब के दस जुज़ की एक गड्डी। **~लगाना** दस जुज़ को मिला कर सिलाई करना।

लौलब (पु0) देखें कटपेच।

मिस्ल बनाना (क्रिया) देखें फ़र्मा, भाँजना।

मुष्टा (पु0) जिल्दसाज़ों की मोगरी थापी।

नाली (स्त्री) किताब के मुँह पर वरक़ों का तद्रीजी नषेबोफराज़ जो पुषते को उभारने और गोलाई देने के लिए बनाया जाता है। बनाना, डालना के साथ बोला जाता है। **देखें** जिल्द।